Education Psychology

1. बाल विकास
2. अधिगम
3. अभिप्रेरणा
4. चिंतन
5. बुद्धि
6. व्यक्तित्व
7. समायोजन
8. व्यक्तिगत विभिन्नताएं
9. मानसिक स्वास्थ्य
10. RTE-2009
11. NCF-2005
12. मापन- मूल्यांकन
13. CCE
14. क्रियात्मक अनुसंधान
15. उपलब्धि परीक्षण
16. आकलन
17. निदानात्मक परीक्षण व उपचारात्मक शिक्षण
18. शिक्षा शास्त्र
19. अन्य-रूचि,अभिवृति,आदत, अभिक्षमता,अवधान,संवेदना, प्रत्यय,प्रत्यक्षीकरण😍🙏

Connecting With Guru Narendra

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Expt. No. ..... Date .....

अधिगम

Page No. 1

अधिगम (Learning) :- व्यवहार में वांछित / प्रगतिशील / अपेक्षित परिवर्तन ही अधिगम हैं।

Imp **steps of Learning (अधिगम के पद) :-**

1. आवश्यकता / अभिप्रेरणा / प्रेरक (Need)
2. लक्ष्य / उद्देश्य
3. बाधा / तत्परता
4. अधिगम स्थिति
5. अनुक्रिया
6. समाधोजन
7. व्यवहार में परिवर्तन - परिणाम
8. स्थापीकरण

Q→ अधिगम प्रारम्भ किससे होता हैं-
(a) आवश्यकता (b.) प्रेरक (c) अभिप्रेरणा (d) इनमे से कोई नहीं

अधिगम की प्रकृति / विशेषताएँ :- Nature / Characteristics of Learning-

1. अधिगम निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हैं।
2. अधिगम व्यवहार में वाँछित परिवर्तन हैं।
3. अधिगम सार्वभौमिक हैं। (कक्षा में भी व कक्षा के बाहर भी)
4. अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों हैं।
   (अपने आप से सीखना)
5. अधिगम सकारात्मक व नकारात्मक दोनों हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Response Page No. 2

6. सीखना उद्दीपक (Stimulus) व अनुक्रिया में संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया हैं।

$$S + R \rightarrow L$$

7. अधिगम एक समायोजन / अनुकूलन की प्रक्रिया हैं।

8. अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया हैं।

9. अधिगम ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, विवेकपूर्ण प्रक्रिया हैं

10. सीखना एक समस्या-समाधान की प्रक्रिया हैं।
अधिगम

11. सीखना आवश्यकताओं की पुर्ति करता हैं।

12. अधिगम विवेकपूर्ण / अन्तः दृष्टि की प्रक्रिया हैं।

13. अधिगम अनुभवों का संगठन हैं।

14. अधिगम उद्देश्यपूर्ण बिन्दु हैं।

15. अधिगम एक प्रक्रिया हैं ना कि परिणाम [इसे हम माप नही सकते]

16. अधिगम अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण की प्रक्रिया हैं।

17. अधिगम स्थानान्तरण की प्रक्रिया हैं, (सीखे गये ज्ञान का अन्य स्थान पर प्रयोग)

18. नियोजित हैं आकस्मिक नहीं

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

अधिगम की परिभाषाएँ :-

1. वुडवर्थ के अनुसार- "सीखना विकास की प्रक्रिया (प्रक्रम) है।"

2. गेट्स व अन्य के अनुसार- "परीक्षण व अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन" अधिगम है।

3. क्रो & क्रो के अनुसार- "आदत, ज्ञान व अभिवृत्तियों का अर्जन करना ही अधिगम है।"

4. गिलफोर्ड के अनुसार- "व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।"

5. स्किनर के अनुसार- "व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया अधिगम है। अथवा व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया ही अधिगम है।

6. पील के अनुसार - "व्यक्ति में परिवर्तन ही अधिगम है, जो वातावरण में परिवर्तन के अनुसरण में होता है।"

7. मार्गन व किंग के अनुसार- "अभ्यास या अनुभूति के परिणाम स्वरूप व्यवहार में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन अधिगम है।"

Scanned with CamScanner

Rules of Learning (अधिगम के नियम) →

1913 में अपनी पुस्तक 'शिक्षा मनोविज्ञान' में अधिगम की 3 मुख्य व 5 गौण नियमों का प्रतिपादन किया।
अधिगम के नियम दिए – थार्नडाइक

मुख्य नियम :→ 3

(i) तत्परता का नियम (Law of Readiness) :→

यदि हम किसी कार्य को करने के लिए शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार है तो उसे करना सीख जाते है अन्यथा नहीं।

इस नियम का प्रयोग * रुचि उत्पन्न करने में
* ध्यान केन्द्रित करने में
* जिज्ञासा जाग्रत करने में किया

नोट– वुडवर्थ ने इस नियम को 'मानसिक तैयारी' का नियम कहा है।
अध्यापक कक्षा में आने पर सबसे पहले इस नियम का प्रयोग करता है।

(ii) अभ्यास का नियम / श्रम का नियम (Law of Exercise) :→

इस नियम का अर्थ किसी भी क्रिया कार्य को बार–बार करने से है।
"करत–करत अभ्यास से जड़मत होय सुजान"–यह कहावत इसी नियम पर आधारित है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

इस नियम के दो भाग हैं-
(i) उपयोग (use) (ii) अनुपयोग (Disuse)

उपयोग:→ प्रतिदिन प्रयोग करने से वह ज्ञान स्थायी हो जाता है

अनुपयोग→ किसी भी क्रिया कार्य को ना दोहराने पर कुछ समय बाद हम उसे भूल जाते हैं।

इस नियम का प्रयोग आदत निर्माण में, लेखन सुधार में, उच्चारण सुधार में, कला, संगीत, नृत्य, अभिनय व पेंटिंग आदि के सीखने में उपयोगी हैं।

(iii) **प्रभाव का नियम (Law of effect):→**

इसे संतोष/परिणाम का नियम भी कहते हैं।
जब किसी क्रिया या कार्य का परिणाम अच्छा आता है तो हम उसे करना सीख जाते हैं, अन्यथा नहीं
जैसे- प्रसन्नता, प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड

इसे प्रसन्नता व दुःख का नियम भी कहा जाता है तथा इस सिद्धान्त को स्कीनर के अधिगम सिद्धान्त का आधार माना जाता है।

गौण नियम:- ⁂→

(i) **बहुप्रतिक्रिया का नियम:→**

बहुत सी क्रियाएं करते हुए सीख जाना। जैसे- गाड़ी चलाना, कम्प्यूटर चलाना, मोबाइल चलाना

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(ii) आंशिक क्रिया का नियम → विषय वस्तु को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करते हुए अंश से पूर्ण की ओर शिक्षा

(iii) मनोवृति का नियम → सीखना सकारात्मकता पर निर्भर करता है।

(iv) आत्मीकरण का नियम → पूर्व ज्ञान के साथ संबंध स्थापित करते हुए नवीन ज्ञान को सीखा जाना

(v) साहचर्य परिवर्तन का नियम → किसी एक स्थिति में किये गये कार्य या व्यवहार को उसी के समान दुसरी स्थिति में दोहराना।

अधिगम के उपनियम → Sub rules of Learning-

(i) नवीनता का नियम
(ii) प्राथमिकता का नियम
(iii) संबंधता का नियम
(iv) उत्तेजना का नियम। उत्तेजक की तीव्रता का नियम

अधिगम संबंधी दृष्टिकोण →

(i) व्यवहारिक दृष्टिकोण - अधिगम अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है।

(ii) गेस्टाल्टवादी दृष्टिकोण → अधिगम किसी परिस्थिति के प्रति सम्पूर्ण प्रतिक्रिया है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(iii) धार्मिक दृष्टिकोण → मैकडुगल
इसके अनुसार अधिगम लक्ष्य केन्द्रित रूप हैं।

(iv) क्षेत्रीय दृष्टिकोण → कुर्त लेविन
अधिगम किसी परिस्थिति का प्रत्यक्ष ज्ञान होता हैं।

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक :-

(i) व्यक्तिगत कारक :-

(a) अभिप्रेरणा –
स्किनर "अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वश्रेष्ठ राजमार्ग हैं।"
→ अधिगम की सुनहरी सड़क → अभिप्रेरणा
→ अधिगम को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक → अभिप्रेरणा
स्टीवेन्शन के अनुसार – "शिक्षक के पास जितने भी साधन हैं उनमें सबसे महत्वपूर्ण अभिप्रेरणा हैं।"

(b) इच्छा शक्ति (Will Power)
(c) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
(d) संवेदना व प्रत्यक्षीकरण
(e) रुचि, स्मृति व ध्यान का प्रभाव
(f) आयु व परिपक्वता

NOTE:- परिपक्वता का प्रतिपादन गैसेल ने करते हुए कहा कि जीवन चक्र में जीवाणुओं का समूचा प्रभाव परिपक्वता कहलाता हैं।
→ परिपक्वता व अधिगम आपस में संबंधित हैं फिर भी इन दोनों में अन्तर पाया जाता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

परिपक्वता	अधिगम
→ वंशानुक्रम आधारित हैं।	वातावरण आधारित हैं।
→ यह स्वतः व स्वाभाविक रूप से चलने वाली प्रक्रिया हैं। (जन्मजात)	यह नियोजित (चरण/plan) प्रक्रिया है आकस्मिक नही हैं। (अर्जित)
→ निर्धारित समय तक चलती है	जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं
→ यह शारीरिक प्रक्रिया हैं	मनोवैज्ञानिक व मानसिक प्रक्रिया हैं।
→ इस पर अभ्यास व अभिप्रेरणा का प्रभाव नही पड़ता हैं। आवश्यक नही	अभ्यास व अभिप्रेरणा का प्रभाव पड़ता हैं, या आवश्यक हैं।

(iii) **शिक्षक संबंधी कारक :→**

विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण
विषय वस्तु में निपुणता
शिक्षण की विधि
शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य
शिक्षक का व्यक्तित्व

(iii) **कार्य संबंधी कारक (Task factor) :→**

(i) कार्य की उपयोगिता
(ii) कार्य की रोचकता
(iii) कार्य की लम्बाई
(iv) कार्य की कठिनाई
(v) कार्य की समानता

(iv) **वातावरण संबंधी कारक :→**

a भौतिक वातावरण → तापमान, जलवायु
b सामाजिक वातावरण → परिवार, विद्यालय, समुह, सिनेमा, T.V, मिडिया

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

सांस्कृतिक वातावरण – रीति रिवाज, प्रथाएँ, उत्सव, अंधविश्वास परम्पराएं, भाग्य वादी सोच

(v) संगठन संबंधी कारक :-
टाईम-टेबल
शिक्षक छात्र के संबंध
निर्देशन
प्रशंसा, पुरस्कार व दण्ड
अनुशासन

अधिगम की विधियाँ :→

(i) करके सीखना :- सर्वाधिक बल दिया - किलपैट्रिक
डॉ० मैस के अनुसार 'हम करके सीखते हैं।'

(ii) निरीक्षण करके सीखना :- वाटसन ने बल दिया।

(iii) परीक्षण करके सीखना :- विलियम वुण्ट ने बल दिया

(iv) सामुहिक विधि द्वारा सीखना :- सेमीनार, कार्यशाला, पैनल परिचर्चा

(v) मिश्रित विधि द्वारा सीखना :- पूर्ण व आंशिक विधि का मिला-जुला रूप

अधिगम के सिद्धान्त →

1. व्यवहारवादी दृष्टिकोण :→

व्यवहारवाद का पिता – वाटसन
मौलिक व्यवहारवाद – स्कीनर
वुडवर्थ, सी.एल. हल, थार्नडाइक, पावलॉव, गुथरी, मैक्डुगल पोलेन्सकी, पिल्सबल्ली, बोरिंग मुख्य व्यवहारवादी हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

यह विचारधारा बालक के व्यवहार, अनुभव व प्रशिक्षण को अधिगम में सबसे महत्वपूर्ण मानती है।

यह विचारधारा उद्दीपक-अनुक्रिया (S-R) के मध्य संबंध पर बल देती हैं।

इस विचारधारा के अनुसार शिक्षक अधिगम परिस्थितियों का निर्माता होता हैं।

I. पुर्नबलन सहित सिद्धान्त

a. एडवर्ड थार्नडाइक :- अमेरिका निवासी

→ पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक
→ प्रथम आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिक

BOOK:-

1. Animal Intelligence (1898)
2. Education psychology
3. the learning of psychology
4. Human Nature and social

सिद्धान्त के अन्य नाम:-

→ उद्दीपक-अनुक्रिया का सिद्धान्त
→ प्रयास। त्रुटि का सिद्धान्त
→ हर्ष व दुःख का सिद्धान्त या प्रयत्न व भूल
→ संयोजनवाद
→ आवृति
→ परिश्रम व धैर्य
→ सबंधंवाद

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

बन्ध सिद्धान्त (Bond theory)

भूखी बिल्ली पर प्रयोग किया
उद्दीपक - सुगन्धित मछली का टुकड़ा

steps of theories :-
1. विभिन्न अनुक्रियाएं करना
2. सही अनुक्रिया का चयन करना।
3. उद्दीपक अनुक्रिया में संबंध स्थापित करना।

हम अपने अनुभव व गलतियों द्वारा सीखते हैं। → थार्नडाइक
थार्नडाइक का नारा - "करो और सीखो"

NOTE → मैक्डुगल ने चुहे पर, लॉभड मार्गन ने कुत्ते पर प्रयोग किया था।

शिक्षा में उपयोगिता →

→ यह सिद्धान्त मन्द बुद्धि व बड़े आयु के बच्चो के लिए उपयोगी हैं।
→ यह सिद्धान्त गणित, विज्ञान व समाजशास्त्र, व्याकरण में उपयोगी हैं।
→ यह सिद्धान्त गामक योग्यता हैं-
[कूदना, उछलना, लिखना, बोलना, पढना, तैरना, टाई बांधना, ड्राइविंग करना, चलना इसी सिद्धान्त के तहत सीखी जाती हैं।]
→ अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता का विकास
→ धैर्य व परिश्रम के गुणों का विकास करता हैं।
→ क्रमिक रूप से सीखने की प्रेरणा पर बल देता हैं।
→ यह सिद्धान्त अर्जित ज्ञान को उपयोगी बनाता हैं
→ करके सीखने पर बल देता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

आलोचना :-

→ यह सिद्धान्त सीखने में यान्त्रिकता पर बल देता है।
→ यह प्रतिभाशाली बच्चों के लिए उपयोगी नहीं है।
→ अन्तः दृष्टि (सूझ, विवेक) का प्रयोग नहीं होता है।
→ व्यर्थ अनुक्रियाओं पर बल देता है।
→ यह सिद्धान्त पश्च दृष्टि पर आधारित है।

(b) C. L. हल :-

II. Imp. प्रबलन सिद्धान्त (Reinforcement theory)

अन्य नाम → आवश्यकता अवकलन
→ सबलीकरण
→ प्रेरणा-प्रबलन ह्रास सिद्धान्त
→ चालक न्यूनता का सिद्धान्त
→ विधिक सिद्धान्त :- अधिगम का ऐसा सिद्धान्त जो स्पष्ट व्याख्या करता है
→ क्रमबद्ध व्यवहार का सिद्धान्त
→ गणितीय निगमन का सिद्धान्त :- गणित के 14 नियमों व 3 अभिगृहीतों पर आधारित है।
→ यथार्थ / परिष्कृत / परिष्कार का सिद्धान्त

प्रतिपादक - C. L. हल (अमेरिका)
1942 में दिया था 1952 में संशोधन

Book - Principal of behaviour
व्यवहार का सिद्धान्त

→ यह सिद्धान्त थार्नडाइक व पावलव के अधिगम सिद्धान्त पर आधारित है।
Baseline → इस सिद्धान्त के अनुसार सीखना आवश्यकता की पूर्ति के द्वारा होता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

प्रयोग किया - चुहे पर

→ व्यवहार (B), चालक (D) तथा आदत (H) की अन्तः क्रिया का परिणाम होता है -

$$B = D \times H$$

→ यह सिद्धान्त गणित के न्यूनियम व उपनियमों पर आधारित है। तथा परिकाल्पनिक निगमन तार्किक योग्यता पर बल
(सम्भावनाओं से वास्तविकता की ओर जाना)

→ यह सिद्धान्त S - O - R (उद्दीपक प्राणी अनुक्रिया) सूत्र पर आधारित है, जो वुडवर्थ द्वारा दिया गया था।

शिक्षा में उपयोगिता -

→ यह सिद्धान्त सीखने में आवश्यकता तथा अभिप्रेरणा पर बल देता है।

→ यह सिद्धान्त सीखने को वास्तविक जीवन से जोड़ने पर बल देता है।

→ यह सिद्धान्त सीखने में कृत्रिम पुरस्कारों का समर्थन करता है।

→ स्कीनर ने इस सिद्धान्त को अधिगम का सर्वश्रेष्ठ व चालक न्यूनता का सिद्धान्त कहा है।
आवश्यकता की पूर्ति के बाद की स्थिति

III. क्रिया प्रसुत अनुबंधन :-

अन्य नाम → कार्यात्मक प्रतिबद्धता का सिद्धान्त
नैमित्तिक अनुबंधन का सिद्धान्त
सक्रिय अनुबंधन का सिद्धान्त
साधनात्मक अनुबंधन का सिद्धान्त
R - S अनुबंधन का सिद्धान्त
सम्भावित पुनर्बलन का सिद्धान्त
रिक्त प्राणी उपागम

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

प्रतिपादक → बी. एफ. स्कीनर (1938) अमेरिका
व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक

Books → 1. Science & Human Behaviour
2. Verbal Behaviour
3. Behaviour of Organism

→ वह व्यवहार जो बिना उद्दीपक की जानकारी के किया जाता है- क्रिया प्रसुत व्यवहार - बिना बैकेसी के तैयारी करना
→ स्कीनर ने उद्दीपक नही तो अनुक्रिया नही का विरोध किया है,
→ यह सिद्धान्त प्रभाव के नियम पर आधारित है।
→ इस सिद्धान्त में R–R (अनुक्रिया- पुनर्बलन) पर बल दिया जाता है
Response - Result
→ इस सिद्धान्त में अनुक्रिया व पुनर्बलन के मध्य सकारात्मक संबंध पर बल दिया जाता है।
→ इस सिद्धान्त में अनुक्रिया व उसके बाद मिलने वाला पुनर्बलन/ परिणाम महत्वपूर्ण है।
→ इस सिद्धान्त में कबुतर व सफेद चुहे पर प्रयोग किया गया
→ चुहे पर प्रयोग के लिए स्कीनर बॉक्स काम में लिया
→ इसमें पहले अनुक्रिया होती है बाद में उद्दीपक (दाने) आता है फिर पुनर्बलन मिलता है, यदि +ve पुनर्बलन मिलता है तो बार-बार आवृति होती है।

सुत्र :-
अनुक्रिया ⟶ पुनर्बलन ⟶ पुनरावृति ⟶ साधनात्मक अनुबंधन

Baseline → किसी अनुक्रिया को करने के बाद यदि बल प्रदान करने वाला उद्दीपक मिलता है, तो उस क्रिया को करने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

विशेष अवधारणाएँ →

1. वंचन – सही अनुक्रिया होने तक पूनर्बलन को रोके रखना ।
2. संचयी रिकार्डिंग – अनुक्रिया की दर को मापने के लिए इसका प्रयोग किया जाता हैं।
3. मैगजिन प्रशिक्षण – कबूतर या चूहे को जार के पास ले जाने का प्रशिक्षण
4. शृखंला – एक अनुक्रिया के संकेत दुसरी अनुक्रिया के संकेत से जुड़े हुये होना । अनुक्रिया को सरल से कठिन की ओर सीखा जाता हैं।
5. अनुक्रिया सामान्यीकरण – एक ही अनुक्रिया की बार-बार पुनरावृति होना ।
6. शेंपिंग / आकृतिकरण / ढलना / रूप निर्धारण / क्रमिक सन्निकट – बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए पुनर्बलन का न्यायसंगत प्रयोग करना ।

7. पुनर्बलन

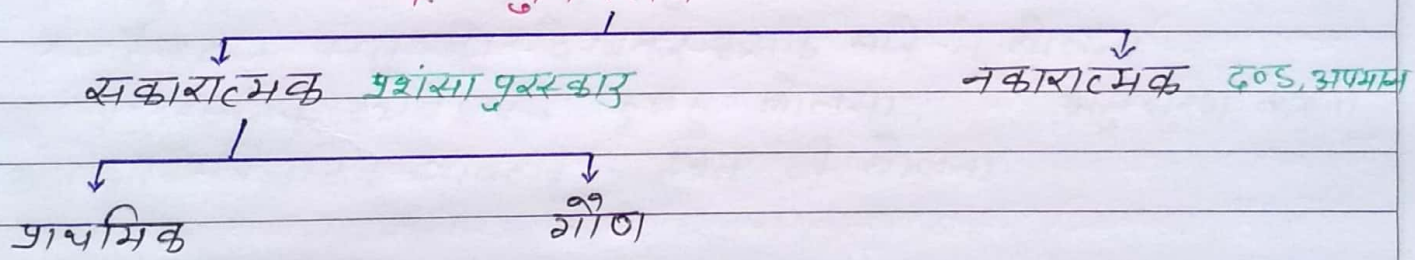

प्राथमिक / प्राकृतिक – जो जन्मजात आवश्यकताओ की पुर्ति करते हैं – भोजन, पानी, काम, नींद

गौण / द्वितीयक – जो बाहरी रूप से प्रदान किये जाते हैं – प्रशंसा, पुरस्कार

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 16

8. पुनर्बलन अनुसूची शब्द प्रयोग - स्कीनर

- सतत
- आंशिक (best)
  - अनुपात
    - निश्चित — किसी बच्चे को हर 5वें, 10वें, 15वें, 20वें उत्तर पर पुनर्बलन देना
    - परिवर्त्य — किसी बच्चे को अनिश्चित अनुक्रिया पर पुनर्बलन देना
  - अन्तराल
    - निश्चित — हर 10 मिनट बाद पुनर्बलन देना
    - परिवर्त्य — कभी भी 5 मिनट बाद या 10 मिनट बाद

एक शिक्षक को हर महीने की 30 तारीख को वेतनमान दिया जाता है, कौनसा पुनर्बलन है - निश्चित अन्तराल

सबसे बेहतर अनुक्रिया की दर परिवर्त्य अनुपात में व सबसे कम निश्चित अतंराल में होती है।

9. स्कीनर के शाब्दिक व्यवहार के प्रकार - 4 प्रकार

I. माण्ड/माँग → डिमांड के अनुसार बोलना

II. टैक्ट → वस्तु को देखकर उसके बारे में बोलना

III. प्रतिध्वनिक व्यवहार → हूबहू बोलना, अनुसरण करना

IV. ऑटोक्लिटिक व्यवहार → स्वत ही बोलना

शिक्षा में उपयोगिता →

→ यह सिद्धान्त भाषा विकास में अनुक्रिया तथा पुनर्बलन को महत्वपूर्ण मानता है।

→ यह सिद्धान्त आत्म विश्वास को बढाने, चिंताओं को दूर करने व निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण में उपयोगी है।

→ व्यवहार परिमार्जन में यह सिद्धान्त उपयोगी है।

→ अभिक्रमित अनुदेशन (कार्यक्रमिक अधिगम) को सीखाने में यह सिद्धान्त उपयोगी है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

यह सिद्धान्त परिणामों की जानकारी प्रदान करने तथा सकारात्मक पुनर्बलन पर बल देता है।

Note:- इस सिद्धान्त में आंतरिक योग्यता व आनुवांशिक कारकों को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता।

IV. समीपता अनुबंधन / स्थानापन्न का सिद्धान्त :-

पुनर्बलन रहित एकमात्र व्यवहारवादी सिद्धान्त / अपुनर्बलन एकहरा प्रयास सिद्धान्त

प्रतिपादक – एडविन गुथरी प्रयोग – खरगोश पर

→ इस सिद्धान्त के अनुसार सीखना उद्दीपक अनुक्रिया (S–R) में पुनर्बलन के आधार पर नहीं अपितु सामीप्य (समीपता) के आधार पर होता है।

→ सीखना अनेक प्रयासों का परिणाम नहीं अपितु एक ही प्रयास का परिणाम होता है।

→ इस सिद्धान्त के अनुसार अनुक्रियाओं को नये उत्तेजकों की तरफ प्रतिस्थापित किया जाता है

→ एक उत्तेजक प्रतिमान जो किसी प्रतिक्रिया के समय क्रियाशील है, यदि वह दुबारा होगा तो उस प्रतिक्रिया को पुनः उत्पादित कर देता है।

→ इसने खरगोश तथा पीटर नामक बालक पर प्रयोग किया

→ एडविन गुथरी ने नवीनता का नियम दिया इसके अनुसार अन्तिम व्यवहार उपयोगी है, अन्तिम व्यवहार अगली परिस्थिति में दोहराते हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

गुथरी ने बुरी आदतों को दुर करने के लिए 3 विधियों का प्रतिपादन किया-

I. सीमा विधि (देहली विधि) → इसके अन्तर्गत अवांछनीय अनुक्रिया को उत्पन्न करने उद्दीपक को देहली से नीचे लाकर सीमित कर दिया जाता हैं।

II. थकान विधि → अवांछनीय अनुक्रिया को इतनी बार करवाया जाता हैं कि वो थक जाए ताकि उसमें उस अनुक्रिया को दुबारा ना करने का भाव उत्पन्न हो जाये।

III असंगत उद्दीपन विधि → इसमें अवांछित अनुक्रिया उत्पन्न करने वाले उद्दीपक को उपस्थित किया जाता हैं।

V अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त :-

प्रतिपादक - I. P. पावलॉव (रूस) 1904

सिद्धान्त के उपनाम- संबंध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त
परम्परागत / प्राचीन अनुबंधन सिद्धान्त
प्रतिवादी / प्रतिस्थापक सिद्धान्त
S-अनुबंधन सिद्धान्त
शास्त्रीय अनुबंधन का सिद्धान्त Classical Conditioning

ये मनोवैज्ञानिक नही थे बल्कि शरीर विज्ञानी थे।
पाचन क्रिया के प्रयोग के लिए इन्हे नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया।

अनुबंधन के पिता / अनुबंधन के गोचर → I. P. पावलॉव

"सीखना एक अनुकूलित अनुक्रिया है।" - पावलॉव

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

प्रयोग से पूर्व -

मूल उद्दीपक प्राकृतिक उद्दीपक	भोजन [UCS]	लार का टपकना [UCR]
		Unconditibnal Response
		स्वाभाविक प्रतिक्रिया
		मूल प्रतिक्रिया
स्वाभाविक उद्दीपक	घण्टी [CS]	कोई क्रिया नहीं

कृत्रिम / सहायक / अननुबंधित उद्दीपक

प्रयोग के दौरान →

	घण्टी + भोजन	लार का टपकना (UCR)
22-23 दिन तक दोहराया	" "	"
	" "	"
	" "	"

अन्तिम स्थिति

केवल घण्टी [CS]	लार टपकना (CR)

मूल उद्दीपक के प्रति जो क्रिया करते हैं (लार टपकना) उससे मिलती जुलती क्रिया किसी कृत्रिम उद्दीपक के साथ करते हैं वह अनुबंधन कहलाता है। (घण्टी बजाना)

जब मूल उद्दीपक साथ नहीं होगा तो वह क्रिया कभी भी स्वभाविक नहीं होगा।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

सिद्धान्त के महत्वपूर्ण नियम:-

[1] उत्तेजन का नियम :- मूल उद्दीपक (भोजन) से पहले कृत्रिम उद्दीपक (घंटी) को दिये जाने पर उसके प्रति अनुकुलित अनुक्रिया (लार का टपकना) का होना उत्तेजन का नियम कहलाता हैं।

[2] आतरिक अवरोध का नियम :- विलोपन केवल घंटी
जब लगातार CS को उपस्थित किया जाता हैं तो कुछ समय बाद में CR (लार) का बंद हो जाना विलोपन कहलाता हैं।
थोड़े समय के बाद केवल घंटी बजाने पर लार नही टपकती

[3] स्वत पुनर्लाभ:-
विलोपन के कुछ समय बाद कुते के सामने CS (घटी) रखा जाता हैं तो कुता पुन: CR (लार टपकना) करता हैं।

[4] बाह्य अवरोध का नियम:-
घंटी और भोजन के अलावा बाहर से आने वाली प्रत्येक आवाज- बाह्य अवरोध

[5] उद्दीपक सामान्यीकरण:→
मूल उद्दीपक के प्रति की जाने वाली अनुक्रिया को उससे मिलते जुलते अन्य (घंटी) उद्दीपक के प्रतिभी करना।

2016 प्र. एक बच्चे ने लाल रंग के गुलाब को छुआ तो उसका हाथ कट गया तो अब वह प्रत्येक लाल रंग से डर जाता हैं क्यों?-
उद्दीपकसामान्यीकरण

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

[6] उच्च कोटि अनुबंधन :-

कृत्रिम उद्दीपक (घंटी) से पहले की परिस्थिति के प्रति भी अनुक्रिया का प्रारम्भ होना उच्च कोटि अनुबंधन हैं। जैसे- पावलाव का कमरे का गेट खोलते ही या लाईट ऑन करते ही लार टपकना।

[7] आभासी अनुबंधन :-

कुत्ते में स्वतः ही अनुकुलित अनुक्रिया का प्रारम्भ होना।

[8] विभेदन :-

मूल उद्दीपक व कृत्रिम उद्दीपक के मध्य अन्तर करना सीखना विभेदन हैं।

अनुबंधन के प्रकार - 4

[1] सहकालिक अनुबंधन → घंटी (7:05:12) व भोजन (7:05:12) दोनो का साथ-साथ होना। इसमें अनुबंधन नही होगा क्योंकि दोनो साथ साथ हो रही है तो उनमे सम्बध स्थापित नही हो पायेगा अतः यह अनुबंधन अच्छा नही होता

[2] विलम्बित अनुबंधन :→ घंटी का प्रारम्भ (7:05:12) व अन्त (7:05:45) दोनो पहले होता हैं, यह सबसे उत्तम (best) अनुबंधन हैं।

[3] अवशेष अनुबंधन :→ घंटी (7:05:12) व भोजन (7:50:45) में समय अन्तराल अधिक होता हैं।

[4] पश्चगामी अनुबंधन :→ मूल उद्दीपक (भोजन) के बाद कृत्रिम उद्दीपक (घण्टी) भोजन पहले देकर घंटी बाद में बजाना, पेट भरने के बाद घण्टी बजाने से कोई क्रिया नही होती
सबसे बेकार अनुबंधन

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 22

अनुबंधन को प्रभावित करने वाले कारक :-

Q. अनुबंधन पर प्रभाव पड़ता है / नहीं

(i) प्रेरक का प्रभाव भूख का प्रभाव, प्रेरक - भूख, कुता भूखा होगा तभीलार त्व

(ii) उत्तेजको का निकट का संबंध - घण्टी व भोजन का समय अन्तराल सही होना

(iii) उत्तेजको की आवृति - 22 दिन तक बार-2 Revise किया तब अनुबंधन

(iv) नियन्त्रित वातावरण केवल घण्टी की ही आवाज बाकि कोई आवाज नही

(v) मानसिक स्वास्थ्य हड्कार कुत्ते की हमेशा लार टपकती है चाहे भोजन दो या ना दो

(vi) लिंग का प्रभाव लड़किया अनुबंधन जल्दी कर लेती हैं।

(vii) बुद्धि का प्रभाव मंद बुद्धि बालक जल्दी अनुबंधन करता है।

(viii) आयु का प्रभाव - छोटे बच्चे जल्दी अनुबंधन करते है उन्हे हर जगह दोस्तो का साथ चा

(ix) साहचर्य निअम का प्रभाव - यह सिद्धान्त साहचर्य नियम पर आधारित है।
किसी स्थिति में किए गए व्यवहार को उसी के समान दूसरी स्थिति में दोहराना।

सिद्धान्त की शिक्षा में उपयोगिता :→

→ भाषात्मक विकास में उपयोगी

→ बालक में भय / भ्रम को दूर करने में उपयोगी वाटसन ने अल्बर्ट नामक बालक का खरगोश के साथ प्रयोग किया

→ समूह निर्माण में उपयोगी

→ सकारात्मक अभिवृतियो / मनोभावो का विकास करने में उपयोगी

→ मानसिक रोगियो का उपचार करने में उपयोगी Movie - Munna Bhai MBBS

→ अच्छी आदतों का निर्माण करने में उपयोगी

→ "यह सिद्धान्त व्यवहार, अनुशासन, समायोजन तथा सुन्दर लेख बनाने में उपयोगी है" - क्रो & क्रो के अनुसार

→ संवेगात्मक अस्थिरता का उपचार करने में

Note:- अनुबंधित अनुक्रिया → अस्थायी होती है।
" " → सम्पूर्णता पर आधारित होती है
" " → स्पष्ट होती है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

संज्ञानवादी उपागम :→

→ यह उपागम अधिगम को एक सक्रिय व जटिल प्रक्रिया मानता है। इस उपागम के अनुसार मानसिक क्रियाएँ जैसे - चिन्तन, कल्पना, समस्या समाधान, स्मृति, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण इत्यादि मनोविज्ञान का केन्द्र हैं।
→ यह उपागम अधिगम में आत्म-अनुभूति, सूचना संसाधन तथा अन्त दृष्टि (विवेक) को महत्वपूर्ण मानता है।

संज्ञानवाद की दो धाराएँ है-

(i) प्राचीन / परम्परागत / क्लासिकल संज्ञानवादी → कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर, कुर्त लेविन, जीन पियाजे, टोलमैन

(ii) आधुनिक संज्ञानवादी → जेरोम ब्रुनर, डेविड आसुबैल, अल्बर्ट बाण्डुरा, रॉबर्ट गैने।

I. जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :→

पियाजे के अनुसार सीखना क्रमिक व आरोही (निम्नतर से उच्चतर) प्रक्रिया होती है। तथा गुणात्मक रूप में भी होता है।

पियाजे ने अपनी पुस्तक "भाषा व चिन्तन पर बालक में विचार" (Language & thought of the child) में इस सिद्धान्त को बताया है।

Other Books :→ (i) The Psychology of child
(ii) The development of child
(iii) Psychology of Intelligence

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 24

→ पियाजे ने अपने बेटे लॉरेन्ट, लयूसीन, व जैकलीन पर प्रयोग किए (I✓ मनोवैज्ञानिक जिसने अपने बच्चो पर प्रयोग किया) (लड़का, लड़की)

→ ** बालक वातावरण के साथ संबंध बनाते हुए अपनी समझ/सोच का विकास करता है।

पियाजे की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ :-

(i) अनुकूलन (Adapation) :- बालक वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने के लिए पारस्परिक अन्तः क्रियाएं करता है इसमें तीन क्रिया होती हैं-

(क) आत्मीकरण / समावेशीकरण (Assimilation) - किसी समस्या के समाधान में पहले से बने हुए मानसिक सम्प्रत्ययों का प्रयोग करना ही आत्मीकरण है। प्राथमिक स्कूल की बच्ची द्वारा पहली बार ऊंट को देखने पर उसे घोड़ा कहना / वो ऊंट को घोड़ा इसलिए बोलती है क्योंकि उसने अब तक घोड़ा ही देखा है।

(ख) संमजन / समायोजन (Accommodation) - किसी समस्या के समाधान के लिए पूर्व स्कीमा (तरीका / मानसिक संरचना) में परिवर्तन करते हुए नए संशोधित स्कीमा विकसित करना। Ex→ बच्ची द्वारा दुसरी बार ऊंट को देखने पर कुबड़ वाला घोड़ा कहना

R2018 (ग) सन्तुलीकरण / साम्यधारण (Equilibration) :- आत्मीकरण व संमजन में सतुलन स्थापित करते हुए सही सम्प्रत्यय का विकास (पूर्व स्कीमा व नवीन स्कीमा में संतुलन स्थापित करना घोड़े समय के बाद पुस्तक/अखबार में बच्ची द्वारा ऊंट का चित्र देखना और उसके नीचे ऊंट लिखा हुआ देखकर बच्ची अब ऊंट को ऊंट ही बोलेगी।

(ii) स्कीमा (Schemas) :- Imp (a) किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ व्यवहार करने का तरीका जो दो प्रकार का होता हैं-

I. व्यवहारिक स्कीमा (शारीरिक क्रियाएं)

II. मानसिक स्कीमा (चिंतन, वाद-विवाद, तर्क)

(b) सूचनाओं की संगठित संरचना जो समस्या समाधान में योगदान देती हैं, स्कीमा कहलाती हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

स्कीमा के कार्य :→

पियाजे के अनुसार विकास के तीन पक्ष होते हैं
(i) जैविक परिपक्वता :- अपने आप अर्जित करना समयानुसार
(ii) भौतिक वातावरण से प्राप्त अनुभव
(iii) सामाजिक वातावरण से प्राप्त अनुभव
इन तीनों पक्षों में सन्तुलन स्थापित करना व मानसिक संरचना में परिवर्तन करना ही स्कीमा है। संज्ञानात्मक संरचना

स्कीम्स :- व्यवहारो की पुनः संगठित सरचना जिसको प्रतिदिन दोहराया जाता है स्कीम्स कहलाता है। जैसे बालक का प्रतिदिन जूते पहनना, स्कूल जाना या दैनिक कार्यो की पुनरावृति

जीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्था :-

(1.) ज्ञानात्मक / क्रियात्मक / संवेदी गामक / संवेदी पेशिय :-

sensorimotor stage

कार्यकाल → 0 से 2 वर्ष

→ बालक संवेदना तथा शारीरिक क्रियाओ के माध्यम से सीखता है। (ii) मानसिक क्रिया संवेदना होती है।
जैसे :- छोटे बालक द्वारा खेलते समय बॉल को फेकना व फिर चद्दर खीचकर बॉल को पास लाना।

→ बालक वातावरण से स्वंय को अलग समझता है।

→ क्रिया व परिणाम में संबंध स्थापित करना। जैसे- बालको द्वारा किसी वस्तु / गिलास को फेंककर तोड़ना तथा टुटने पर अलग-2 बालको द्वारा अलग-2 प्रतिक्रिया देना, किसी का उठ से रोना शुरू करना, किसी का हँसना, किसी का छिप जाना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ बालक में स्मृति, ध्यान, अनुकरण व जिज्ञासा की प्रवृति का विकास हो जाता हैं।

→ व्यवहारिक बुद्धि का अभाव पाया जाता हैं।

→ Practical वस्तु स्थायित्व (object performance) की प्रवृति का विकास- 18/20-24 महीने का बालक जैसे:- वस्तुओं को छुपाने पर ढुँढना

संवेदीयगामक अवस्था की 6: उप अवस्थाएँ हैं →

(1.) प्रतिवृत्त (सहज) क्रियाओं की अवस्था →
कार्यकाल → 0 से 30 दिन
जैसे- अंगुली। वस्तु का चुसना

(2.) वृतीय प्रतिवृत क्रियाओ की अवस्था-
कार्यकाल- 1 से 4 माह
प्रमुख वृतीयवृत्तक्रियाओं को बार-बार दोहराता है जैसे- चुसना, पकड़ना, निगलना इनको ही बार-बार दोहराता हैं।

(3.) गौण वृत्तीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था-
कार्यकाल- 4 से 8 माह
इसके अन्दर वस्तु को पलटना या उलटना या ईधर-उधर करना होता हैं। खिलौने को देखकर उसे खोलना।तोड़ना

(4.) गौण स्कीमैटा की अवस्था:-
कार्यकाल → 8 से 12 माह
इसके अन्तर्गत बालक उद्देश्य व साधन में अन्तर, अनुकरण करना, वस्तुओं को खोजने की कोशिश करना।

(5.) तृतीय वृतीय प्रतिवृत क्रियाओं की अवस्था:-
कार्यकाल → 12 से 18 माह

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

इस अवस्था में बालक शारीरिक क्रियाएँ कम कर देता है तथा वस्तुओं को गुणों के आधार पर समझने की कोशिश करता है।

(6) मानसिक प्रयोग द्वारा नये साधनों की खोज की अवस्था –
कार्यकाल – 18 से 24 माह
वस्तुओं को स्थायी मानना

(2) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (POS) :→ Pre operational stage

कार्यकाल 2 से 7 वर्ष

आत्मकेन्द्रित / प्राक् सम्प्रत्यात्मक

उम्र → 2 से 4 वर्ष

(i) सुचकता का विकास – बालक की भाषा में संकेत चिह्न व प्रतीकों का इस्तेमाल होना

(ii) मौखिक भाषा का सर्वाधिक विकास

(iii) खेलना व अनुकरण की प्रवृति का विकास

(iv) रेखाचित्र बनाने की प्रवृति का विकास

(v) नाटक, अभिनय करना छोटी लड़कियों का अपनी मम्मी की तरह शृंगार करना, पैंचार होना

दोष :-

(i) केन्द्रिकरण की प्रवृति → वस्तु के एक ही पक्ष पर ध्यान देना

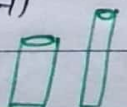

लम्बा गिलास लेने की जिद करना क्योंकि वह सोचता है कि गिलास लम्बा होगा तो जूस भी ज्यादा होगा।

अन्तः प्रज्ञात्मक

उम्र → 4 से 7 वर्ष

1. सहज चिंतन व कुछ मानसिक क्रियाएँ जैसे :- +, −, ×, ÷ लेकिन नियम नहीं समझेगा सीधा करेगा

2. **यहाँ बालक में अनपलटन (विपरीत) क्रिया निर्माण का दोष पाया जाता है जैसे - नियमों के अर्थ को नहीं समझ पाना। Ex → 5₹ के सिक्के को जानना परन्तु 5₹ में 500 पैसों को न जानना, स्कूल से घर की दूरी का पता होना परन्तु घर से स्कूल की दूरी न बता पाना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Imp. (ii) आत्मकेन्द्रित भाव / अहं भाव (Ego Centerism) :- स्वंय के दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण मानता हैं और ये भाव उत्पन्न होना कि कोई वस्तु मेरा पीछा कर रही हैं जैसे- परछाई / बादल का साथ चलना

Imp. (iii) सजीववाद / जीववाद (Animism) :- जैसे हर गतिमान वस्तु को सजीव समझना तथा भौतिक घटनाओं का मानवीकरण करना
बादल बड़े नाराज है, सूर्य आज कितना उदास है, पंखा चलता है तो ऐसे सजीव मानना

(iv) कलैक्टिव मोनोलोज :- स्वंय से बाते करना जैसे छोटे बच्चे का खेलते-2

(3.) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था :- [COS]
Concrete operational stage

कार्यकाल → 7 से 11 वर्ष या 7 से 12 वर्ष

→ मूर्त को ठोस संक्रियात्मक भी कहते हैं।
→ मूर्त या ठोस चिंतन का प्रारम्भ होना।
→ वस्तुओं में वर्गीकरण करना, तुलना करना व संबंध स्थापित करना।
→ चिंतन (विचारो में) क्रमबद्धता व जटिलता पाई जाती हैं।
→ पलटन की योग्यता का विकास (नियमों के अर्थ को समझना)
→ अहम् (ego) भाव को छोड़ देना। अर्थात दुसरो की बातो को भी स्वीकार करना
अहंभाव
→ विकेन्द्रीकरण का प्रारम्भ
→ संरक्षण की समझ (लम्बाई, चौड़ाई, आयतन, क्षेत्रफल आदि etc. का ज्ञान
→ स्थानिक सोच (दिशा व नक्शों की समझ)
CTET- विचारों में विलोमिता (उल्टा बोलेगा) का प्रारम्भ।

कमी :- मूर्त संक्रिया / मूर्त वस्तु के अलावा चिंतन न करना

(4) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (FOS) :→
रूपात्मक " " " (formal operational stage)

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

कार्यकाल → 12 से 15 वर्ष या 12 से व्यस्क काल

विशेषताएँ :-

→ मूर्त व अमूर्त दोनो चिंतन पाये जाते हैं। चिंतन की शुरुआत मूर्त
→ चिंतन पूर्णतया व्यवस्थित हो जाता हैं। सहज चिंतन - अन्तःप्रज्ञात्मक
→ परिकल्पनात्मक / निगमन तर्क का विकास (संभावनाओ से वास्तविकता की ओर समस्या का समाधान करना सिख जाता है)
→ अपसारी / पार्श्व चिंतन का प्रारम्भ (अलग-2 सभी दिशाओं में सोचना)
→ सभी प्रकार के मानसिक सम्प्रत्ययों का विकास जैसे - मौलिकता, रचनात्मकता, विश्लेषण व संश्लेषण, समस्या का समाधान, निर्णय-शक्ति, स्मरण शक्ति व अधिगम शक्ति का अधिकतम विकास हो जाता हैं।
→ इस अवस्था में बालक पैण्डुलम की समस्या / मानसिक प्रश्नो का हल करना सीख जाता हैं।
→ आदर्शवाद व आलोचना की प्रवृति का विकास गलत काम की आलोचना व आर्दश काम की सराहना
→ विकेन्द्रीकरण की प्रवृति का पूर्णतया विकास
→ अधिगम स्थानान्तरण की गति का विकास

II. अधिगम सोपान का सिद्धान्त →

प्रतिपादक - रोबर्ट गेने (1965)

Book - Condition of Learning (अधिगम की शर्तें)

अधिगम के 8 प्रकार →

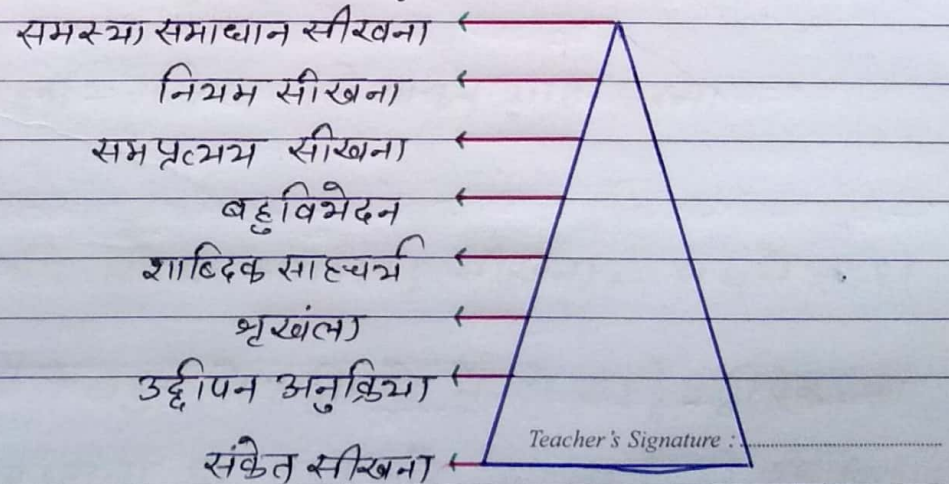

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

1. संकेत अधिगम (Signal Learning) :- सबसे निम्न अधिगम माना जाता है, इसके अन्तर्गत पावलॉव का अनुबंधन सिद्धान्त आता है, जैसे - शिक्षक को देखकर बच्चों का खामोश हो जाना, रेड लाईट को देखते ही पैर ब्रेक पर जाना, घण्टी के बजते ही कुत्ते की लार टपकाना।

2. उद्दीपक अनुक्रिया अधिगम → उद्दीपक की उपस्थिति में अनुक्रिया का होना, इसके अन्तर्गत व्यवहारवादी सभी सिद्धान्त आते हैं Special - थार्नडाइक

3. शृंखला अधिगम → क्रमिक रूप से किसी चीज को सीखना
प्रतिपादक → रॉबर्ट गैने option मद न दो तो स्किनर आयेगा
जैसे - एक बालिका स्कूल से आकर जैकेट फेक देती है तो मम्मी के बार-बार कहने पर जैकेट को सही जगह पर टाँगती है।
शृंखला अधिगम दो प्रकार का होता है -
(अ) शाब्दिक शृंखला - अभिक्रमित अनुदेशन
(ब) अशाब्दिक शृंखला - चित्रों के माध्यम से

4. शाब्दिक साहचर्य अधिगम → शब्दों के माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन, गाने व गीतों के माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन, इसकी व्याख्या डेविड आसुबेल ने की और इसके चार प्रकार बताये -
(i) अभिग्रहण - लिख-लिखकर याद करना
(ii) रटकर -
(iii) खोज -
(iv) अर्थपूर्ण - सोच-समझकर सीखना ← सबसे अच्छा

5. बहुविभेदन अधिगम → बहुत से उद्दीपकों में से सही उद्दीपक का चुनाव करके सीख जाना eg. बहुत सारे Colours में से एक favourite

Teacher's Signature :.....

Scanned with CamScanner

कलर चुनना या बहुत सारी वैकेंसीज (S.I, Rest, Loc, Intg.) आने पर I की तैयारी के लिए चयन करना।

6. सम्प्रत्यय अधिगम / प्रत्यात्मक अधिगम :- या अवधारणा अधिगम कैण्डलर ने व्याख्या की, किसी वस्तु की व्याख्या उसके गुणों व घटना के आधार पर करना। जैसे - ऊँचाई के आधार पर पहाड़ की व्याख्या करना।

7. सिद्धान्त अधिगम :→ नियमों के आधार पर किसी भी क्रिया। कार्य को सीखना। जैसे - न्युटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम

8. समस्या - समाधान अधिगम → अधिगम का सर्वश्रेष्ठ प्रकार हैं, इसे व्यक्तिगत या जटिल अधिगम कहा जाता हैं।
जैसे - रेखागणित में किसी प्रमेय को हल करना।

II. अन्त: दृष्टि का सिद्धान्त (Insight Theory) :-

अन्य नाम → सुझ का सिद्धान्त
समग्रता का सिद्धान्त
गेस्टालटवादी सिद्धान्त

प्रतिपादक - कोहलर (1917), कोफका, मैक्स वर्दीमर, कुर्तलेविन
मुख्य
चारो गेस्टालटवादी थे।

इस सिद्धान्त का Key-Word शब्द - आकस्मिक / अचानक / तात्कालिक
किसी समस्या के अचानक समाधान को तथा उस समस्या के केन्द्रीय भाव को समझने की शक्ति अंतदृष्टि कहलाती हैं।

प्रयोग - चिम्पाजी (सुलतान नामक) बंदर पर 1917 में केनारी द्वीप, चार परिस्थितियों में प्रयोग किये।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

सूझ क्या है:-

गुड के अनुसार- "सूझ वास्तविक स्थिति का आकस्मिक, तात्कालिक तथा स्थायी ज्ञान है।"

वुडवर्थ के अनुसार- "अन्तः दृष्टि का अर्थ अच्छा निरीक्षण अर्थात् इकाई को समग्रता के रूप में देखना"

सिद्धान्त के कुछ महत्वपूर्ण शब्द:-

आकस्मिता- अहा अनुभव (अचानक कोई Idea आने पर जो अच्छी Feeling आती है अहा आइ)

प्रत्यक्षीकरण - समग्र प्रत्यक्षीकरण पर बल देना, देखते ही समझना कि यह काम चल रहा है।

जैसे- भीड़ का सड़क पर इकट्ठा देखकर Idea लगाना कि ऐक्सीडेंट हुआ है।

समग्रता (सम्पूर्णता)- पुरी वस्तु को देखना फिर आंशिक भागों को देखना, सम्पूर्ण से अंश की ओर

पूर्व दृष्टि (Foresight):- काम करने से पहले की सोच। सुझ कि यह काम ऐसे करना, काम करने से पूर्व लक्ष्य को देख लेना।

Note:- पूर्व दृष्टि से मिलता जुलता एक शब्द पश्च दृष्टि भी है जिसका अर्थ है कि कार्य को करने के बाद सोचना कि ऐसा करते तो ऐसा हो जाता है, पश्च दृष्टि का इस सिद्धान्त से कोई संबंध नहीं है।

अन्तः दृष्टि के नियम:-

(i) समता का नियम:- एक परिस्थिति के आने के थोड़े दिन बाद ठीक वैसी ही परिस्थिति आये तो सुझ जल्दी उत्पन्न होती है।

(ii) निकटता का नियम- समस्या/परिस्थिति से आप कितने जुड़े हुये हों।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(iii) निरन्तरता का नियम – लगातार कार्य करते रहना, जब तक हल न हो, जैसे – थॉमस एडीसन द्वारा 1000 बार प्रयोग करने पर बल्ब का आविष्कार करना,

सूझ को प्रभावित करने वाले कारक :–

(1) बुद्धि का प्रभाव –
(2) कल्पना का प्रभाव –
(3) प्रत्यक्षीकरण की योग्यता –
(4) अनुभव का प्रभाव –
(5) प्रयास व त्रुटि का प्रभाव –

शिक्षा में उपयोगिता –

→ गणित व भौतिक विज्ञान में सबसे उपयोगी
→ उच्चतर मानसिक योग्यताएँ जैसे – चिंतन, कल्पना, रचनात्मकता आदि के विकास में उपयोगी ।
→ वैज्ञानिक आविष्कार व अधिगम स्थानान्तरण में उपयोगी
→ अवबोध / समझ / बोध (अंडर स्टेंडिंग) के विकास में उपयोगी
→ एकीकृत (समग्रता) पाठ्यक्रम निर्माण पर बल देता है ।

गैरीसन व अन्य के अनुसार – "यह सिद्धान्त समस्या समाधान व्यवहार पर बल देता है ।"

गेट्स व अन्य के अनुसार – "यह सिद्धान्त स्वयं खोज करके सिखने पर बल देता है ।"

यह सिद्धान्त समझकर सीखने (अवबोध) पर बल देता है ।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

थॉर्नडाइक (1898)	कोहलर (1917)
1. सीखना प्रयास व त्रुटि के द्वारा होता है।	1. सीखना सुझ के द्वारा होता है।
2. शारीरिक व गामक क्रियाएँ प्रधान तथा इन पर बल दिया	2. उच्च बौद्धिक क्रियाओं पर बल जैसे - प्रत्यक्षीकरण
3. सीखना एक क्रमिक प्रक्रिया है	3. सीखना अचानक होता है।
4. थार्नडाइक के सिद्धान्त में चेतन मन कार्य करता है।	4. कोहलर के सिद्धान्त में अचेतन मन कार्य करता है।
5. सीखना यांत्रिक (प्रयास-त्रुटि से) होता है।	5. सीखना अवबोध। समझ द्वारा होता है।

IV अव्यक्त अधिगम सिद्धान्त (Sign Learning Theory):-

अन्य नाम → गुप्त अधिगम
स्थान अधिगम
प्रत्याशा अधिगम
चिह्न अधिगम
संज्ञानात्मक मानचित्र
उद्देश्य पूर्ण अधिगम सिद्धान्त
प्रतीक अधिगम सिद्धान्त
संकेत अधिगम

प्रतिपादक - एडवर्ड टोलमैन (1932) अमेरिका
टोलमैन का संबंध प्रयोजनमूलक सम्प्रदाय से है।

पुस्तक - उद्देश्यपूर्ण व्यवहार जानवर तथा मनुष्य में

प्रयोग - चूहे पर T आकार की भूल-भूलैया में किया गया।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ यह सिद्धान्त व्यवहारवाद / गेस्टाल्टवाद, मनोविश्लेषणवाद, वुडवर्थ का गत्यात्मक मनोविज्ञान तथा मैक्डुगल के हार्मिक मनोविज्ञान का मिश्रण है।
→ सुनिश्चित लक्ष्य व्यवहार का निर्धारण करता है।
→ यह सिद्धान्त मोलार (उद्देश्यपूर्ण) व्यवहार पर बल देता है।
→ लक्ष्य प्राप्ति में मार्ग महत्वपूर्ण है ना कि अनुक्रिया।

एडवर्ड टॉलमैन ने अधिगम के 6 प्रकार बताए है-

(a) कैथेक्स - चालक व लक्ष्य में धनात्मक व ऋणात्मक सबंध को कैथेक्स कहा जाता है।
(b) समतुल्य विश्वास - लक्ष्य तथा उपलक्ष्य में सकारात्मक संबंध का होना समतुल्य विश्वास है।
(c) क्षेत्र प्रत्याशा - लक्ष्य प्राप्ति में छोटे रास्ते ज्यादा महत्वपूर्ण है।
(d) क्षेत्र ज्ञान विधियाँ - लक्ष्य प्राप्ति में प्रयुक्त की जाने वाली मानसिक क्रियाएँ जैसे - चिन्तन, समस्या-समाधान व प्रत्यक्षीकरण
(e) विभेदात्मकता - सही व गलत उद्दीपक में अन्तर करने की योग्यता विभेदात्मकता है।
(f) गामक प्रतिमान - लक्ष्य प्राप्ति में की जाने वाली गामक क्रियाएँ जैसे - लिखना, पढना, बोलना, सीखना आदि।

शिक्षा में महत्व :-

→ बालक के सामने शैक्षिक लक्ष्यों को परिभाषित किया जाना चाहिए।
→ पुरस्कार व प्रशंसा का प्रयोग किया जाना चाहिए
→ यह लक्ष्य प्राप्ति में सुनियोजित रणनीति पर बल देता है व गेस्टाल्टवाद का समर्थन करता है।

V. क्षेत्रीय अधिगम सिद्धान्त (Field Theory) :-

(तलरूप सिद्धान्त / प्राकृतिक दशा सिद्धान्त) (टोपोलॉजी थ्योरी) / थ्री फैक्टर थ्योरी -

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

प्रतिपादक - कुर्त लेविन (जर्मनी) 1917 में

सूत्र → $B = F(P \times e)$ → environment

Behaviour — Person — Field

Imp व्यवहार व्यक्ति व वातावरण की अंतक्रिया का परिणाम है।

जीवन क्षेत्र - व्यक्ति व वातावरण के मध्य मनोवैज्ञानिक अन्तक्रिया का परिणाम, यह जीवन क्षेत्र के आधार पर मानव व्यवहार की व्याख्या करता है।

Vectors :- यह एक विशेष मनोवैज्ञानिक शक्ति होती है जिसमें दो शक्तियां काम करती हैं - (i) आकर्षण (लक्ष्य की ओर) (ii) विकर्षण (विरोध उत्पन्न)

Topology (तलरूप) - भौतिक शास्त्र व गणित से ग्रहण किया गया विचार जो मनुष्य में आकृतिजन्य परिवर्तनों को व्यक्त करता है।

समुहगतिशीलता के प्रतिपादक। संगठनात्मक विकास के प्रतिपादक सामाजिक मनोविज्ञान के पिता, मनुष्य को मनोवैज्ञानिक मानव कहने वाले, अधिगम को सापेक्षिक प्रक्रिया मानने वाले → कुर्त लेविन है।

आधुनिक संज्ञानवादी -

सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त :-

सामाजिक संज्ञानात्मक। प्रत्यक्ष अधिगम सिद्धान्त, मॉउल अधिगम / भूमिका अधिगम / प्रतिरूप अधिगम

प्रतिपादक - अल्बर्ट बान्डुरा, सहयोगी - वाल्टर्स (कनाडा, 1977)

Imp लिण्डग्रेन के अनुसार - सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया सम्पर्क के कारण प्रारम्भ होने वाली प्रक्रिया है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

बाण्डुरा के अनुसार सामाजिक अधिगम के सोपान :→

I. अवधान / ध्यान / अवलोकन जैसे किसी हीरो को देखकर उसका अवलोकन करना
II. धारण करना उस हीरो को देखकर उसके गुणों को धारण करना यु. चलना, बोलना
III. पुन प्रस्तुतीकरण / पुनः उत्पादन उसके गानो को गाना,
IV. पुनर्बलन / अभिप्रेरणा

प्रयोग- छोटे बालक पर व जीवित जोकर पर, बैबी डॉल पर
अल्बर्ट

सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक :→

सामाजिक कारक → अवलोकन, एकरूपता / समानता, सहानुभूति, सुझाव, प्रतिस्पर्धा, सहयोग

मनोवैज्ञानिक कारक → रुचि, आदते, अभिप्रेरणा, ध्यान, चालक,

शारीरिक कारक → आयु, परिपक्वता, अन्तः स्त्रावी ग्रंथिया, थकान

शिक्षा में उपयोगिता :→

→ व्यक्तित्व निर्माण को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक
→ सामाजिकता का विकास करने में उपयोगी
→ भाषा निर्माण में
→ व्यवहार परिमार्जन में सिद्धान्त को उपयोगी माना गया हैं।
→ कला शिक्षण में सिद्धान्त उपयोगी हैं।

तुल्यबल व्यवहार सिद्धान्त :→

प्रतिपादक - डोलार्ड व मिलर

डोलार्ड व मिलर ने अनुकरण व साहचर्य को महत्वपूर्ण माना हैं

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

तथा अनुकरणीय व्यवहार के तीन प्रकार बताये हैं -

I. समान अनुकरणीय व्यवहार / समरूप अनुकरणीय व्यवहार
II. प्रतिलिपि अनुकरणीय व्यवहार - दिये गये निर्देश के अनुकूल व्यवहार
III. आश्रित व्यवहार

अधिगम के निर्मितवादी सिद्धांत / संरचनात्मक अधिगम सिद्धान्त

निर्मितवादी मनोवैज्ञानिक → वाइगोत्सकी, जेरोम ब्रुनर, हावर्ड गार्डनर, जॉन डीवी, जीन पियाजे

विशेषताएँ :-

→ इस उपागम की उत्पति संज्ञानवाद से हुयी, यह संज्ञानवाद का उच्चतम स्तर हैं।
→ यह उपागम बाल केन्द्रित उपागम हैं।
→ यह सिद्धान्त करके सीखने पर बल देता हैं।
→ इस उपागम के अनुसार बालक पूर्व अनुभव के आधार पर तुलना करते हुए नवीन ज्ञान का निर्माण करता हैं।
→ ज्ञान एक सक्रिय व सामाजिक प्रक्रिया हैं

निर्मितवाद का उद्देश्य :→ एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना हैं जहाँ बालक स्वतंत्र रूप से ज्ञान का निर्माण कर सके उसमें आलोचनात्मक, अपसारी चिंतन तथा समस्या - समाधान की योग्यता का विकास हो

निर्मितवाद के तत्व :→ 1. अधिगमकर्त्ता :- अधिगमकर्त्ता की रुचि अभिप्रेरणा, जिज्ञासा तथा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर बल दिया जाता हैं।

2. शिक्षक की भूमिका :- मित्र, दोस्त की भूमिका, सहयोगकर्त्ता, सरलीकरणकर्त्ता व मार्गदर्शक की भूमिका निभाता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

iii. अधिगम क्रिया :- बालक छोटे - छोटे समूह में विभाजित होकर समस्या पर चर्चा करके समाधान निकालते हैं तथा शिक्षक की भूमिका सहयोगकर्त्ता की होती है।

4. शिक्षण विधि :- करके सीखना, समस्या - समाधान विधि खोज/अन्वेषक विधि, पुनरावृत्ति, पैनल - परिचर्चा,

5. पाठ्यक्रम :- अन्तः क्रियात्मक व सहयोगात्मक पाठ्यक्रम होना चाहिए।

CTET Fix

लेव वाइगोत्सकी :- रूस के मनोवैज्ञानिक

सामाजिक व सांस्कृतिक कारक को मानने वाले Acc. हमेशा यही होगा

Book - Thought & Language (चिंतन व भाषा)

वाइगोत्सकी अधिगम, विकास व बुद्धि में सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों को सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं।

इन्होंने सामाजिक निर्मितवाद का सिद्धान्त दिया, सामाजिक कारकों को ज्ञान के निर्माण में महत्वपूर्ण मानना

वाइगोत्सकी ने भाषा को (निज भाषा) संज्ञानात्मक विकास का सबसे महत्वपूर्ण औजार बताया।

Imp ZPD (Zone of proxi Development) समीपस्थ विकास/निकटस्थ विकास का सिद्धान्त - इसके अनुसार बालक एक निर्धारित सीमा के बाद अपने नजदीकी माता - पिता या भाई - बहन की सहायता से ज्ञान का निर्माण करता है।

Key दाँचा निर्माण :- यह एक ऐसी तकनीकी है जो सहायता प्रदान करने के स्तर में परिवर्तन करती है इसके निर्माण का प्रमुख माध्यम संवाद होता है, इसके द्वारा बालक अपने अव्यवस्थित विचारों को एक सही आकार प्रदान करता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

जेरोम ब्रुनर :- आधुनिक संज्ञानवादी

Book - Process of education / Relevance of Education
शिक्षा की प्रक्रिया /

* बालक को विकास की किसी भी अवस्था में कुछ भी सिखाया जा सकता है।

संज्ञानात्मक विकास की तीन अवस्थाएँ बताई हैं -

1. सक्रिय प्रतिनिधान / विधि प्रतिनिधान [Enactive] -
कार्यकाल → 0 से 3 वर्ष
इस अवस्था में बालक क्रियाशील होकर गामक / शारीरिक क्रिया / संवेदना के माध्यम से सीखता है।

2. मूर्त प्रतिनिधान अवस्था / अनुप्रतिकात्मक / प्रतिकात्मक (Iconic stage) :-
कार्यकाल → 4 से 8 वर्ष
यह एक वास्तविकता की अवस्था है जहाँ बालक प्रत्यक्षीकरण व मानसिक प्रतिमाओं के माध्यम से सीखता है।

3. प्रतिक प्रतिनिधान (Symbolic stage) :-
कार्यकाल → 8 से 13 वर्ष
यह श्रेष्ठतम अवस्था है जहाँ बालक अपने अनुभवों को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करता है।

अन्य विशेषताएँ :-

→ यह सीखने में आगमन विधि को सबसे महत्वपूर्ण मानता है। नोट :- निगमन विधि को डेविड आसुबेल ने श्रेष्ठ माना है।
→ इन्होंने समप्रत्यय प्राप्ति प्रतिमान का प्रतिपादन किया।
→ व्यक्तिगत संबंधता व सामाजिक सम्बद्धता को शिक्षा में महत्वपूर्ण मानना, → इन्होंने अन्तः प्रज्ञात्मक व तात्कालिक चिंतन पर बल दिया।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त:- एटकिन्सन । शिफरीन

ये त्रिचरण सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त के प्रतिपादक भी हैं यह ज्ञानात्मक सिद्धान्त हैं जो सूचनाओं की स्मृति में प्रवेश करने तथा भण्डारित होने तथा पुनः प्राप्ति की व्याख्या करता हैं।

त्रिचरण सिद्धान्त→

इसके अनुसार मैमोरी के तीन प्रकार होते हैं

(i) संवेदी । ज्ञानेन्द्रिय स्मृति
(ii) लघुकालिक । कार्यकालीन स्मृति
(iii) दीर्घकालिक (स्थायी)

त्रिमार्गीय सम्प्रेषण→ शिक्षक से बालक
बालक से शिक्षक
पुनः शिक्षक से बालक

प्रक्रिया स्तर सिद्धान्त:- फ्रैंक व लोखार्ट

इसके अनुसार मैमोरी एक ही प्रकार की होती हैं।

सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त:- मिलर

इसके अन्तर्गत विषयवस्तु के संगठन व Encoding (सूचनाओं को संकेतों के रूप में भेजना) की अवधारणा पर बल दिया जाता हैं। तथा TOTE (Test operating my exist) "परीक्षा लेना व प्रयत्न करना"

दोहरा कोडिंग सूचना सिद्धान्त:- ए. पेविवो

इसमें सूचनाएँ शाब्दिक व अशाब्दिक दोनो रूपों में हो सकती हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

अनुभवजन्य अधिगम सिद्धान्त – कार्ल रोजर्स

अधिगम का मानवतावादी सिद्धान्त – अब्राहिम मैस्लो व कार्ल रोजर्स यह सिद्धान्त मानव को केन्द्रीय स्थान देते हुए। प्रदान करते हुए मानव की स्वतंत्रता, गरिमा व आत्मसिद्धि पर बल देता है।

अधिगम स्थानान्तरण :–

सोरेन्सन के अनुसार "अधिगम स्थानान्तरण एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण व अनुभवों को दुसरी परिस्थिति में प्रयोग करने पर बल देती है"

प्रकार – तीन

1. सकारात्मक / धनात्मक / भावात्मक :–

जहाँ एक कार्य दुसरे कार्य में सहायता प्रदान करता है जैसे – गणित का प्रयोग भौतिक विज्ञान में करना, साइकिल चलाने से बाइक चलाना।

सकारात्मक अधिगम के प्रकार –

I. एकपक्षीय / पार्श्विक (Lateral Transfer) – एक स्थिति में सीखे गये ज्ञान को उसी के समान दूसरी स्थिति में प्रयोग करना।

II. द्विपक्षीय (Bi Lateral) – शरीर के एक अंग से किये जाने वाले कार्य का प्रभाव शरीर के दुसरे अंग पर पड़ना।

III. अनुलम्ब / लम्बात्मक – सरल से जटिल की ओर या किसी सीखे गये कौशल का प्रयोग उच्च स्तरीय समस्या में करना।

IV. क्षैतिज / समस्तर (Horizontal) – समान स्तर के विषयों में सीखे गये ज्ञान का प्रयोग करना। गणित का प्रयोग PHY. में तथा PHY का प्रयोग

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

I. अनुक्रमिक:- क्रमिक रूप से सीखे गये विषयों के ज्ञान का प्रयोग जो धनात्मक रूप से होता है जैसे- हम +,- व x की सहायता से ÷ को हल करना सीखते हैं।

2. नकारात्मक अधिगम स्थानान्तरण → जहाँ सीखा गया ज्ञान दुसरे विषय में नुकसान पहुचाता हो जैसे- साइकिल चलाने वाले नाव चलाने के लिए कहना।

3. शून्य अधिगम स्थानान्तरण → प्रभाव नही पडता हैं।

शुन्क ने अधिगम स्थानान्तरण के 4 प्रकार बताये हैं-

I. समीपवर्ती अंतरण - नजदीकी। एक समान जैसी वस्तुओं में अधिगम स्थानान्तरण जैसे- टाईपराइटर से सिखी गई टाइपिंग का प्रयोग कम्प्यूटर की-बोर्ड पर करना।

II. दूरवर्ती अंतरण - कार्यालय में सीखे गये ज्ञान का प्रयोग घर की किसी समस्या में करना।

III. निम्नरोड़ अंतरण - अचेतन रूप में स्वतः ही होने वाला अधिगम स्थानान्तरण।

IV. उच्च रोड़ अंतरण - चेतन रूप में प्रयास करने पर होने वाला अधिगम स्थानान्तरण।

अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त:→

1. मानसिक शक्तियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त:- औपचारिक अनुशासन जैसे- स्मृति का प्रयोग इतिहास व गणित दोनो विषयो में किया जा सकता हैं।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

2. समान तत्वों का सिद्धान्त – प्रतिपादक – चार्नडाइक
3. सामान्यीकरण का सिद्धान्त – प्रतिपादक सी. एच. जड़
4. सामान्य व विशिष्ट बुद्धि का सिद्धान्त – प्रतिपादक स्पीयरमैन
NOTE – अधिगम स्थानान्तरण सामान्य बुद्धि का होता है, विशिष्ट का नही।
5. पक्षान्तरण का सिद्धान्त / अवयवादी का सिद्धान्त – गेस्टाल्टवादी
यह पूर्ण से अंश की ओर होता है।
6. आदर्श व मूल्यों का सिद्धान्त – बागले
7. संयोजनवादी सिद्धान्त – थॉर्नडाइक
संबंध स्थापित करने पर बल देता है।

अधिगम अक्षमता / कठिनाई → Learning Disability / Disorder

HTET 2015 ✓ अधिगम अक्षमता शब्द का प्रयोग सन 1963 में सैमुअल किर्क ने किया था।
✓ यह केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र से संबंधित रोग है।
यह एक आंतरिक विकार है।
इनका पूर्णरूपेण इलाज संभव नही है, इनमें कुछ सुधार किया जा सकता है।
नोट – भारत में इनका विशेष अध्ययन सैलिगमैन व माथुर ने किया तथा प्रयोग का नाम "अधिगम असहायतापन" नाम दिया यह प्रयोग कुत्ते पर किया गया।

अधिगम अक्षमता के प्रकार :-

(A) पठन विकृति –

(i) डिसलैक्सिया – इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1887 में रुडोल्फ बर्लिन ने किया था, शब्दों को पहचान नही पाना, पढ नही पाना, ध्वनि में अन्तर नहीं कर पाना, हस्त कौशल का कमजोर होना, पेशीय समन्वय का न होना, शर्ट के बटन बंद नही कर पाना, जुते के शॉल बंद नही कर पाना, शब्दों को उल्टा पढना,

Sept 2016

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

जैसे- तारे जमीन पर मूवी इसी पर आधारित हैं, उल्टा पढ़ना हैं
धूम-3 में आमिर खान का रोल।
नोट-यह रोग सम्पूर्ण समाप्त नही होता परन्तु कमी लाई जा सकती हैं।

(ii) एलेक्सिया- पठन विकृति से संबंधित शब्दों को पहचानने व सीखने में कठिनाई

(B) लेखन विकृति-

(i) डिसग्राफिया- लेखन संबंधी त्रुटिया जैसे- लिख नही पाना, अनियमित आकार के शब्दों का प्रयोग करना, लिखते समय लाइनों का सही नहीं होना, लेखन का अपठनीय होना, रबर का बार-2 प्रयोग बच्चे के द्वारा

(ii) डिस्प्रेक्सिया- लेखन व चित्रांकन संबंधी अयोग्यता

(C) गणितीय विकृति:-

(i) डिसकैल्कुलिया- गणितीय गणना नही कर पाना, गणितीय संकेतो को पहचान नही पाना, गणितीय नियम व सिद्धान्तों का प्रयोग नही कर पाना, स्थान, दिशा, समय-बोध का कमजोर होना, चैक बूक का प्रयोग नही कर पाना, अगुंलियों से गणना करना।

(D) संचार विकृति / वाक् अयोग्यता):-

(i) अफेजिया- मौखिक रूप से विचार या भावों को ग्रहण करने में कठिनाई।

(ii) डिस्फैसिया- व्याख्यान / बातचीत के दौरान उत्पन्न होने वाली कठिनाई।

Teacher's Signature :.....

Scanned with CamScanner

अन्य विशेष अयोग्यताएं / रोग / विकृतियां :-

(i) डिमेंशिया - चिंतन शक्ति व निर्णय शक्ति तथा स्मरण शक्ति का कमजोर हो जाना।

(ii) ADHD (अटेंशन डेफिसिट हाईपर एक्टिविटी डिसआर्डर) :-

ध्यान अभाव अतिक्रियाशीलता विकार →
सीखने के दौरान ध्यान नहीं देना, बेचैन रहना, बीच-बीच में बोलना, दुसरों को टोकना बार-बार सीढ़ियों पर उतरना-चढ़ना, इधर से उधर भागना।

अधिगम पठार :→

** रॉस के अनुसार - "अधिगम पठार सीखने की उस अवधि को व्यक्त करता है जब सीखने की गति एक दम से रुक जाती है।"

अधिगम के पठार के कारण -

1. अभिप्रेरणा का अभाव ← प्रमुख कारण
2. शारीरिक व मानसिक दोष
3. दोषपूर्ण वातावरण का होना
4. दोषपूर्ण पाठ्यक्रम
5. दोषपूर्ण शिक्षण विधि
6. रुचि का न होना
7. मानसिक शक्तियों का कमजोर होना (स्मरण शक्ति कम हो जाना)

अधिगम वक्र :-

गेट्स व अन्य के अनुसार अधिगम वक्र सीखने की मात्रा, गति व उन्नति को व्यक्त करता है।

यह तीन प्रकार का होता है -

1. नकारात्मक / उन्नतोदर / हासमान / (Convex Curve) :-

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(A)

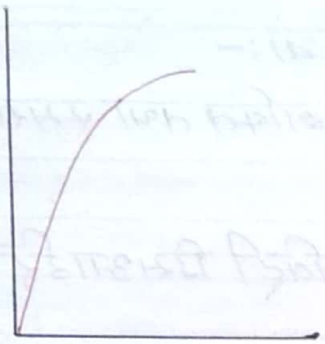

सीखने की गति आरम्भ में तेज होती है; धीरे-धीरे मंद होती जाती है।

(2) सकारात्मक / नतोदर (वर्धमान निष्पादन वक्र / धनात्मक) Concave:-

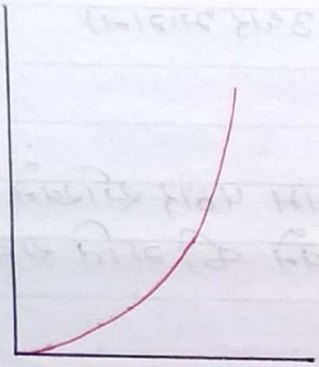

सीखने की गति प्रारम्भ में धीमी व बाद में लगातार तेज हो जाती है।

(3) मिश्रित / Combined→

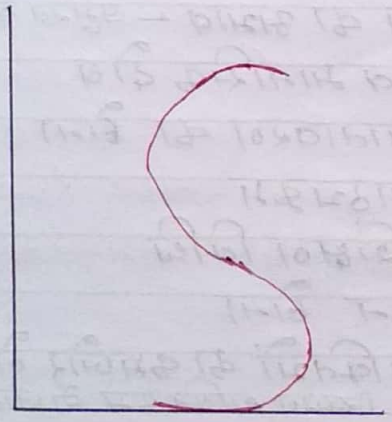

सीखने की गति प्रारम्भ में धीमी, मध्य में तेज व अन्त में फिर धीमी हो जाती है।

Note:- सरल रेखीय वक्र :-

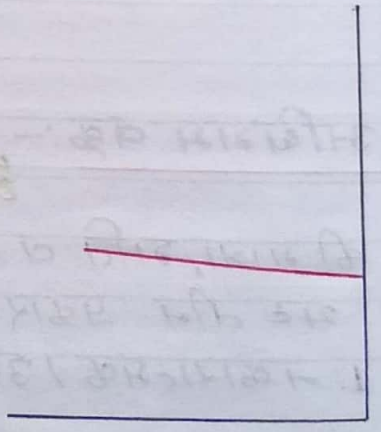

सीखने की गति एक समान बनी रहती है।

Scanned with CamScanner

अधिगम के अनुक्षेत्र :-

संज्ञानात्मक / ज्ञानात्मक →
समस्त बौद्धिक / मानसिक क्रियाएँ जैसे - विश्लेषण, संश्लेषण, आलोचना, वर्गीकरण, तुलना, अवबोध, स्मृति, अनुप्रयोग ।

भावात्मक / संवेगात्मक →
संवेग संबंधित अनुक्रियाएँ जैसे - मनोवृति, अभिवृति, भय, क्रोध आदि ।

मनोगत्यात्मक / क्रियात्मक →
इसमें इन्द्रियों की भूमिका होती हैं, जैसे पढ़ना, लिखना, चलना, दौड़ना

S - O - R (उद्दीपक प्राणी अनुक्रिया) सूत्र वुडवर्थ ने दिया

इसके अनुसार प्राणी की संवेगात्मक विशेषताएं उद्दीपक अनुक्रिया के संबंध को प्रभावित करती हैं।

Written By :-
Guru Narendra Poonia
9413566680

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... **1. अभिप्रेरणा (Motivation)** Page No. 1

'मोटिवेशन' शब्द की उत्पति लेटिन भाषा के 'मोटम' या 'Motum' से हुई है, जिसका अर्थ है - 'To move' (गति करना) 'Movier' अर्थात, जो कारक हमारे जीवन में गति प्रदान करता है, उसका नाम अभिप्रेरणा है। इसका शाब्दिक अर्थ है - "आन्तरिक उत्तेजना"

अभिप्रेरणा की परिभाषाएं :-

→ कार्टर गुड के अनुसार - "किसी कार्य या क्रिया को आरम्भ करने, जारी रखने तथा नियन्त्रित करने की प्रक्रिया अभिप्रेरणा है।" CTET-13, HTET पेज-16

→ वुडवर्थ के अनुसार - "अभिप्रेरणा वह तात्कालिक बल है जो व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है।"

→ ✓ लावेल के अनुसार - "अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक व आन्तरिक क्रिया है जो आवश्यकता से प्रारम्भ उत्पन्न होती है तथा उन क्रियाओं की ओर ले जाती है जो आवश्यकता को सन्तुष्ट करती है।"

→ ✓ मैकडुगल के अनुसार - "अभिप्रेरणा वह शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशा है जो किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है।"

→ क्रेच व क्रेचफील्ड के अनुसार - "अभिप्रेरणा हमारे क्यों का उत्तर देती है।"

अभिप्रेरणा
गिलफार्ड के अनुसार - "प्रेरक वो विशेष कार्य या दशा है जो

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

"अभिप्रेरणा को अधिगम का आधार कहा है।" सोरेन्सन Date 11-9-12

Expt. No. Guru Narendra 9413566680 Page No. 2

'अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्तम राजमार्ग है।' स्किनर

किसी कार्य को आरम्भ करने व उसे बनाये रखने के लिए उत्तरदायी होता है।"

→ क्रो एण्ड क्रो के अनुसार - "अभिप्रेरणा का संबंध सीखने में रुचि उत्पन्न करने से होता है।"

अभिप्रेरणा की विशेषताएं :-

→ अभिप्रेरणा व्यक्ति की आंतरिक अवस्था है जिसका शाब्दिक अर्थ है → आन्तरिक उत्तेजना।

→ अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। (भावात्मक)

→ अभिप्रेरणा आवश्यकता (Need) से प्रारम्भ होती है। (07-14)

→ अभिप्रेरणा लक्ष्य निर्देशित व्यवहार है।

→ अभिप्रेरणा एक ध्यान केन्द्रित व उत्तेजनायुक्त उत्साही प्रक्रिया है।
उल्लासमय शब्द

→ अभिप्रेरणा की गति प्रत्येक व्यक्ति में अलग - अलग होती है।

→ अभिप्रेरणा एक चयनात्मक प्रक्रिया है। इन्हीं चीजों का चयन करते हैं जो लक्ष्य तक लेकर जाती है, मेरे लिए मेरा विजन सर्वोपरि है।

→ अभिप्रेरणा में निरन्तरता पायी जाती है।

→ अभिप्रेरणा साध्य न होकर एक साधन है।
वाह!
अभिप्रेरणा एक सक्रिय व निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है
अर्थात परिस्थितियां कैसी भी हो रुकना नहीं है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ अभिप्रेरणा एक क्रमिक प्रक्रिया है।

अभिप्रेरणा के प्रकार :- Types of motivation -
दो प्रकार की होती है-

1. आंतरिक अभिप्रेरणा →
अन्य नाम → सकारात्मक। जन्मजात। प्राकृतिक अभिप्रेरणा →
जब किसी क्रिया या कार्य को स्वयं की इच्छा से करते हैं तथा जिसको करने से सुख व संतोष मिलता है।
जैसे - भूख, प्यास, नींद, काम, मलमूत्र त्याग, प्रेम, आत्म-सम्मान, सफलता की इच्छा, आराम, मातृत्व - प्रेम, श्रद्धा, खेलना,
Exp. ~~एकलव्य Reet के लिए कड़ी मेहनत करता है~~
अभाव - Ideal Teacher को देखकर मन प्रफुल्लित होना

नोट :- वुडवर्थ ने मूल प्रवृत्तियों को अनसिखी अभिप्रेरणा कहा।

2. बाह्य / नकारात्मक अभिप्रेरणा :-
जब किसी क्रिया या कार्य को दुसरो के दबाव में आकर करते हैं जैसे - पुरस्कार, दण्ड, प्रशंसा, प्रतिस्पर्धा, लक्ष्य या उद्देश्य, परिणाम, शिक्षण सहायक सामग्री

अभिप्रेरणा के तत्व →
जॉन पी डिसैको के अनुसार -
1. उत्तेजना 2. आकांक्षा 3. प्रोत्साहन 4. दण्ड

A. आवश्यकता (Need) :→ शरीर में किसी चीज की कमी या अति आवश्यकता कहलाती है। यह दो प्रकार की होती है -

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

आत्मसिद्धि (स्वयमार्थीकरण) → जिसके लिए भगवान ने भेजा है आप उस लक्ष्य को प्राप्त कर ले

Date .....

Expt. No. Guru Narendra 9413566680 Page No. 4.

I शारीरिक आवश्यकता →
मूलभूत भोजन, पानी, काम (सबसे कम जरूरी आवश्यकता) नींद, मलमूत्र-त्याग।

II सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकता :→
प्रेम, संबंध, सुरक्षा, Relationship उपलब्धि, आत्म-सम्मान, जिज्ञासा।

MTET 14 आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त :- माँग सिद्धान्त अन्य नाम अब्राहम मैस्लो ने 1954 में दिया। संशोधन 1959 में
पुस्तक - अभिप्रेरणा व व्यक्तित्व
आवश्यकताओं का विशेष अध्ययन मैसलो ने किया है।

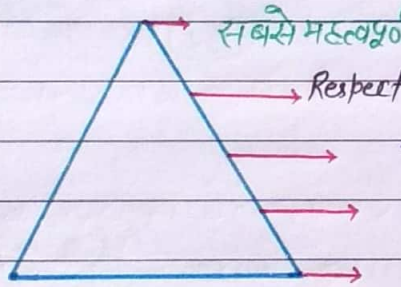

सबसे महत्वपूर्ण 1. आत्मसिद्धि की आवश्यकता
Respect 2. सम्मान पाने व देने की आवश्यकता
3. प्रेम व स्नेह की आवश्यकता
4. सुरक्षा की आवश्यकता (जीवन बीमा) बैंक में पैसा जमा कराना, शेयर मार्केट निवेश
5. शारीरिक आवश्यकता भोजन, पानी, काम

नोट → 1959 में मैसलो ने तीन और आवश्यकताओं को जोड़ दिया →
(i) उत्तेजना (ii) एकीकरण / समग्र आवश्यकता (iii) आध्यात्मक (B-मोटिवेशन आवश्यकता)

B. चालक / प्रणोद / अन्तर्नोद (Driver) :-
शेफर के अनुसार →
"चालक शरीर की आन्तरिक क्रिया दशा है जो हमें क्रियाशील बनाता है।" या विशेष प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। जैसे - भूख व प्यास

उद्दीपक → प्रेरित करता है।
उद्दीपन → क्रिया को सन्तुष्ट करता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

c. उद्दीपन या प्रोत्साहन :-
(Incentive)
वह तत्व जो चालक की सन्तुष्टि करता है। दो प्रकार का होता है-

1. सकारात्मक 2. नकारात्मक

अभिप्रेरणा चक्र :-
(Motivation circle) -

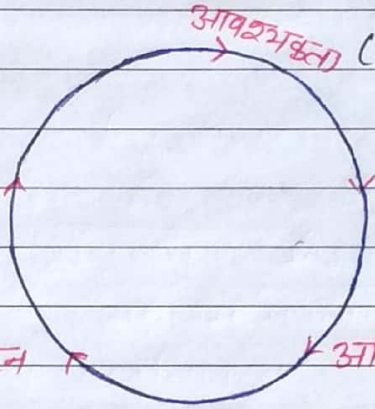

(CT-14)

नोट :- उसी ने अभिप्रेरणा चक्र में संज्ञान को भी शामिल किया है।

प्रेरक (Motive) :→ यह व्यापक शब्द है जो वुडवर्थ द्वारा दिया गया है। इसमें आवश्यकता, चालक व उद्दीपन तीनो तत्व शामिल हैं।

$M = N + D + I$

प्रेरक = आवश्यकता + चालक + उद्दीपन

वुडवर्थ के अनुसार - "प्रेरक व्यक्ति की वह दशा है जो निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए निश्चित व्यवहार को स्पष्ट करता है।"

✓ गेटस व अन्य के अनुसार - प्रेरक प्राणी के भीतर की

Dg 2011

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

वे शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशाएं हैं जो निश्चित विधियों के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं

मैस्लो के अनुसार प्रेरको का वर्गीकरण :-

दो प्रकार -

I जन्मजात / प्राथमिक अभिप्रेरक -

1. भूख → कैनन व वाशबर्न ने अध्ययन किया। मासपेशियों में संकुचन होने व शरीर में चीनी की मात्रा कम होने से।

2. प्यास →

उबल डिप्लेशन (इपीस्टिन) के अनुसार - शरीर में पानी की मात्रा में कमी होने व रक्त की मात्रा में कमी होने पर प्यास लगती हैं।

3. काम →

फ्रायड ने विशेष अध्ययन किया हैं।

4. नींद → विलट मैंन

[तीव्र आँख गतिक
[अतीव्र आँख गतिक - श्रेष्ठ

5. मलमुत्र त्याग -

फ्रायड ने इस प्रेरक को व्यक्तित्व के आचरण निर्माण में महत्वपूर्ण माना हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

2. अर्जित प्रेरक :-

(3) CTET-12 U-2 उपलब्धि प्रेरक / उपलब्धि अभिप्रेरणा →
प्रतिपादक - मैकक्लिलैण्ड एटिकन्सन 1961
चुनौतिपुर्ण व कठिन परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करने की प्रबल इच्छा उपलब्धि प्रेरक कहलाती हैं।

उपलब्धि प्रेरक से प्रेरित बालक की विशेषताएं →

→ कार्य में निरन्तरता पायी जाती हैं।

→ आकांक्षा का स्तर ऊंचा होता हैं।

→ जोखिम उठाने की योग्यता।

→ प्रतिस्पर्धा की भावना।

→ तुलनात्मक रूप से उन कार्यो को करना पसन्द करते हैं, जिनमें सन्तुष्टि मिलती हैं।

→ सफलता के प्रति हमेशा चिंतित रहते हैं।

→ श्रेष्ठता की भावना।

✡ उपलब्धि प्रेरक के प्रभाव :-

1. परिवार का प्रभाव :- माता-पिता के स्वतंत्र व्यवहार व प्रशिक्षण का उपलब्धि प्रेरक पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

2. विद्यालय का प्रभाव
3. समाज का प्रभाव

☆ उपलब्धि प्रेरक के विकास में शिक्षक की भूमिका—

→ अभिप्रेरित करना।
→ महान लोगो के उदहारण पेश करना।
→ उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य सौपना।
→ आत्म-अनुशासन व आत्म-मुल्यांकन की योग्यता का विकास
→ स्वतंत्र वातावरण उपलब्ध करवाना।

नोट- उपलब्धि परीक्षण का मापन TAT व CIE परीक्षण द्वारा मापा जाता हैं।

(ब) संबंध प्रेरक- कारपेन्टर व स्कैक्टर ने अध्ययन किया।

(स) अनुमोदक प्रेरक- क्राउनी व मारलो ने अध्ययन किया।

(द) शक्ति/सत्ता प्रेरक- बुस्सी व एसर निष्कार ने अध्ययन किया

(य) आक्रमणशीलता- डोलार्ड व मिलर ने अध्ययन किया।

नोट- मैस्लो के अनुसार रुचि, आदत, आकांक्षा स्तर व मदव्यसन अर्जित प्रेरक हैं।

☆ थॉमसन के अनुसार प्रेरको का वर्गीकरण-

दो प्रकार

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No Guru Narendra 9413566680 Page No. 9

I स्वाभाविक / प्राकृतिक → प्रेम, सुझाव, अनुकरण, सहानुभूति, खेल, स्नेह,

II. कृत्रिम प्रेरक → प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड, सहयोग, प्रतिस्पर्धा,

✡ गैरिट के अनुसार प्रेरको का वर्गीकरण → तीन प्रकार –

I. जैविक प्रेरक → भूख, प्यास, नींद, काम, मलमूत्र-त्याग

II. मनोवैज्ञानिक प्रेरक → सुख, दुख, प्रेम, भय, क्रोध, दया,

III. सामाजिक प्रेरक → आत्मप्रतिष्ठा, सम्मान, आत्म-गौरव, सामुहिकता, संग्रह की प्रवृति, रचनात्मक और जिज्ञासा

✡ अभिप्रेरणा के सिद्धान्त :→

1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त – प्रतिपादक – सिग्मउ फ्रायउ
इसके अनुसार अचेतन मन अभिप्रेरणा का सबसे बड़ा कारक है।

2. मूल प्रवृति का सिद्धान्त – प्रतिपादक – मैकडुगल
इसके अनुसार 14 मूल प्रवृतियां व्यवहार को प्रेरित करती हैं।

3. उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धान्त – प्रतिपादक – थॉर्नडाइक (व्यवहारवादी)

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

4. व्यवहार के अधिगम का सिद्धान्त-
अन्य नाम - चालक न्यूनता का सिद्धान्त
प्रतिपादक - सी. एल. हल
अभिप्रेरित व्यवहार आवश्यकताओं की सन्तुष्ठि पर निर्भर करता है।

5. आत्मसिद्धि का सिद्धान्त / स्व यथार्थीकरण का सिद्धान्त-
प्रतिपादक - मैस्लो (आत्म अनुभूति पर बल)
आन्तरिक योग्यताएं व्यवहार को प्रेरित करती हैं।

6. अधिगम क्षेत्रिय सिद्धान्त -
प्रतिपादक - कुर्त लेविन
व्यक्ति का व्यवहार उन घटक द्वारा प्रेरित होता है जो व्यक्ति व वातावरण के मध्य कार्य करते हैं।

7. प्रोत्साहन का सिद्धान्त -
प्रतिपादक - कोफमैन, वोल्फ

8. अभिप्रेरणा का द्वि-घटक सिद्धान्त - फैडरिक हजबर्ग

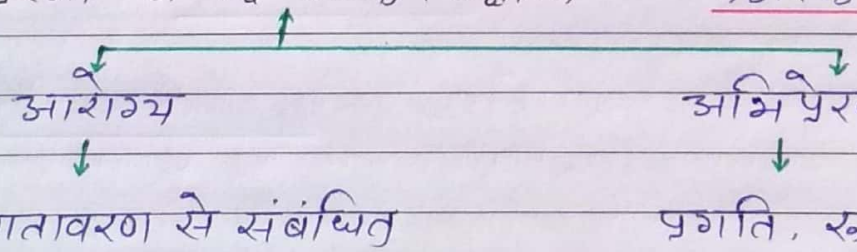

9. अभिप्रेरणा का X-Y सिद्धान्त - मैकग्रेगर

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

X → नकारात्मक व्यक्ति व कार्यों की ओर संकेत करता है।
Y → सकारात्मक कार्यों से।

शारीरिक कारक व्यवहार को प्रभावित करता है।

∨ अभिप्रेरणा संघर्ष के प्रकार –

कुर्त लेविन ने अभिप्रेरणा संघर्ष के चार प्रकार बताए हैं –

1. उपागम-उपागम / पहुंच-पहुंच / ग्राह्य-ग्राह्य संघर्ष → दो सकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष।

2. परिहार-परिहार / त्याग-त्याग / वर्जन-वर्जन संघर्ष → दो नकारात्मक या अवांछित लक्ष्यों में होने वाला परिवर्तन / संघर्ष

3. उपागम-परिहार संघर्ष → एक सकारात्मक व एक नकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष।

4. बहु-उपागम-परिहार-संघर्ष → एक से अधिक सकारात्मक व नकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका →

मैल्टन के अनुसार- "
→ अभिप्रेरणा अधिगम की अनिवार्य शर्त है।"

→ व्यवहार में परिवर्तन करने में उपयोगी।

→ व्यवहार में ऊर्जा का संचार।

→ ध्यान केन्द्रित करने वाली।

→ रुचि का विकास करने वाली।

→ आत्म - अनुशासन स्थापित करना।

→ चरित्र-निर्माण में।

→ अधिगम की गति तेज करने में।

→ क्रमिक रूप से आगे बढ़ाने में उपयोगी।

अभिप्रेरित करने की विधियाँ →

→ रुचि उत्पन्न करना।
→ सफलता मोटिवेट करना।
→ प्रतिस्पर्धा।
→ सामुहिक कार्य
→ नवीनता
→ आवश्यकता व परिणाम का ज्ञान।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग ।
→ प्रशंसा, पुरस्कार व दण्ड का प्रयोग ।
→ शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग ।

Scanned with CamScanner

Que. निम्न में से कौनसा कथन अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया के संदर्भ में उपयुक्त नहीं है? (2011 L-1) RTET

(A) यह व्यक्ति को लक्ष्य की ओर ले जाता है।
(B) यह व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है
(C) यह मनोवैज्ञानिक आकांक्षा को प्राप्त करने में सहायता करता है
(D) यह व्यक्ति को अप्रिय स्थिति से दूर करता है
अभिप्रेरणा सकारात्मक व नकारात्मक दोनों में से किसी भी प्रकार की हो सकती है

Q. अभिप्रेरणा वर्णित होती है - (16, L-2) REET
(A) ज्ञानात्मक जागृति द्वारा (B) भावात्मक जागृति द्वारा
(C) दोनों (A) और (B) (D) इनमें से कोई नहीं
Ans. अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका संबंध संवेग व भावनाओं से होता है।

Q. 'अभिप्रेरणा की व्याख्या जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के आधार पर की जा सकती है' किसने कहा था? (BT-2011)
(A) मैक्डुगल ने (B) कर्ट लेविन (C) फ्रायड ने (D) स्किनर ने

Q. निम्न में से कौनसा उदाहरण 'अभिप्रेरणा' का परिणाम नहीं है?
(A) कृष्णा ने नृत्य का समय एक घंटे से बढ़ाकर दो घंटे कर दिया है (B) जॉन स्टुअर्ट मिल ने 12 वर्ष की उम्र में दर्शन का अध्ययन आरम्भ कर दिया था (C) जगन ने श्वास लेने की प्रक्रिया में रुचि दिखानी प्रारंभ कर दी है (D) राम ने तेजी से आधुनिक एवं प्राचीन ऐतिहासिक प्रवृत्तियों में सहसंबंध स्थापित करने में प्रगति की है। (RTET-12, L-1)

Q. सशक्त अभिप्रेरणा सीखने का प्रभावशाली घटक है - Reet16 L-2
(A) इससे बालक स्वस्थ रहता है (B) ध्यान करता है (C) शीघ्र सीखता है (D) प्रसन्न रहता है

Scanned with CamScanner

(UT-14)
Q. अभिप्रेरणा के लिए अक्सर ~~—~~ शब्द का भी प्रयोग किया जाता है (A) संवेग (B) आवश्यकता (C) भावना (D) प्रत्यक्षीकरण

लावेल का विचार था कि अभिप्रेरणा किसी आवश्यकता की उत्पति में उत्पन्न होती है यह एक ऐसी क्रिया की ओर गतिशील होती है जो किसी आवश्यकता को सन्तुष्ट करेगी यही कारण है कि अभिप्रेरणा को 'आवश्यकता' भी कहा जाता है।

Q. निम्न में से कौनसा सर्वोत्तम उदाहरण है कि प्रेरणा क्या है? (17, L-1)

(A) छात्र 'अ' आगामी स्कूल वर्ष के बारे में भावुक है और अच्छा करना चाहता है (B) छात्र 'ब' सक्रिय है अपने गणित वर्ग में अच्छा करने के लिए उच्च लक्ष्य निर्धारित करता है, काफी प्रयास के साथ बना रहता है और कक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करता है। (C) छात्र 'स' वह क्या पुरा करना चाहता है पर अपना ध्यान निर्देशित करने में अच्छा है (D) छात्र 'द' कड़ी मेहनत करती है, उसके शैक्षिक कार्य के बारे में सकारात्मक भावनाओं का अनुभव करती है।

(B) अभिप्रेरणा एक नियोजित, क्रमिक व सक्रिय प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner

आतरिक अभिप्रेरणा लक्ष्य की प्राप्ति तक जारी रहती है।

Que. यदि बाह्य प्रेरणा एक अंत की भुक्ति है, तो आतरिक प्रेरणा है- (2017 L-I)

(A) एक शुरुआत (B) अपने आप में एक अंत

(C) एक शुरुआत तथा अंत (D) उपरोक्त कोई भी नही

Que. बाह्य अभिप्रेरणा में समावेशित किया जायेगा – (2011 L-II)

I प्रशंसा एवं दोषारोपण II प्रतिद्वन्द्विता III पुरस्कार एवं दण्ड

IV परिणाम का ज्ञान इनमें से

(A) I और IV (B) I, II और III (C) केवल II (D) इनमें से सभी

Que. एक अध्यापक को निम्न में से किस कथन से सहमत होना चाहिए – (Reet 2012 L-2)

(A) आतंरिक अभिप्रेरणा तब होती है जब अधिगमकर्ता बाह्य संतोषजनक परिणाम का अनुभव करने के लिए कार्य करते है (B) बाह्य अभिप्रेरणा तब होती है जब अधिगमकर्ता बाह्य पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कार्य करते है (C) बाह्य पुरस्कार से स्थायी व्यवहार परिवर्तन होता है (D) बाह्य पुरस्कार आतंरिक अभिप्रेरणा प्रदान करते है।

Scanned with CamScanner

Q. मानव आवश्यकताओं का पदानुक्रम किसने दिया? (HT-14)

(A) थॉर्नडाइक (B) मैसलो (C) गिलफोर्ड (D) कॉफ्का

Q. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही नहीं है? (2011 L-II) Reet

(A) आवश्यकता वंचना की शारीरिक अवस्था नहीं है।

(B) अन्तर्नोद आवश्यकता का मनोवैज्ञानिक परिणाम है।

(C) आवश्यकता एवं अन्तर्नोद समान नहीं है, बल्कि समानान्तर है

(D) मूल प्रवृतियाँ आन्तरिक जैविक बल है।

आवश्यकता वंचना की शारीरिक अवस्था नहीं है क्यों कि आवश्यकता का संबंध भावात्मक स्तर से अधिक होता है।

Scanned with CamScanner

Q. परिवेश की वस्तु जिसे प्राणी प्राप्त करने का प्रयास करता है कही जाती है:- (2015 L-II)

(A) प्रबलन (B) प्रेरक (C) उद्दीपक (D) प्रलोभन

प्रेरक किसी भी कार्य को करने के लिए प्रेरित करता है इसमें बच्चे के घर व परिवेश, उसके पारिवारिक सदस्यो और स्कूल के संबंध इत्यादि की प्रमुख भुमिका होती है।

Q. अभिप्रेरणा चक्र का सही क्रम:- (CT-14) L-2

आवश्यकता, प्रबल प्रेरणा, उत्तेजना, लक्ष्य-उन्मुखी व्यवहार, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी

Scanned with CamScanner

Que. निम्न में से कौनसा उदाहरण अर्जित प्रेरक का है? (2016, L-2)

(A) भूख — जन्मजात (B) पुरस्कार — कृत्रिम (C) रुचि — अर्जित (D) विश्राम — जन्मजात

Q. उपलब्धि अभिप्रेरक के संबंध में निम्नलिखित में से कौनसा कथन नही है? (RTET-II, L-1)

(A) उपलब्धि अभिप्रेरक जीवित रहने के लिए आवश्यक है (B) यदि व्यक्तिगत क्षमताओं की सन्तुष्टि महत्वपूर्ण है तो उपलब्धि अभिप्रेरक को विकास प्रेरक कहा जा सकता है (C) यदि व्यक्तियों के मध्य प्रतियोगिता पर बल है तो उपलब्धि अभिप्रेरक को सामाजिक अभिप्रेरक कहा जा सकता है। (D) उपर्युक्त सभी

Q. प्रेरणा का वही संबंध उपलब्धि से है जो अधिगम का — से है (A) तर्क (B) चिंतन (C) बोध (D) विवेक OTET-13

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date 27/11/20

Expt. No. ..... **चिन्तन (Thinking)** Page No. 1

→ चिन्तन मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में होती है

→ किसी भी क्रिया कार्य को करने से पहले एक विचार बनाना, एक सोच बनाना और सोचने के बाद उस कार्य को अंजाम देना, चिन्तन कहलाता है।

→ चिन्तनशील सोच का सर्वप्रथम विचार 1910 में जॉन ड्यूवी ने दिया (UPTET)

चिन्तन मानसिक क्रिया का वह ज्ञानात्मक पक्ष है जिसमें व्यक्ति आंतरिक रूप से प्रतिमा, चिह्नों, विचारों आदि के रूप में वस्तुओं या घटनाओं का मानसिक चित्रण करते हुए समस्या का समाधान ढूंढने का प्रयास करता है।

चिन्तन की परिभाषाएँ →

1. रॉस के अनुसार- "चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है।" (Reet 2016, L-I)
2. कॉगन व हैमेन के अनुसार- "प्रतिमाओं, प्रतिकों, सम्प्रत्यों, नियमों के मानसिक जोड़-तोड़ को चिन्तन कहा जाता है"
3. ब्रूनो के अनुसार- "चिन्तन एक मानसिक क्रिया है जिसमें पूर्व अनुभव, प्रतिमा, प्रतीक, सम्प्रत्यों, विचारों का प्रतिनिधित्व होता है ये हमारे भविष्य और वास्तविकताओं की ओर संकेत करते है।"
4. वेलेन्टाइन- "चिन्तन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाता है, जिसमें श्रृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर अविराम गति से प्रवाहित होते हैं।"

written-

Guru Narendra 9413566680

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

चिन्तन की विशेषताएँ:-

→ चिन्तन एक मानसिक क्रिया है इसका संबंध व्यवहार के ज्ञानात्मक (संज्ञानात्मक) पक्ष से है। (CTET-12, HTET-14)

→ चिन्तन में संवेगों का कोई स्थान नही है अर्थात् चिन्तन का भावात्मक पक्ष से कोई संबंध नही होता।

→ चिन्तन का प्रारम्भ समस्या से होता है। (Reet 2016, Ugr. 2017) तथा चलता है समाधान तक अर्थात् चिन्तन समस्या-समाधान की प्रक्रिया है।

विटेकर ने "चिन्तन को समस्या समाधान व्यवहार कहा है।"

→ चिन्तन एक अभिप्रेरित व्यवहार है।

→ 'चिन्तन एक लक्ष्य निर्देशित व्यवहार है।' विटेकर

→ चिन्तन एक मध्यस्थ प्रक्रिया है या संबंध परक प्रक्रिया भी कह सकते हैं अर्थात् उद्दीपक व अनुक्रिया में संबंध स्थापित करता है।

→ चिन्तन एक अव्यक्त प्रक्रिया है अर्थात् चिन्तन बाह्य रूप से परिलक्षित नही होता है।

→ चिन्तन एक आन्तरिक प्रक्रिया है।

→ चिन्तन में विश्लेषण भी शामिल होता है, हम सूचनाओं को, विचारो को तोड़ते है उसके बाद जोड़ते है अर्थात् चिन्तन में विश्लेषण व संश्लेषण दोनों ही चीजे शामिल है

→ चिन्तन में पूर्व अनुभव व स्मृति (मेमोरी) शामिल होती है

→ चिन्तन में प्रतिमा, संकेत, सम्प्रत्य (concept), आरेख, भाषा, प्रतिज्ञप्ति (Proposition) आदि शामिल है इसके अलावा चिन्तन में प्रयास व त्रुटि को भी शामिल किया जाता है।

नोट→ चिन्तन की मूल आधारशिला भाषा को माना गया है।

→ चिन्तन के समय बाह्य गत्यात्मक क्रियाएं बंद हो जाती है।

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

✡ चिन्तन के दो सिद्धान्त होते हैं-

1. केन्द्रीय सिद्धान्त 2. परिधीय सिद्धान्त/गति का सिद्धान्त

1. केन्द्रीय सिद्धान्त :-

इसके अनुसार चिन्तन हमारे मस्तिष्क का परिणाम है अर्थात केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की वजह से हमारे चिन्तन की प्रक्रिया शुरू होती है यानि चिन्तन की प्रक्रिया का आधार हमारा मस्तिष्क है।

2. परिधीय सिद्धान्त :-

यह सिद्धान्त वाटसन ने दिया था। वाटसन यह कहता है कि चिन्तन मस्तिष्क की वजह से नहीं होता चिन्तन हमारे मांसपेशियों के जो गामक क्रियाएं है। पेशीय क्रियाएं है, उनकी वजह से चिन्तन शुरू होता है। (आंखों व हाथों की गति, शरीर के अंगों की गति)

✡ चिन्तन के तत्व :- 04

(A) मानसिक प्रतिमा (B) तर्कणा (C) निर्णयन (D) समस्या-समाधान

✡ चिन्तन के प्रकार :-

जिलवार्ड व रूक ने 1977 में चिन्तन को दो प्रकार बताये -

1. स्वली चिन्तन -

इसका संबंध कल्पना व स्वप्न से होता है। जैसे - मैं बैठा-बैठा सोचता रहता हूँ कि मैं एग्जाम टॉप करूंगा, अखबार वाले मेरा इन्टरव्यू लेंगे (मुंगेरी लाल के हसीन सपने)। यह कल्पना प्रधान, स्वप्न प्रधान, दिवास्वप्न से युक्त होता है, इसमें वास्तविकता का कोई स्थान नहीं होता है।

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

2. **यथार्थवादी चिन्तन :-**

इसका संबंध समस्या समाधान से होता है। यह वास्तविक और व्यवहारिक चिन्तन हैं। यथार्थवादी चिन्तन तीन प्रकार का होता हैं-

I. **अभिसारी / निगमनात्मक चिन्तन -** दिये गये तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालना या एक ही दिशा में सोचना जैसे- 5 x 5 = ? या बालक की वास्तविक आयु 10 वर्ष व मानसिक आयु 12 वर्ष है तो बुद्धि लब्धि = ?

II. **अपसारी / आगमनात्मक / सृजनात्मक - चिन्तन :-** दिये गये तथ्यों में स्वयं की ओर से नवीन तथ्य जोड़कर निष्कर्ष निकालना या हर दिशा में सोचना। जैसे- बुद्धि लब्धि के आकिंक मान के अलावा बालक की श्रेणी भी बताना तथा बालक के व्यवहार के बारे में भी बताना।

III. **आलोचनात्मक चिन्तन :-** गुण व दोष के आधार पर विवेचना करना।

★ चिन्तन के अन्य प्रकार-

1. **प्रत्यक्ष / मूर्त चिन्तन :-** मेरे सामने जो चीज है, मैं उसके आधार पर सोच रहा हूँ यह मूर्त / प्रत्यक्ष चिन्तन हैं। इसमें भाषा व नाम का प्रयोग नही होता, यह चिन्तन छोटे बच्चों में पाया जाता हैं।

2. **अमूर्त / प्रत्यात्मक :-** जो वस्तु प्रत्यक्ष में नही है उसके बारे में सोचना, जैसे- ईश्वर के बारे में सोचना।

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

अथवा संकेतों को देखकर वस्तु के बारे में अनुमान लगा लेना जैसे (+) के संकेत को देखकर उसका संबंध हॉस्पिटल या एम्बूलेंस से लगा लेना।

3. **काल्पनिक चिन्तन**:- इसका संबंध पूर्व अनुभव आधारित भविष्य से होता है।

4. **तार्किक चिन्तन**:- चिन्तन का श्रेष्ठतम प्रकार, जॉन ड्यूवी ने इसे विचारात्मक चिन्तन कहा है

✡ चिन्तन के सोपान:-

1. समस्या का आकलन।
2. समस्या संबंधी तथ्यों का संग्रह।
3. निष्कर्ष निकालना।
4. निष्कर्ष का परीक्षण करना।

✡ बालकों में चिन्तन के विकास के उपाय -

→ स्वतंत्र वातावरण उपलब्ध करवाना।
→ बच्चों के सम्मुख समस्या प्रस्तुत करना।
→ विचारावेश विधि का प्रयोग।
→ वाद-विवाद का प्रयोग।
→ समूह चर्चा करें।
→ भाषा व सम्प्रत्यय विकास पर बल दे।
→ आत्ममूल्यांकन की अभिव्यक्ति जागृत करना।
→ उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करवाना।
→ जिज्ञासा को जागृत करना।
→ समस्या समाधान विधि का प्रयोग।
→ खोजपूर्ण प्रश्न कौशल का विकास
→ आत्म अनुशासन (बच्चों को डाँटना, पीटना नहीं है)

Guru Narendra 9413566680

Teacher's Signature : _____

Scanned with CamScanner

REET/RTET में पूछे गए प्रश्नों का संग्रह –

[R-L-I-2015]

प्रश्न 1. चिंतन प्रारम्भ होने के लिए क्या आवश्यक है? [11 Jan 2014]
(a) पूर्वानुभव (b) भाषा (c) तर्क (d) समस्या [ ]

प्रश्न 2. सृजनशील बालकों का विशेष लक्षण है? [11 Jan - 2011]
उत्तर – प्रबल जिज्ञासा

प्रश्न 3. प्रतिभाशाली विद्यार्थी..... हैं। [CTET, 2013 I-L]
उत्तर – अभिसारी चिंतक

प्रश्न 4. चिन्तन अनिवार्य रूप से है एक —— [CTET, 2012 I-L]
उत्तर – संज्ञानात्मक गतिविधि (HTET-14)

प्रश्न 5. सृजनात्मक मुख्य रूप से ..... से संबंधित हैं [CTET, 2012 I-L]
उत्तर – अपसारी (बहुविध) चिंतन

प्रश्न 6. सृजनात्मक शिक्षार्थी वह हैं जो —— [CTET, 2011 II-L]
पार्श्व (लेट्रल) चिंतन और समस्या-समाधान में अच्छा हैं।

प्रश्न 7. बालक के चिन्तन विकास में सहायक है?
(a) भाषा (b) उत्तरदायित्व (c) ज्ञान (d) उपर्युक्त सभी [d]

प्रश्न 8. चिन्तन मानसिक क्रिया का ..... पहलू हैं। [Reet-L-I 2015]
(a) ज्ञानात्मक (b) भावात्मक (c) क्रियात्मक (d) उपर्युक्त कोई नहीं [ ]

प्रश्न 9 चिन्तन क्या है? (2015 L-II)
(A) प्रतीकों का प्रयोग (B) भाषा का प्रयोग (C) प्रात्यक्षिक प्रक्रिया (D) सम्प्रत्यय अधिगम

Que निम्न में से कौनसा चिन्तन की प्रक्रिया में सबसे कम महत्वपूर्ण है?
(A) चित्र (B) प्रतीक एवं चिह्न (C) मांसपेशीय क्रियायें (D) भाषा (2012 L-I)

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. _____

Q. एक अध्यापक कक्षा में कुछ गतिविधि कर रहा है, जैसे (अ) न केवल यह पूछ कर कि क्या हुआ बल्कि यह भी पूछा कि 'कैसे और क्यों', (ब) उन्हें एक प्रश्न के विभिन्न उत्तरों तथा परख की तुलना करने में मदद करना जो वास्तव में सबसे अच्छा जवाब है, इन गतिविधियों से वह बढावा देने की कोशिश कर रहा है - (Reet 2018 L-1)

(A) समानता (Analogy) (B) आलोचनात्मक सोच (critical thinking)
(C) एकीकृत सोच (Integrated thinking) (D) अवधारणा मानचित्रण concept mapping

Q. विवेचनात्मक चिंतन व्यक्ति में वे योग्यताएँ और कौशल विकसित करने में सहायक है, जो है: (HTet-16 PgT)

(A) मूर्त अनुभव प्रदान करना (B) उचित व्याख्या, विश्लेषण, मूल्यांकन और निष्कर्ष निकालना (C) कुछ उत्पन्न करना और निर्माण करना (D) प्रतिक्रिया की विधियों का चिंतन करना

Q. चिंतनशील सोच की चर्चा इनमें से किसने की है, (UP-17, L-2)

(A) डयूवी (B) रॉस (C) वुडवर्थ (D) ड्रेवर

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Expt. No. ..... Date .....

"बाल विकास"

Page No. 63

जेम्स ड्रेवर → "बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से लेकर परिपक्वावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।"

क्रो एंड क्रो → "बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन जिसमें गर्भकाल से लेकर किशोरावस्था के प्रारम्भ तक का अध्ययन किया जाता है।"

→ बाल विकास का सर्वप्रथम अध्ययन - जॉन लॉक व थॉमस होब्स ने किया।

→ बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन - पैस्टालॉजी (1774)

→ रूसो ने अपनी पुस्तक 'ईमाइल' (रूसो का काल्पनिक शिष्य) में बच्चों की शिक्षा का सर्वप्रथम अध्ययन किया।

→ बाल अध्ययन आन्दोलन की शुरुआत - अमेरिका (न्यूयार्क 1893 ई.) स्टेनले हॉल ने की है।
दो समितियों की स्थापना की (स्टेनले हॉल)
(1.) बाल अध्ययन समिति
(2.) बाल कल्याण समिति

✱ **नोट** - बाल विकास का प्रश्नावली विधि द्वारा अध्ययन - स्टेनले हॉल ने किया है।
पत्रिका - 'पेडोलोजिकल सेमेनरी'

→ प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना - अमेरिका (1888)

Teacher's Signature : .....

Written - Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 44

→ प्रथम बाल निर्देशन केन्द्र की स्थापना – विलिंग्म हिल (1909)

N→ भारत में गिज भाई बधेका ने मॉन्टेसरी से प्रभावित होकर 1920 में बाल मंदिर संस्था (गुजरात) में स्थापित की।

→ भारत में बाल अध्ययन पर विशेष आन्दोलन चलाया → ताराबाई मोडेक (1930)

बाल विकास का क्षेत्र / वृद्धि व विकास के आयाम →

1. शारीरिक विकास – ऊंचाई, भार, मांसपेशियां, हड्डियां
2. मानसिक विकास – चिन्तन, तर्क, कल्पना, स्मृति, जिज्ञासा
3. सामाजिक विकास – समानिधम, परम्परा, मूल्यों सहयोग आदि का विकास
4. संवेगात्मक विकास – प्रेम, भय, क्रोध
5. नैतिक विकास – नैतिक मूल्यों का विकास
6. भाषात्मक विकास –
7. गामक विकास – चलना, दौड़ना, नृत्य करना आदि गामक क्रिया
8. सौन्दर्यात्मक विकास – सौन्दर्यात्मक भाव व कला का विकास

☆ बाल विकास से संबंधित महत्वपूर्ण मान्यतायें →

1. जैविक परिपक्वता की मान्यता →

प्रमुख प्रतिपादक – स्टेनले हॉल व गैसेल

इसके अनुसार विकास आनुवंशिकता का परिणाम होता है।

2. व्यवहारवादी मान्यता →

प्रमुख प्रतिपादक – जे. बी. वाटसन, बी. एफ. स्किनर

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

विकास वातावरण तथा इन्द्रिय अनुभूति का परिणाम है।

3. **संज्ञानवादी मान्यता →** प्रमुख प्रतिपादक- जीन पीआजे।
विकास मानसिक क्रियाओं का परिणाम है।

4. **सामाजिक व सांस्कृतिक मान्यता →** लेव वाइगोत्स्की
विकास सामाजिक व सांस्कृतिक अन्त: क्रिया का परिणाम है।

अभिवृद्धि → अभिवृद्धि का शाब्दिक अर्थ है- 'बढना'
शरीर तथा उसके अवयवों में होने वाला मात्रात्मक परिवर्तन अभिवृद्धि कहलाती है।

विकास → विकास का शाब्दिक अर्थ है- 'परिवर्तन'
शरीर तथा मन में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन विकास में शामिल हैं।

हरलॉक के अनुसार- "विकास व्यक्ति में नवीन योग्यता तथा विशेषताओं को व्यक्त करता है।"

हरलॉक के अनुसार- "विकास परिवर्तनों की वह श्रृखला है जो परिपक्वता व अनुभव के परिणामस्वरूप होती है।"

मुनरो के अनुसार- "परिवर्तनों की वह श्रृखंला जिसमें बालक भ्रुण अवस्था से प्रौढ अवस्था तक गुजरता है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

नोट-

विकास = अभिवृद्धि + परिपक्वता + क्षमताएं / योग्यताएं + वातावरण के साथ अन्तः क्रिया।

अभिवृद्धि व विकास में अन्तर →

Written By- Gurau
Narendra 9413566680

अभिवृद्धि	विकास
1. मात्रात्मक (माप सकते हैं)	मात्रात्मक + गुणात्मक
2. किशोरावस्था तक	जीवन पर्यन्त
3. अभिवृद्धि शब्द का प्रयोग केवल शारीरिक परिवर्तन के लिए किया जाता हैं।	सभी प्रकार के परिवर्तनों के लिए किया जाता हैं।
4. अभिवृद्धि एकीकृत नहीं होती	विकास एकीकृत होता हैं। (सभी को साथ लेकर होता हैं।)
5. अभिवृद्धि मापन का विषय है	विकास मूल्यांकन का विषय हैं
6. अभिवृद्धि का संबंध संरचना (ढांचा) से होता हैं।	विकास का संबंध संरचना + कार्य से होता हैं।

☆ बाल विकास के सिद्धान्त → Principal of child Development

1. **सतत / निरन्तर / अनवरत विकास का सिद्धान्त →** हरलॉक
   विकास निरन्तर चलता रहता है गर्भावस्था से मृत्यु तक)
2. **विकास की गति में भिन्नता का सिद्धान्त →**
   → 0 से 2 वर्ष में विकास सबसे तेज
   → बाल्यावस्था में सबसे मंद
   → किशोरावस्था में फिर तेज हो जाता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

3. **विकास की दिशा का सिद्धान्त →** मस्तकोधमुखी सित
सिर से पैर की तरफ ।

4. **केन्द्र से दुर का सिद्धान्त → (प्रोक्सीमोडिक्सल) →** Reet 2017 L-I (व्यापक से विशिष्ट क्रियाई प्रगति)
अन्य नाम → भीतर से बाहर का सिद्धान्त
→ निकट से दुर का सिद्धान्त
→ रीढ़ की हड्डी का सबसे पहले विकास बाद में अन्य हड्डियों का विकास ।

5. **सामान्य से विशिष्ट का सिद्धान्त →**
बच्चा शुरुआत में सभी अंगो का प्रयोग बाद में अंग विशेष का प्रयोग ।
शुरुआत में सभी औरतों को ममी बोलता है बाद में अपनी ममी को ही ममी बोलता है।

6. **एकीकरण का सिद्धान्त →**
पहले सम्पूर्ण अंग का प्रयोग, फिर अंग के भागों का प्रयोग, फिर अंग के भाग व सम्पूर्ण अंग का एकीकरण कर लेता है।

7. **वंशानुक्रम :- वातावरण की अन्तः क्रिया का सिद्धान्त–**

विकास = वंशानुक्रम × वातावरण
$D = H \times E$

8. **व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धान्त →**
विकास अद्वितीय होता है, विकास अनोखा होता है, विकास की प्रक्रिया व्यक्तिगत होती है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

9. **पूर्वानुमेय का सिद्धान्त** → विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है।

10. **वर्तुलाकार प्रगति का सिद्धान्त** → विकास पूर्व अनुभवों को जोड़ते हुए (संचित करते हुए) वृतुलाकार होता है ना की रेखीय।

11. **परस्पर संबंध का सिद्धान्त** → विकास के सभी पहलु आपस में जुड़े हुए होते हैं यदि एक पक्ष का विकास अच्छा होगा तो दुसरे पक्ष का भी विकास अपने आप होगा।

12. **भेदात्मक विकास का सिद्धान्त** → लड़को की तुलना में लड़किया जल्दी परिपक्व हो जाती हैं।

→ विकास एक एकीकृत व स्वीकृत रूप में होता है।

→ विकास सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है।

→ विकास के अपने खतरे होते हैं।

विकास को प्रभावित करने वाले कारक →

1. **वंशानुक्रम-**

बी. एन. झा. के अनुसार- "वंशानुक्रम हमारी जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण भोग है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 69

वुडवर्थ – "वंशानुक्रम के अन्तर्गत वे समस्त बातें आ जाती हैं जो जन्म के समय से नहीं अपितु जन्म के 9 माह पहले उपस्थित विशेषताएं आ जाती हैं।"

जेम्स ड्रेवर – माता-पिता की शारीरिक व मानसिक विशेषताओं का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होना वंशानुक्रम कहलाता है।

वंशानुक्रम की प्रक्रिया → मातृकोष + पितृकोष = संयुक्त उत्पादक कोष

23 + 23 = 46 (सामान्य)

45 – टर्नर सिण्ड्रोम → केवल लड़कियों में
बुद्धि लब्धि → 30-40
बांझ महिलाएं

47 – डाउन्स सिण्ड्रोम → मंगोलिज्म मंद बुद्धि बालक
बुद्धि लब्धि → 25-50

क्रोमोसोम्स की विसंगति :-
XXY – पुरुष अपराधी बन जाता है।
XXY – देखने में पुरुष जैसा लेकिन वह अप्रजाऊ होता है (क्लाईनफेल्टर्स सलक्षण)

आनुवांशिक की मूल इकाई या वाहक – जीन (जीन्स)
गुणसूत्र (क्रोमोसोम) (Reet 2017, L-II)

⇒ **वंशानुक्रम के नियम →**

1. **बीजकोष की निरन्तरता का नियम** –
बीजमैन (चूहे पर प्रयोग)
बीजकोष पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 70

2. **समानता का नियम** → सोरेन्सन
जैसे माता-पिता वैसे ही संतान

3. **विभिन्नता का नियम** → डार्विन व लैमार्क
माता-पिता के गुणों से कुछ भिन्न होगा। प्राकृतिक वर्णोचयम का सिद्धान्त भी डार्विन ने दिया- वातावरण में जीवन संघर्ष है यहां वही जीवित रह सकता है जो योग्य हैं अर्थात् योग्यतम जीवित रहता हैं।

4. **प्रत्यागमन का नियम** → मैण्डल
विपरीत गुणों का पाया जाना, जैसे-बाबर का पुत्र हुमायूं

5. **अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम** → लैमार्क
माता-पिता द्वारा अपने जीवन काल में विशिष्ट शारीरिक योग्यतायें आने वाली पीढ़ियों में स्थानांतरित हो जाती हैं।

6. **वर्ण संकर / वंश सूत्र / प्रभाव / वियोग का नियम** → मैण्डल
वर्ण संकर वस्तु हमेशा अपने मौलिक स्वरूप की ओर अग्रसर होती है, इसने उद्यान मटर का प्रयोग किया हैं.

7. **बायोमेट्री का सिद्धान्त** → फ्रांसिस गाल्टन

'वंशानुक्रम में पूर्वजों का प्रभाव क्रमिक रूप से घटते हुए रूप में पड़ता हैं।'

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

वंशानुक्रम का प्रभाव→

Written - Narendra Poonia 9413566680

1. शारीरिक संरचना पर प्रभाव – कार्ल पियरसन ने लम्बाई, रंग आदि का उदहारण दिया।
2. मानसिक विकास पर प्रभाव – मार्टिन कालिकाक ने अध्ययन किया तथा गाल्टन ने बल दिया।
3. व्यवसायिक योग्यता पर बल – कैटल ने अध्ययन किया।
4. सामाजिक स्थिति पर प्रभाव – गिलफोर्ड ने अध्ययन किया
5. चरित्र व महानता पर प्रभाव – डगडेल-ज्यूक परिवार का अध्ययन किया।
6. मूल शक्तियों पर प्रभाव – थार्नडाइक
7. प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव – क्लार्क

II वातावरण :→

→ जे. एस. रॉस – "वातावरण वह बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।" (Reet 2015, L-I)

→ जिस्बर्ट – "वातावरण वह वस्तु है जो किसी अन्य वस्तु को घेरे हुए है तथा सीधा उस पर अपना प्रभाव डालती है।"

→ वुडवर्थ – "वातावरण के अन्तर्गत वे समस्त तत्व आ जाते है जिन्होने बालक को जन्म से प्रभावित किया है।"

→ बोरिंग, लेंगफील्ड व अन्य के अनुसार – "जीन्स के अलावा प्रत्येक वस्तु वातावरण है।"

→ वाटसन – "मुझे चाहे जो बालक दे दो आप जो कहेंगे उसे मैं वो बना दूंगा।"

नोट – 1. वुडवर्थ के अनुसार – "वंशानुक्रम आत्मा है और शरीर वातावरण है।"

2. वुडवर्थ के अनुसार – "बीज वंशानुक्रम व धरती वातावरण है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

दोनों एक दुसरे के पूरक हैं अर्थात बराबर महत्वपूर्ण हैं।

विकास को प्रभावित करने वाले अन्य कारक →

(II) लिंग का प्रभाव — लड़कियों का विकास जल्दी होता हैं।

(IV) बुद्धि का प्रभाव — बुद्धि का विकास जितना अच्छा होगा सम्पूर्ण विकास उतना ही अच्छा होगा।

(V) अन्तःस्रावी ग्रंन्थियों का प्रभाव — जैसे पीयुष ग्रन्थि-लम्बाई को, थाईराईड ग्रन्थि - तनाव, चिंता व उतेजना, थाईमस ग्रन्थि - शारीरिक व मानसिक विकास बाध्य, एड्रिनल ग्रन्थि - संवेगात्मक विकास एस्ट्रॉजन व टेस्टासटेरॉन हार्मोन - लैंगिक विकास में सहायक हैं।

(VI) जन्म क्रम का प्रभाव — मध्यम जन्म क्रम के बालक का विकास अच्छा होता हैं प्रथम की अपेक्षा।

(VII) मनोवैज्ञानिक कारक — रुचियां, आदत, आकांक्षा, मनोवृति

(VIII) सामाजिक कारक — परिवार, विद्यालय, सिनेमा

विकास का प्रारम्भ गर्भावस्था से होता हैं।

गर्भावस्था का कार्यकाल २७०/२८० दिन

तीन भाग →

बीजावस्था → जन्म से दो सप्ताह
भ्रुणावस्था → २ सप्ताह से ३ माह
गर्भावस्था → ३ माह से जन्म तक

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. ~~73~~ .....

→ गर्भावस्था में माता-पिता की सांवेगिक स्थिति, पोषक आहार मद्यव्यसन, विकिरण का प्रभाव पड़ता है।

I. शैशवावस्था → Infancy

सामान्य कार्यकाल 0 – 5/6 वर्ष

कॉल के अनुसार → 0 से 2 वर्ष (शैशवावस्था)
2 से 5 वर्ष (प्रारम्भिक बाल्यावस्था)

शैले के अनुसार → 0 से 5 वर्ष

रॉस के अनुसार → 0 से 3 वर्ष

हरलॉक के अनुसार → जन्म से 2 सप्ताह

न्यूमैन के अनुसार – "4 या 5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिये बड़ी ग्रहणशील होती हैं।"

फ्रायड – "बालक जो कुछ भी बनना होता हैं वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता हैं।"

एडलर – "शिशु बाल जीवन ढंग के लिए तैयार करता हैं।"

स्ट्रैंग – "बालक प्रथम दो वर्षों में अपने भावी जीवन की आधारशिला रखता हैं।"

वैलेन्टाइन – "बालक के हाथ, पैर व नेत्र प्रारम्भिक शिक्षक होते हैं।"

महत्वपूर्ण कथन →

Imp → ✓ भावी जीवन की आधारशिला

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ अतार्किक चिंतन की अवस्था
→ खिलौने की आयु (टॉय ऐज)- पूर्व बालावस्था
→ बक्की अवस्था - कुछ न कुछ बोलना
→ "सीखने का आदर्शकाल"- वेलेन्टाइन
→ "खतरनाक काल या अपीली काल"- हरलॉक

विशेषताएँ :-

1. शारीरिक विकास व मानसिक विकास की तीव्रता में-
गुड एन. एफ - "बालक का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है।"

2. काल्पनिक जगत में निवास-
कल्पना की सजीवता (उपजाऊ कल्पना करना), परियों की कहानियाँ।

3. दुसरों पर निर्भर - माता-पिता पर आश्रित

4. आत्म प्रेम की प्रवृति - स्वमोह (खुद से प्रेम)

5. आत्म गौरव की प्रवृति - अपने आप को बढा-चढा कर पेश करना

6. नैतिकता का अभाव ← (Reet 2015 L-2)

7. सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता →
गैसेल - "बालक प्रथम छः वर्षों में इतना सीख लेता है कि बाद के 12 वर्षों में भी नही सीख पाता है।"

8. दोहराने की प्रवृति - याद नही रहता इसलिए रीपिट करता रहता है।
repeat

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 75

9. अनुकरण की प्रवृति – पूर्व बालअवस्था में सर्वाधिक

10. एकान्तमय व साथ खेलने की प्रवृति – 0 से 2 वर्ष में एकान्त व 2 से 5 वर्ष में साथ

11. जिज्ञासा की प्रवृति – प्रश्न बहुत पूछता हैं।

12. अन्वेषण की प्रवृति – पूर्व बालअवस्था

13. सहज क्रियाएं करना – चुसना, निगलना, चलना,

14. उद्देश्य पूर्ण क्रिया – 2 वर्ष से प्रारम्भ

15. काम प्रवृति – अगुंठा चुसना, दाँत से काट लेना।

16. मूल प्रवृति पर आधारित व्यवहार

17. स्वार्थी व आत्मकेन्द्रित

18. संवेगों की संभावित (स्पष्ट) अभिव्यक्ति

19. सामाजिकता का अभाव – शैशवावस्था में
सामाजिकता का विकास – पूर्व बालअवस्था में।

शैशवावस्था में शिक्षा →

→ वाटसन – "शैशवावस्था में सीखने की सीमा व तीव्रता सर्वाधिक होती हैं।"

→ मातृभाषा में शिक्षा दें।

→ उचित वातावरण व उचित व्यवहार

→ अच्छी आदतों के निर्माण की शिक्षा

→ वास्तविक वस्तुओं द्वारा शिक्षा

→ चित्र व कहानियों के माध्यम से शिक्षा

→ आत्मनिर्भरता की शिक्षा – स्वयं करने का अवसर

→ क्रिया व खेल विधि का प्रयोग

→ जिज्ञासा की सन्तुष्टि

→ मूल प्रवृतियों को प्रोत्साहन

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. .....

Page No. 74

II. (Childhood) बाल्यावस्था (6 से 12 वर्ष) →

→ जीवन का निर्माणकारी काल – फ्रायड
→ जीवन का अनोखा काल – कॉल व ब्रुश
→ मिथ्या परिपक्वता का काल। दबम परिपक्वता का काल – जे.एस.रॉस
→ वैचारिक क्रियावस्था का काल – जीन पियाजे (7 से 12 वर्ष)
→ मूर्त परिचालन की अवस्था – जीन पियाजे।

→ टोली की आयु (गिरोह अवस्था)
→ खेल की आयु (गेम ऐज)
स्ट्रेंग – "शायद ही कोई ऐसा खेल हो जिसे 10 वर्ष का बालक ना खेल सके।"

→ उत्पाती अवस्था – बच्चों में उमंग, उत्साह होता है।
→ सारस की अवस्था
→ चुस्ती की आयु

→ प्रतिद्वन्द्वात्मक सामाजीकरण की अवस्था – किल-पैट्रिक

→ सृजनात्मक क्रियाओं के प्रारम्भ की अवस्था।
→ भाषा विकास की सर्वोत्कृष्ट अवस्था।
→ विद्यालय की आयु – ब्लेयर जोन्सन ने शैक्षिक आयु कहा है।
→ शारीरिक व मानसिक विकास में स्थिरता
→ प्रबल जिज्ञासा (अद्भूत प्रश्न पुछना)
→ आत्म-निर्भरता का विकास
→ सामाजिकता व नैतिकता का विकास
→ वास्तविक जगत में निवास
→ रचनात्मक। विद्यात्मिकता की प्रवृति
निर्माण करना

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 37

→ संग्रह की प्रवृति
→ बर्हिमुखी व्यक्तित्व का विकास
→ निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृति (स्कूल से बंक मारना)
→ काम प्रवृति की न्यूनता (भागना)
→ वैज्ञानिक व तार्किक कार्यों में रुचि (ये होता है तो ऐसा क्यों होता है)
→ भविष्य के प्रति चिन्ताओं का नही पाया जाना - चिंता रहित
→ काल्पनिक भय का अन्त (बच्चे में भय खत्म हो जाता है)
→ समलैंगिक मित्रता
→ सामुहिक खेलो में रुचि
→ नेतृत्व के गुण का विकास प्रारम्भ
→ स्थायी भाव का विकास (चरित्र, आत्म सम्मान)
→ संवेगो पर नियत्रण

बाल्यवस्था में शिक्षा →

→ ब्लेयर, जोन्सन व सिम्पसन :-
"बाल्यावस्था वह समय है जब बालक के आधारभूत दृष्टिकोण मूल्यों तथा आदर्शों का निर्माण हो जाता है।"

→ भाषा ज्ञान पर बल
→ संवेगों की अभिव्यक्ति पर बल
→ रोचक व उपयोगी पाठ्यक्रम
→ जिज्ञासा की सन्तुष्टि
→ पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था
→ रचनात्मक व संग्रह की प्रवृति को प्रोत्साहन
→ खेल व क्रिया विधि का प्रयोग
→ पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

II. किशोरावस्था (Adolescence) →

सामान्य आयुकाल → 12/13 से 18/19 वर्ष तक

कॉल के अनुसार – लड़कियों में पूर्व किशोरावस्था का प्रारम्भ 11 से 12 वर्ष
व लड़कों में 13 से 14 वर्ष

{ वयसंधि काल
यौवन अवस्था
एज ऑफ एम्बर्टी } → पूर्व किशोरावस्था → 12 से 16 वर्ष
उत्तर किशोरावस्था → 17 से 19 वर्ष

→ **स्टैनले हॉल** – "किशोरावस्था तनाव, तुफान व संघर्ष की अवस्था है।"
स्टैनले हॉल "किशोरावस्था एक नया जन्म है जिसमें श्रेष्ट विशेषताओं के दृश्नि होते हैं।"

→ **किलपैट्रिक** – "जीवन का सबसे कठिन काल"

→ **विंग एवं हण्ट** – "किशोरावस्था को व्यक्त करने वाला एक ही शब्द है वह परिवर्तन।"

→ **जरशील्ड** – "किशोरावस्था वह समय है जब विचारशील व्यक्ति बालावस्था से परिपक्व अवस्था की ओर संक्रमण करता है।"

→ **जीन-पीआजे** → "किशोरावस्था महान आदर्शों तथा वास्तविकताओं से अनुकूलन का समय है।"

→ **क्रो एण्ड क्रो** → "किशोर वर्तमान तथा भावी जीवन की आशा को व्यक्त करता है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ **कुहलन** – किशोरावस्था "बाल्यावस्था व प्रौढावस्था के मध्य परिवर्तन काल है।"

→ **रविन्द्र नाथ टैगोर** – "मानवीय मामलों में 14 वर्ष से अधिक आयु के किशोर से अधिक समस्या कुछ भी नहीं होती है।"

→ **रोजर** – "किशोरावस्था समाज में प्रभावशाली भाग लेने के लिए विचारों तथा विश्वासों की प्राप्ति का समय है।"

→ **हैडोकमेटी रिपोर्ट** :– "11 या 12 वर्ष की अवस्था में बालक की नशों में एक ज्वार उठता है यदि उसे सही दिशा दे दी जाए तो सफलता अन्यथा विनाश की स्थिति उभरती है।"

महत्वपूर्ण कथन →

→ बसन्त ऋतु (अलग पहचान)
→ स्वर्णिम काल / सुनहरी अवस्था (गोल्डन ऐज)
→ भयभीत अवस्था
→ उलझन व अटपटी अवस्था
→ सामाजिक स्वीकृति की अवस्था
→ अवास्तविकता की अवस्था
→ अस्पष्ट व्यक्तिक अवस्था (ना तो बच्चा ना व्यस्क)

किशोरावस्था में समस्याएँ :→

→ शारीरिक परिवर्तनों की समस्या
→ मानसिक विकास में जिज्ञासा की समस्या – प्रश्न नहीं पूछता है, शर्मीलापन
→ संवेगात्मक अस्थिरता की समस्या

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 80

→ स्थिरता की समस्या – मौसम की तरह तुम भी बदल तो न जाओगे
Imp जोन्स के अनुसार – "किशोरावस्था शैशवावस्था का पुनरावर्तन है।"
→ समायोजन की समस्या
→ अपचार की समस्या – झूठ बोलना, चोरी करना, घर से भाग जाना,
→ नशा विकार संबंधी समस्या
→ आहार विकार संबंधी समस्या – दो समस्या
1. एनोरेक्सा नरवोसा – कम भोजन ग्रहण करना, भूखे रहना
2. बुलिमिया – अत्यधिक भोजन ग्रहण करना।

किशोरावस्था की विशेषताएँ →

→ अधिकतम शारीरिक व मानसिक विकास
→ "व्यक्तिगत व घनिष्ठ मित्रता" – वेलन्टाईन
→ दिवास्वप्न की प्रवृति (ख्वाब प्रवृति)
→ संवेगात्मक विकास की प्रबलता
→ चिन्ताओं में वृद्धि – सुन्दरता, अध्ययन, भविष्य व शादी
→ वीर पुजा (नायक पुजा) – हीरोवर्शिप → आदर्श व्यक्ति का अनुकरण करना।
→ समुह के प्रति भक्ति – समुह के लिए कुछ भी करना।
→ रुचियों में परिवर्तन – सिनेमा, संगीत साहित्य, व स्वंय को संजाना
→ आत्म चेतना / आत्म सम्मान की भावना
→ स्वतन्त्रता एंव विद्रोह की भावना
कोलसेनिक के अनुसार – "किशोर प्रौढों को अपने मार्ग में बाधा समझता है।"
→ ईश्वर व धर्म में विश्वास
→ अपराध प्रवृति का विकास
वेलन्टाईन के अनुसार – "किशोरावस्था अपराध प्रवृति के विकास का नाजुक समय है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ स्थिति व महत्व की अभिलाषा
→ नेतृत्व की प्रवृति
→ काम प्रवृति की परिपक्वता → तीन प्रकार की होती है-
(i) आत्म प्रेम (नार्सिजम) (ii) समलिंगी (iii) विषमलिंगी
अहम भाव → दो प्रकार
(i) काल्पनिक श्रोता → मैं अपने प्रति जितना आकर्षित हूँ उतने ही दूसरे लोग भी मेरे प्रति उतना ही आकर्षित हैं।
(ii) व्यक्तिगत दन्त कथा → स्वंय के प्रति अद्वितीय होने का भाव

किशोरावस्था में शिक्षा →

→ नियमित या निरन्तर निर्देशन का प्रयोग
→ अभिप्रेरणा का प्रयोग
→ शारीरिक विकास की शिक्षा
→ मानसिक विकास की शिक्षा - करके सीखना, समस्या समाधान विधि
→ संवेगात्मक विकास की शिक्षा - उदातीकरण विधि का प्रयोग
→ जीवन कौशल की शिक्षा। यौन शिक्षा
→ व्यवसायिक शिक्षा
→ सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा
→ उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य सौंपना
→ संवेदनशील संबंधो का प्रशिक्षण
→ किशोर के महत्व को मान्यता
"किशोरावस्था में विकासात्मक कार्यों की सूची जारी की → हैविंगहर्स्ट

⇒ हैविंगहर्स्ट के अनुसार विकासात्मक कार्य :→
→ स्त्री व पुरुष की भूमिका को समझना
→ विपरीत लिंग के साथ संबंध बनाना
→ व्यवसाय का चुनाव करना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Written By:- Narendra Poonia 9413566680 Page No. 1

→ सांवेगिक व आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना।
→ गृहस्थ जीवन की तैयारी करना।
→ बौद्धिक कुशलताएं अर्जित करना।

✡ किशोरावस्था के सिद्धान्त :-

1. आकस्मिक विकास का सिद्धान्त — स्टेनले हॉल 1904 एडोलसेन्स पुस्तक

2. क्रमिक विकास का सिद्धान्त — थार्नडाइक, किंग व हॉलिंगवर्थ परिवर्तन धीरे-धीरे होता हैं।
किंग के अनुसार — जिस प्रकार एक ऋतु के समाप्त होने पर दूसरी ऋतु का आगमन होता है तथा पहली वाली में दूसरी के लक्षण दिखाई देने लग जाते है वैसे ही बालावस्था के बाद किशोर अवस्था का आगमन होता हैं।

3. मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त — फ्रायड

4. मनो सामाजिक विकास सिद्धान्त — इरिक इरिक्सन

5. मानव शास्त्रीय सिद्धान्त — रूथ बेनडिक्ट / मार्गरेट मीड

नोट→जेम्स मार्सिया → किशोरावस्था में "इगो पहचान संकट" का अध्ययन किया हैं।

बालक की अवस्थाएँ व विकास :→

1. शारीरिक विकास

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 2

मापदण्ड	शैशवावस्था	बाल्यावस्था	किशोरावस्था
भार	जन्म के समय लड़का – 7.15 पौण्ड लड़की – 7.13 पौण्ड औसत भार – 7 पौण्ड	औसत = 80–95 पौण्ड लड़कियों का भार ज्यादा होता हैं।	लड़के का भार लड़की की तुलना में 25 पौण्ड ज्यादा होता हैं।
लम्बाई	लड़का – 20.5 इंच लड़की – 20.3 इंच औसत = 50 सेमी	2 से 3 इंच तक लम्बाई बढ जाती हैं।	लड़के की लम्बाई 18 से 21 वर्ष तक बढती हैं जबकि लड़की 16 वर्ष तक
सिर व मस्तिष्क	25% या 1/4 होता हैं दिमाग – 350 ग्राम विकास – 90 %	1/6 1260 ग्राम विकास – 95 %	1/8 1200–1400 ग्राम के मध्य या 1350 ग्राम 100% विकास
दाँत	दुध के दाँत आते हैं, दाँत 6 माह से प्रारम्भ, नीचे के दाँत पहले कुल संख्या-20	स्थायी दाँत (27-28) लड़कियों के पहले आते हैं।	प्रज्ञा (विज्डम) दाँत संख्या 32 दाँत
मासंपेशिया	कूल वजन का 23% (जन्म के समय)	6 वर्ष तक 27% 12 वर्ष तक 33%	44 – 45 प्रतिशत
चउकन	140	6 वर्ष तक 100 12 वर्ष तक 85	लड़को में 72 लड़कियों में 69 सामान्यत दोनो में 72
हड्डियां	270	350	206 (अस्थिकरण की प्रक्रिया पूर्ण)

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

विशेष क्रियाएँ →

CTET 1. **रूटिंग :-**

समय – 0 से 2 माह

→ बालक के गाल को हाथ से छूने पर वह मुंह खोलते हुए गर्दन/सिर को घुमाएगा।

Shree Narendra
9413566680

CTET 2. **मोरो :-**

समय → 2 से 5 माह

→ तेज आवाज होने पर बालक गर्दन को सिकुड़ते हुए भुजाओं को आगे की ओर फैलाता है।

CTET Imb 3. **बेबिन्स्की :-**

समय → 0 से 7 माह तक

बालक के तलवे को छुने पर पैर की अंगुलियों को आगे की ओर मोड़ना।

Imb. मेरीडिथ व टेन्नर के अनुसार :- "बालक में शारीरिक विकास की गति पूर्व प्रसुति काल तथा 0 – 6 माह में सबसे अधिक होती है।"

शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक →

शारीरिक वि. = वंशानुक्रम + वातावरण

→ वंशानुक्रम
→ वातावरण
→ अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियाँ
→ संतुलित भोजन
→ खेल-कूद व योग
→ नियमित दिनचर्या

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 4

2. **मानसिक विकास →**

**हरलॉक – "कोई भी दो बालक समान मानसिक योग्यता के नही होते है।"

**जॉन लॉक – "जन्म के समय बालक का मन या मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है जिस पर वह अपने अनुभव लिखता है।"

GuruNarendra 9413566680

मानसिक क्रियाएं →

1. संवेदना
2. प्रत्यक्षीकरण
3. ध्यान
4. चिंतन
5. कल्पना
6. स्मृति
7. समस्या समाधान
8. निर्णय की शक्ति

शैशवावस्था में मानसिक विकास –

जन्म के समय बालक मानसिक रूप से संतुलित होने के लिए रोता है।

1-8 माह का बालक – सहज क्रियाएँ (निगलना, चुसना) आदि करता है।

12 माह का बालक – ऐच्छिक क्रियाएं करता है।

2 वर्ष का बालक – उद्देश्यपूर्ण क्रियाएं करता है। व 100 से 200 शब्द बोलेगा।

CTET
3 वर्ष का बालक – लाईन खिंचता है (टेढी), खुद का नाम बतएगा।

4 वर्ष का बालक – वस्तुओं को क्रमबद्ध रखना व लिखना तथा खुद का नाम लिखेगा।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

5 वर्ष का बालक – रंगो व वस्तुओं में अन्तर करेगा। 10 से 11 शब्दो का वाक्य बनायेगा।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास–

6 वर्ष का बालक – 14 तक की गिनती, सरल प्रश्नों के उत्तर देना, शरीर के अंगो, मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री का नाम बताना

7 वर्ष का बालक – तुलना व अन्तर करने की योग्यता का विकास

8 वर्ष का बालक – कविता व कहानियाँ दोहरायेगा। 16 शब्दों का वाक्य बनायेगा।

** 9 वर्ष का बालक – दिनांक, समय व सिक्कों, रुपये का ज्ञान, देखी गयी फिल्म की 60% बातें बता देना।

10 वर्ष का बालक – दैनिक जीवन के नियम व परम्पराओं का ज्ञान, जीवन-मृत्यु का ज्ञान, 3 मिनट में 60-70 शब्द बोलेगा।

** 11 वर्ष का बालक – तर्क, जिज्ञासा, व निरीक्षण शक्ति का विकास

12 वर्ष का बालक – समस्या-समाधान की शक्ति का विकास

महत्वपूर्ण बिन्दु →

प्लास्टिक ऐज – पूर्व बाल्यावस्था

Imp. मिथ्या परिपक्वता का काल – बाल्यावस्था

→ पूर्व बाल्यावस्था में बालक अन्वेषण की शक्ति, गिनती, जोड़-बाकी गुणा, भाग इत्यादि क्रियाएं प्रारम्भ कर देता है।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

किशोरावस्था में मानसिक विकास–

वुडवर्थ के अनुसार– "15–20 वर्ष की अवस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।"

स्पीयरमैन के अनुसार → 14 से 16 वर्ष

इस अवस्था में बुद्धि को विशेष रूप से मानसिक स्वतंत्रता, अमूर्त। औपचारिक चिंतन, समस्या-समाधान, निर्णय करने की शक्ति, निगमन चिन्तन, अधिगम स्थानान्तरण, की योग्यता तथा कल्पना व स्मृति का अधिकतम विकास हो जाता हैं।

NOTE → सबसे ज्यादा मानसिक विकास – किशोरावस्था
सबसे तेज मानसिक विकास – शैशवावस्था

मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक →

(i) वंशानुक्रम
(ii) वातावरण
(iii) परिवार की विशेष आर्थिक स्थिति
(iv) माता-पिता की शिक्षा
(v) शारीरिक स्वास्थ्य
अरस्तु – "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता हैं।"
(vi) विद्यालय व शिक्षक

3. सामाजिक विकास :→

*** **हरलॉक के अनुसार**– "सामाजिक विकास कार्यों का अर्थ सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करना है।"

*** **गारे व टेलफोर्ड के अनुसार**– "बालक के सामाजीकरण की प्रक्रिया दूसरे व्यक्तियों के साथ प्रथम सम्पर्क से प्रारम्भ होती है और आजीवन चलती है।"

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 7

रॉस के अनुसार— विकास का अर्थ हम की भावना का विकास है।"

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार— "जन्म के समय बालक न तो सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक। कुछ समय बाद वह निरपेक्ष सामाजिक बन जाता है।"

समाजिकरण— समाज के नियम, परम्पराओं, आदर्शों के अनुकुल अपने आप को ढाल लेना। यह प्रक्रिया बालावस्था से प्रारम्भ होती है।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास→

1 माह का बालक— आवाज में अन्तर नहीं कर पाता है।

2 माह का बालक— आवाज में अन्तर करता है।

3 माह का बालक— पहला सामाजिक व्यवहार करता है। (अपनी माँ को पहचानना व दुर जाने पर रोना)

4 माह का बालक— साथ खेलने पर हँसना।

5 माह का बालक— प्रेम। क्रोध के व्यवहार को समझेगा (माँ के व्यवहार को)

6 माह का बालक— अपरिचित को देखकर डरेगा।

10 माह का बालक— अपने प्रतिबिम्ब को देखकर हंसेगा व खेलेगा

12 माह का बालक → मना किये जाने पर कार्य को नहीं करेगा

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 8

2 साल का बालक → सामाजिक अनुमोदन की प्रवृति
(बड़ो के साथ मिलकर कार्य करता है।)
(अपनी मम्मी के साथ मिलकर झाड़ू निकालना)

*** 3 साल का बालक → सामाजिक विकास यहाँ से प्रारम्भ होता है।
जैसे - दोस्त बनायेगा, झगड़ेगा, खेलना पूर्व बाल्यावस्था में

4 साल का बालक → सहानुभूति व समानुभूति का भाव
खेलते समय दूसरे बालक को चोट लगने पर उसे दुलारना
खेलते समय स्वंय किसी को चोट पहुचाना और फिर स्वंय की रक्षा के लिए उस बालक के साथ जोर-2 से खुद भी रोना।

5 साल का बालक → वस्तुओ का लेन-देन करना, भाई-बहनो की रक्षा का भाव, डिंग हांकना (गप्पे मारना)
स्कूल में पैन-पेन्सिल बदलना), एक दुसरी वस्तु का बदला करना।

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास →

सामाजिकता का सर्वाधिक विकास
सहयोग व उत्तरदायित्व, बड़ो का सम्मान करना,
सुझाव ग्रहण करने की प्रवृति (6-7 वर्ष)
समुह के प्रति वफादारी

लैंगिक अलगाव [B+B / G+G] 6 वें वर्ष में

टोली की आयु
सामाजिक प्रतिस्पर्धा

स्तर चेतना — [गरीब व अमीरी का अहसास
घर की स्थिति को समझता है।]

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

किशोरावस्था में सामाजिक विकास :→

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार- 11 वर्ष से 13 वर्ष की आयु में बालक के अनुभव व दृष्टिकोणों के साथ सामाजिक संबंधो मे भी परिवर्तन आने लगता हैं।

** जटिल सामाजिकरण की अवस्था।

सामाजिक चेतना व सामाजिक परिपक्वता का विकास

सामाजिक चेतना → समाज में स्वंय की स्थिति

सामाजिक परिपक्वता → बड़ो की तरह व्यवहार करना शुरु कर देता है।

लैंगिक चेतना का विकास

समाज सेवा की भावना

समाज व देश के लिए बलिदान की भावना।

सामाजिक रुचियों का विकास- नेतृत्व, संबंध बनाना

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक→

1. **वंशानुक्रम -**

क्रो एण्ड क्रो- "बालक की पहली मुस्कान वंशानुक्रम की देन है।"

2. **संवेगात्मक विकास -**

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार- "सामाजिक व संवेगात्मक विकास साथ-साथ चलते हैं।"

3. **विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव -**

नोट :- ओटावे ने विद्यालय को सामाजिक अधिकार कहा है। (समाज का अधिकार)

4. **परिवार का प्रभाव -** सबसे अधिक प्रभावित करता हैं।

नोट :- दुर्खिम के अनुसार- "परिवार को जीवन की प्रथम पाठशाला कहा जाता हैं।"

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

इ. खेल कूद का प्रभाव (नेतृत्व, सहयोग)–

स्किनर व हैरीमैन ने खेल-कूद को सामाजीकरण का निर्माण काल कहा हैं।

→ लिंग का प्रभाव–लड़किया सामाजिक होती हैं विवाह-शादी इत्यादि में
→ सिनेमा व साहित्य का प्रभाव
→ समूह का प्रभाव

महत्वपूर्ण कथन व सिद्धान्त–

1. वाईन लैण्ड सामाजिक परिपक्वता मापन – एडलर डोल ने बनाया
→ 11 सामाजिक क्रियाओं का मापन होता हैं।
→ किशोरावस्था से संबंधित होता हैं।

2. मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त – इरिक इरिक्सन
पुस्तक – बचपन व समाज
इरिक्सन को Ego मनोवैज्ञानिक भी कहा जाता है क्यों कि इन्होंने Ego पर सर्वाधिक बल दिया हैं।

इन्होंने विकास की आठ अवस्थाएँ बतायी हैं-

1. विश्वास बनाम अविश्वास / आस्था बनाम अनास्था – जन्म से 18 माह
2. स्वतंत्रता व सन्देह की अवस्था – 18 माह से 3 वर्ष
3. पहल व अपराध की अवस्था – 3 से 6 वर्ष
4. उद्यम, परिश्रम व हीनता की अवस्था – 6 से 12 वर्ष (स्कूल में जाना शुरू कर देता हैं।) (Reet L-I. 2018)

CTET

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

5. पहचान भूमिका व संघर्ष / द्वन्द्व की अवस्था – 13 से 18 वर्ष

6. मित्रता व अलगाव की अवस्था – 19 से 35 वर्ष

7. सृजनात्मक (प्रजनन) व निष्क्रियता (गतिहीनता) की अवस्था – 35 से 65 वर्ष
समाज में रचनात्मक व उत्पादक कार्य करता है।

8. ईमानदारी बनाम निराशा या सम्पूर्णता बनाम हताशा की अवस्था – 65 वर्ष से अधिक

3. पारिस्थितिकी परक सिद्धान्त – ब्रोन फेन ब्रेन्नर ने दिया। यह सिद्धान्त सामाजिक परिवेश के संदर्भ में सामाजिक विकास की व्याख्या करता है।

इन्होंने सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले 5 स्तर बताये हैं- पाँच स्तर / 5 मण्डल –

1. लघु मण्डल – स्वंय, परिवार, समुह, विद्यालय.

2. मध्य मण्डल – इनके आपसी संबंध

3. बाह्य मण्डल – इस मण्डल का बच्चे से प्रत्यक्ष संबंध नही होता हैं। माता-पिता का कार्यस्थल भी बोल सकते हैं।

4. वृहद मण्डल – सामाजिक, सांस्कृतिक, रीति-रिवाज, परम्पराएआदि

5. घटक मण्डल – बालक की विभिन्न अवस्थाएँ

संवेगात्मक विकास

"इमोशन" शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के 'इमोविभर' से हुई हैं, जिसका अर्थ है "उत्तेजित हो जाना"

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

परिभाषाएँ –

वुडवर्थ – "संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।"

रॉस – "संवेग चेतना की वह अवस्था है जिसमें भावात्मक तत्व की प्रधानता होती है।

2016 M Ig.

जरशील्ड – "किसी आवेग के उत्पन्न हो जाने, उत्तेजित हो जाने तथा भड़क जाने की अवस्था संवेग है।"

किम्बले यंग – "संवेग प्राणी की उत्तेजित शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशा है।"

गेलऊई - संवेग क्रियाओं का उत्तेजक है।

क्रो एण्ड क्रो – "संवेग एक गतिशील आन्तरिक समायोजन है।"

संवेगो की विशेषताएँ →

→ संवेग तीव्र / क्षणिक होते हैं।

→ संवेग शारीरिक व मानसिक स्थिति में परिवर्तन करते हैं।

→ संवेग सुखात्मक व दुखात्मक होते हैं।

सुखात्मक ↓ : करुणा, आमोद, प्रेम, दया, बाधा गौलार्द्ध

दुखात्मक ↓ : ईर्ष्या, क्रोध, घमण्ड, दाये गौलार्द्ध

→ संवेग आन्तरिक होते हैं।

→ संवेग मूल प्रवृति से संबधित होते हैं।

नोट:- विलियम मैक्डुगल (इंग्लैण्ड) ने 1908 में अपनी पुस्तक "सामाजिक मनोविज्ञान एक परिचय" में 14 मूल प्रवृति व 14 संवेगो का प्रतिपादन किया। "outline of psy." Second Book.

विलियम मैक्डुगल के अनुसार "मूल प्रवृतियां मानव व्यवहार की मुख्य चालक होती हैं, ये कभी नष्ट नही होती हैं।"

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

इनमें संशोधन होता रहता हैं, ये जन्मजात व सार्वभौमिक होती हैं, प्रत्येक मूल प्रवृति के तीन पक्ष होते हैं—
(क) ज्ञानात्मक (ख) भावात्मक (ग) क्रियात्मक
मूल प्रवृतियों पर लिंग की भिन्नता का प्रभाव पड़ता हैं।

मूल प्रवृति	संवेग
पलायन	भय
युद्ध प्रियता	क्रोध
निवृति	घृणा
शिशु रक्षा	वात्सल्य
संवेदना	दुःख / कष्ट
काम	कामुकता
जिज्ञासा	आश्चर्य
आत्महीनता	अधीनता का भाव
आत्मगौरवा प्रदर्शन	घमण्ड / गर्व
साभुहिकता	एकाकी भाव
भोजन अन्वेषण	भुख
रचनात्मकता	कृति भाव
संग्रहशीलता	अधिकार का भाव / लोभ
हास	हँसी आमोद

संवेगात्मक समस्या →

→ हकलाना, तुतलाना – संवेगो का तीव्र प्रवाह
→ पलायन करना, भागना
→ शर्मीलापन
→ अगुठा चुसना
→ दातों से नाखुन काटना
→ बिस्तर गिला करना
→ वाम हस्तता (संवेगात्मक-समस्या ज्यादा)

भावुकता व शिशु में अ

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

प्रशिक्षित करने

संवेगात्मक समस्याओं के समाधान की विधियां–

1. दमन– क्रोध को दबा देना।
2. मार्गान्तीकरण– दिशा बदल देना।
3. मानसिक व्यस्तता – खुद को बिजी रखो, गलत विचार नही आयेगा
4. सांवेगिक विवेचन – संवेगो की स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर बल देना

Guru Narendra
9413566680

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास–

→ संवेग अस्थायी, स्वभाविक होते हैं।
→ संवेग हिंसात्मक होते हैं।
→ संवेग की गति आरम्भ में तेज व बाद में धीरे-धीरे होती है
→ संवेग की गति में। अभिव्यक्ति में क्रमिक रूप से परिवर्तन होते हैं।
→ वाटसन के अनुसार– "शैशवावस्था में भय, क्रोध व प्रेम मुख्य संवेग होते है।" ये मौलिक संवेग हैं।

नोट:– ब्रिजेस के अनुसार– संवेग जन्म से विद्यमान नही होते केवल उतेजना होती हैं। दो वर्ष तक सभी संवेगो का विकास हो जाता हैं।

0 माह में– उतेजना
3 माह के बालक में → दुःख। खुशी संवेग होते हैं। दुख। आनन्द
6 माह में → भय। प्रेम, क्रोध, घृणा
12 माह में → उल्लास, अनुराग
18 माह में → ईर्ष्या, क्रोध
24 माह में → आनन्द, हर्ष

Guru

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

स्पिटज ने इन संवेगो का समर्थन किया है—
नोट—विना होलिंगवर्थ ने कहा कि संवेग जन्मजात होते हैं।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास—

→ संवेग, स्थायी, स्थिर व स्पष्ट हो जाते हैं।
→ बालक अपने संवेग दबा लेता है। या नियन्त्रण कर लेता है।
→ शिक्षक व विद्यालय का सर्वाधिक प्रभाव
→ स्थायी भाव का विकास (आत्म सम्मान। आदर)
→ उपनाम से पुकारना तथा चुम्मा जाना (Kiss) उसे पसन्द नही होता

⇒ किशोरावस्था में सांवेगिक विकास —

कात्ल व ब्रुश के अनुसार—"किशोरावस्था के आगमन का मूरव्य लक्षण संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन है।"

रॉस—"किशोर का संवेगात्मक जीवन अत्यधिक उग्र होता है।"

बी. एन. झा—"काम नामक संवेग किशोरावस्था को सबसे अधिक प्रभावित करता है।"

→ संवेग सबसे अधिक अस्थिर — किशोरावस्था में
→ अमूर्त संवेग पाये जाते हैं। मन ही मन मे गुस्सा होना
→ संवेगो में भय, प्रेम, क्रोध, ईर्ष्या, व काम प्रमुख होते हैं।
→ शारीरिक शक्ति का सबसे अधिक (दबा) प्रभाव पड़ता है।

संवेगोपर समूह संरचना

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक→

(1) थकान
(2) अभिलाषा का पुरा न होना जैसे - मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया
(3) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव
(4) विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

सिनेमा व साहित्य का प्रभाव–
लिंग का प्रभाव – लड़कियां ईमोशनल ज्यादा होती हैं।
आर्थिक स्थिति का प्रभाव
नोट–संवेगो का नियंत्रण केन्द्र हाइपोथैलेमस ग्रन्थि होती है

संवेगात्मक विकास के सिद्धान्त →

1. जेम्स लॉंज (लिंगे) का सिद्धान्त– पहले संवेगात्मक व्यवहार व उसके बाद संवेग की अनुभूति। जैसे–शेर को देखकर बच्चे का भागना व बाद में भय महसुस करना।

2. केनन बोर्ड का सिद्धान्त → व्यवहार व अनुभूति दोनो साथ-साथ होती हैं। कूत्ते को देखकर भागना व पैरो का कांपना

3. मौलिक संवेगो का सिद्धान्त → वाटसन (तीन संवेग मौलिक होते हैं- भय, प्रेम व क्रोध)

4. संवेगो का द्विकारक सिद्धान्त → स्टेनले शेचटर (दो कारक जन्मजात होते हैं–(i) उत्तेजना (ii) संज्ञान)

5. संज्ञानात्मक मूल्यांकन का सिद्धान्त → लेजारस मानसिक क्रियाओं को महत्वपूर्ण मानता है।

6. संवेग संक्रियाकरण सिद्धान्त → लिंडस्ले

⇐ नैतिक विकास ⇒

बाउले – "चरित्र आत्मनियंत्रण की शक्ति है।"

इमविल – "चरित्र उन सब प्रवृतियों का योग है जो व्यक्ति के जीवन काल में होती हैं।"

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

मैक्डूगल – "चरित्र स्थायी भावों की एक व्यवस्था है।"

सेमुअल स्माईल – "चरित्र आदतों का पूंज है।"

शैशवावस्था में नैतिक विकास–

→ बालक नैतिक नही होता है लेकिन माता-पिता के भय से नैतिकता का पालन करता है।

→ 2 वर्ष का बालक अच्छे लड़के व बुरे लड़के में अन्तर समझता है।

→ 4 वर्ष का बालक अच्छे व बुरे कार्य में अन्तर समझता है।

बाल्यावस्था में नैतिक विकास–

→ बालक में सर्वाधिक नैतिकता का विकास

स्ट्रेंग के अनुसार – "बालक में न्याय, विवेक व ईमानदारी के गुणों का विकास हो जाता है।"

→ नैतिक सापेक्षिकता की शुरुआत इसी अवस्था में होती है।
जैसे चोरी करना, झुठ बोलने की आलोचना करना

किशोरावस्था में नैतिक विकास–

पैक व हैविंग हर्स्ट :– 11 व 12 वर्ष की आयु में बालक नैतिक सिद्धान्तों का निर्माण करता है तथा इसके आधार पर अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है।

→ आदर्श व्यक्ति की कल्पना करना व उसके आधार पर अनुसार बनने की कोशिश करना।

→ कर्तव्य, अधिकार व अन्तः करण (अन्तरात्मा) के आधार पर नैतिकता का पालन।

→ दुसरे व्यक्तियों के साथ नैतिक विचारों की तुलना करना।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 18

मेडिनिस के अनुसार – "किशोर धर्म की संकीर्णता को त्यागकर मानव धर्म का समर्थन करता है।"

नैतिक सापेक्षता की अवस्था → किशोरावस्था

नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक →

1. वंशानुक्रम
2. परिवार
3. विद्यालय
4. शिक्षक
5. समुह
6. सिनेमा
7. साहित्य
8. मूल प्रवृतियाँ
9. आदतें
10. संवेग
11. स्थायी भाव

Written By:- Chhaya
9413566680

कोहलबर्ग का नैतिक विकास का सिद्धान्त – इन्होंने तीन स्तर व छः अवस्थाएं बताई हैं। →

कोहलबर्ग 10 से 16 वर्ष के बच्चों के लिए नैतिक तर्कणा

(1) **प्री कनवेंशनल स्टेज** :- पूर्व परम्परागत / लौकिक / रूढिगत / औपचारिक
कार्य काल – 0 से 6 वर्ष

(A) **आज्ञा व दण्ड की अवस्था** – जिसकी लाठी उसकी भैंस
यदि मैं नैतिकता का पालन नहीं करूंगा तो मम्मा मुझे पीटेगी

(B) **सरल-अंहकार / सहायक उद्देश्य / यांत्रिक सापेक्ष अवस्था** → अपनी आवश्यकताओं को समझना, दुसरों के अधिकारों को जानना → बराबरी के लेनदेन के आधार पर नैतिकता का पालन। तुम करेंगे तो मैं करूंगा

(2) **कनवेंशनल स्टेज** :- परम्परागत / औपचारिकता / लौकिक / रूढिगत अवस्था
कार्यकाल → 6 से 12 वर्ष

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

इसमें बालक समाज के नियमों के आधार पर नैतिकता का पालन करेगा।

(ग) **प्रशंसा की अवस्था / अच्छा लड़का या अच्छी लड़की की अवस्था →** प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नैतिकता का पालन

(घ) **सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की भावना** – इसे कानून व न्याय की अवस्था भी कहा जाता है। कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर नैतिकता का पालन।

(ङ) **पोस्ट कनवेंशनल स्तर →** उत्तर (पश्च) औपचारिक व उत्तर परम्परागत – कार्यकाल → 13 वर्ष से लगातार

(च) **सामाजिक समझौते की अवस्था / आधारहीन आत्मचेतना →** (12 से 16 वर्ष) इसे सामाजिक पैक्षावस्था भी कहा जाता है। जहाँ वह अनुबंध के आधार पर नैतिकता का पालन करता है।

(छ) **आन्तरिक विवेक की अवस्था –** (17 से 18 वर्ष) यहाँ व्यक्ति अन्तरात्मा, विवेक व तर्क के आधार पर नैतिकता का पालन करता है

जीन पीयाजे का नैतिक विकास सिद्धान्त →

पुस्तक – बालक का नैतिक विकास, 1932

चार चरण बताये हैं –

1. **अनामी चरण →** 0 से 5 वर्ष
   यह कानून रहित अवस्था होती है जहाँ बालक प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासित होता है।

2. **हेटरोनॉमी चरण →** 5 से 8 वर्ष
   कृत्रिम परिणामों द्वारा अनुशासित – प्रशंसा, पुरस्कार

3. **पारस्परिक आदान-प्रदान अवस्था →** 8 से 13 वर्ष
   बराबर के लेन-देन के आधार पर सहयोग की नैतिकता का विकास

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

अपने प्रति जो व्यवहार नहीं चाहते वो दुसरो के साथ मत करो।

(4) स्वायत नैतिकता (ऑटोनॉमी) – 13 से 18 वर्ष स्वंतत्र विवेक के आधार पर नैतिकता का विकास, विशेष → पियाजे ने 9 से 11 वर्ष को स्वायत नैतिकता भी कहा है।

Note: कैरोलगिल्लीगन (कोहलबर्ग का शिष्य) नैतिकता के तीन चरण बताये है, मानवीय संबंधो को महत्वपूर्ण मानते हुए –
1. पूर्व परम्परागत 2. परम्परागत 3. उतर परम्परागत/पश्च परम्परागत

हैविंग हर्स्ट के अनुसार नैतिक विकास के चरण →

पाँच चरण बताये है-
(1.) निरपेक्ष अवस्था (0 से 2 वर्ष) - अच्छे बूरे का ज्ञान नही
(2.) आत्म केन्द्रित अवस्था (2 से 6 वर्ष) - स्वयं के हितो के बारे में सोचना
(3.) परम्परागत अनुकूल अवस्था (7 से 12 वर्ष) - समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहार पालन
(4.) विवेकहीन सचेत अवस्था (13 से 16 वर्ष) - भावात्मक आधार पर
(5.) विवेक युक्त सचेत अवस्था (17 से लगातार) - भावनाओ की अपेक्षा बौद्धिक स्तर पर सोचना

क्रियात्मक / गामक विकास →

"शरीर की मासपेशियों, हाथ तथा पैरो में गति व शक्ति का विकास।"

गामक विकास के चार चरण होते हैं –
1. वस्तु की ओर आकर्षित होना
2. वस्तु को पकड़ने की कोशिश करना
3. समझने की कोशिश करना
4. वस्तु के बारे में सोच का ध्रुवीकरण

गामक गतिविधियो के प्रकार –

1. सुक्ष्म कौशल 2. स्थुल कौशल

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

REET-2nd II^nd Level

1. **सूक्ष्म कौशल** → वे गतिविधियां जो अंगुलियों की सहायता से होती हैं। जैसे - लिखना

2. **स्थूल कौशल** → मांसपेशियों की व्यापक गति से इनका संबंध होता है। जैसे - टहलना व दौड़ना।

गामक विकास का क्षेत्र →

1. **लिखना** → 18 माह का बालक पैन से घसीटे मारना। पैन को पकड़ना
   → CTET 3 वर्ष का बच्चा रेखाएँ खींचना (टेडी-मेडी)
   → 4 वर्ष का अंग्रेजी लिखना
   → 5-6 वर्ष का बालक सम्पूर्ण वर्णमाला का विकास

HTET 3 वर्ष का बच्चा ब्लॉक (□) बनाता है।

2. **आत्मपोषण** →
   CTET → 8 माह का बालक दुध की बोतल पकड़ेगा।
   → 2 वर्ष का बच्चा चम्मच पकड़ेगा
   → 3 वर्ष का बच्चा अंगुलियों से खाना (लपेटकर)
   → 6 वर्ष का बच्चा मेज पर बैठकर खाना खाता है।
   → 10 वर्ष का बालक खाने पर सम्पूर्ण नियंत्रण कर लेगा।

3. **बालगति** →

1 माह का बालक	–	ठोड़ी ऊपर करना
2 माह	–	छाती उठाना
3 माह	–	वस्तु को पकड़ना व छोड़ना
* 4 माह	–	सहारे से बैठना
5 माह	–	गोद में बैठना
6 माह	–	कुर्सी पर बैठना। बैठ सकता है।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

8 माह	सहारे से खड़ा होना
9 माह	चारपाई के सहारे से खड़ा होना
10 माह	घुटनो के बल चलेगा
12 माह	स्वंम खड़े होना
14-15 माह	अपने आप चलना
2-3 वर्ष	दौड़ना
4 वर्ष	सीढ़िया चढना
6 वर्ष	कुदना

→ **ट्राई साइकिल** - 2 वर्ष का बच्चा चलाएगा ।
बाई साइकिल - 8 वर्ष का बच्चा चलाएगा ।
→ 3 वर्ष का बालक नृत्य करेगा ।
→ 6 वर्ष का बच्चा अंग संचालन के साथ नृत्य करेगा ।
→ 8 वर्ष का बच्चा तैरना सीख जाता हैं।
→ 4 वर्ष का बालक कपड़े पहनना व 3वर्ष का कपड़े निकालना
→ 2 वर्ष का बच्चा गेंद फेकना व 4 वर्ष का बच्चा गेंद लपकना शुरु

गामक विकास को प्रभावित करने वाले कारक →

→ सन्तुलित भोजन
→ शारीरिक स्वास्थ्य
→ मानसिक स्वास्थ्य
→ लिंग का प्रभाव
→ परिपक्वता
→ अभिप्रेरणा

facebook id:-
Guruu Narendra
Cont. 9413566680

भाषा विकास →

भाषा विकास के चरण - 4
1. सुनना
2. ध्वनि पैदा करना (बलबलाना)
3. अक्षरो को पहचानना
4. लिखना

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

भाषा भण्डार-

क्रन्दन - भाषा विकास की प्रथम अवस्था

बल बलाना - मानव वाणी का पहला लक्षण

रूपिम → भाषा की सबसे छोटी इकाई।

स्वपनिम → ध्वनि की सबसे छोटी इकाई।

10 माह का बालक पहला सार्थक शब्द बोलता है। (मैं)

1 वर्ष – 3 से 4 शब्द (मा, पा, चा, दा)

2 वर्ष – 100 से 200 शब्द (दो शब्दों का वाक्य बना देना - मम्मा खाना, मम्मा पानी)

2½ वर्ष – 272 शब्द

3 वर्ष – 896 शब्द (शिष्टाचार शब्दावली / आदर सूचक शब्द जैसे - नमस्कार, धन्यवाद)

4 वर्ष – 1540 शब्द (समय संख्या शब्दावली का विकास)

5 वर्ष – 2072 शब्द (मुद्रा शब्दावली का विकास)

6 वर्ष – 2562 शब्दों का प्रयोग करेगा (गुप्त शब्दावली का विकास)

8 वर्ष – 3600 शब्द (16 शब्दों का वाक्य बना देगा)

10 वर्ष – 5400 शब्द

12 वर्ष – 7200 शब्द

14 वर्ष – 9000 शब्द

16 वर्ष – 11700 शब्द

18 वर्ष – 15000 से 19000 शब्द

CTET

1. **भाषा सापेक्षता का सिद्धान्त →** बेजामिन ली व्होर्फ
   → भाषा विचार की अन्तर्वस्तु का निर्धारण करती है।

2. **जन्मजात प्रतिरूपि का सिद्धान्त →** नॉम चोमस्की

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

बालक में भाषा शारीरिक विकास की भाँति स्वाभाविक रूप से विकसित होती हैं। बालक सर्वभाषा व्याकरण के साथ जन्म लेता हैं।

वाग्गोत्सकी → इसके अनुसार भाषा व विकास एक समानान्तर प्रणाली हैं, दोनों साथ-साथ चलते हैं।

भाषा का विकास तीन रूप में होता हैं —

1. सामाजिक भाषा → दुसरे लोग कैसे बोलते हैं।
2. निज भाषा → स्वंभ के विचार
3. आत्म केन्द्रित → अपने को मुख्य रखकर, प्रशंसा के तौर पर

जीन पियाजे के अनुसार—

विचार भाषा से पहले उत्पन्न होता हैं, भाषा व विचार दो अलग-अलग प्रणाली हैं।

जेरोम ब्रूनर— "विचार एक आन्तरिक भाषा हैं।"

Join our telegram—
Reet Mission Carrier.
facebook id- gur Narendra
9413566680

Thank you for Connecting.

Written By:-

Guru Narendra Poonia 9413566680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

शिक्षा मनोविज्ञान

व्यक्तित्व

(Personality)

धीरसिंह धाभाई (असिस्टेंट प्रोफेसर)

लेखक (अवनी शिक्षा मनोविज्ञान)

BOL24.COM

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... **व्यक्तित्व (Personality)** Page No. 1

व्यक्तित्व शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के 'परसोना' (Persona) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है, नकाब या मुखौटा।

व्यक्तित्व निर्माण का प्रारम्भ परिवार से होता है तथा यह सम्पूर्णता समाज में जाकर ग्रहण करता है।

✡ व्यक्तित्व संबंधी दृष्टिकोण –

1. आम आदमी का दृष्टिकोण –

जो व्यक्ति रूप, रंग, भाषा, व वेशभुषा से हमें जितना अधिक प्रभावित करता है, वह उतना ही अधिक अच्छा व्यक्तित्व माना जाता है।

2. दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार →

इसके अनुसार जो व्यक्ति जितना अधिक ज्ञानी होगा वह उतना ही अधिक अच्छा व्यक्तित्व माना जाता है।

3. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार →

जो व्यक्ति जितना अधिक सामाजिक गुणों से सम्पन्न होगा वह उतना ही अच्छा व्यक्तित्व माना जाता है।

4. मनोविश्लेषण दृष्टिकोण के अनुसार →

जो व्यक्ति ID, EGO, व Superego का समन्वय है, वह उतना ही अच्छा व्यक्तित्व

Teacher's Signature : .....

Written By- Guruu Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 2

इ. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार →

व्यक्तित्व वंशानुक्रम तथा वातावरण का गुणनफल है।

वुडवर्थ के अनुसार $P = H \times E$

Personality = Heredity x Environment

परिभाषाएं →

आलपोर्ट के अनुसार- "व्यक्तित्व उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ अपूर्व समायोजन करता है।"

बोरिंग के अनुसार- "व्यक्तित्व वातावरण के साथ सामान्य तथा स्थायी समायोजन है।"

वुडवर्थ के अनुसार- "व्यक्तित्व व्यवहार के समस्त गुणों का संगठन है।"

वाटसन के अनुसार- "हम जो कुछ भी करते हैं, वही व्यक्तित्व है।"

वेलेन्टाइन के अनुसार- "व्यक्तित्व जन्मजात व अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।"

मन के अनुसार- "व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार, तरीको, रुचियों व अभिवृत्तियों का विशिष्ट संगठन है।"

Teacher's Signature : .....

Guruu Narendra 9413566680

9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 3.

वाल्टर मिशेकल ने अपनी पुस्तक "व्यक्तित्व एक परिचय" में लिखा है कि व्यक्तित्व व्यवहारों का वह विशिष्ट प्रतिमान है जिसके द्वारा जीवन में आने वाली परिस्थितियों में समायोजन स्थापित किया जाता है।

अच्छे व्यक्तित्व की विशेषताएं :→

1. आत्म चेतना (मैं कौन हूं, क्या कर सकता हूँ, क्यों आया हूं।)
2. सामाजिकता
3. गत्यात्मकता - डायनेमिक (परिस्थिति के अनुसार खुद को बदल लेना चाहिए)
4. उत्तम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
5. उत्तम समायोजन शक्ति
6. विकास की निरन्तरता → ग्रोइंग नेचुरल (रुकना या ठहरना नहीं है, परिस्थिति कैसी भी हो।)
7. संवेगीय स्थिरता - इमोशनल स्टेबल (दुःख में न ज्यादा दुखी किसी चीज को प्राप्त करने का पागलपन)
8. दृढ़ इच्छा शक्ति - जो सोचा लिया वो करना
9. महत्वाकांक्षी - जिन्दगी में बड़ा सोचो

व्यक्तित्व के प्रकार :-

प्रारूप उपागम :-

1. **हिप्पोक्रेटस का वर्गीकरण** - शारीरिक द्रव्य के आधार पर 400 ई० पू० सबसे पहले व्यक्तित्व का वर्गीकरण करने वाले विद्वान - हिप्पोक्रेटस। (Reel 2016, L-I)
   चार प्रकार बताए हैं।
   (a) कफ → मंद / निष्क्रिय
   (b) कालापित → उदासीन व निराशावादी
   (c) पीलापित → क्रोधी व गुस्सैल व्यक्तित्व
   (d) रक्त - प्रसन्नचित रहने वाले, खुशमिजाज, आशावादी, उत्साह से युक्त

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 4

2. चरक संहिता के अनुसार:-

व्यक्तित्व को तीन भागों में बाँटा गया है- 1. वात 2. पित्त 3. कफ ये तीनों दोष होते हैं।

3. भारतीय वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार:-

वैदिक संहिता

तीन भाग -

1. सत — सोम्य मूल्यपरक दृष्टिकोण
2. रज — क्रियाशील
3. तम — एकदम नकारात्मक आदमी

4. शारीरिक दृष्टिकोण के आधार पर:→

आधार → शारीरिक गुण

क्रेशमर / क्रेच्मर (जर्मनी)

पुस्तक - फिजिक एण्ड कैरेक्टर, सन. 1925

चार प्रकार →

[A] सुडौलकाय:→ (ऐथलेटिक / खिलाड़ीकाय)

न लम्बे, ना पतले, ना मोटे, ना छोटे, आत्म विश्वासी व समायोजित व्यक्तित्व। जैसे- खिलाड़ी, ऐथलैटिक

[B.] लम्बाकाय :→ कृशकाय / एस्थेनिक / सिजोआइड

अत्यधिक लम्बा, पतला, चिड़चिड़ा, निराशावादी, कल्पनावादी, कोची स्वभाव, चिंतित रहने वाले,

[C.] गोलाकार / स्थूलकाय / साईक्लोआइड / पिकनिक :→ गोल, नाटे-मोटे, मिलनसार, खाने-पीने के शौकीन, आरामप्रिय, हंसमुख स्वभाव, गोल-मटौल

Teacher's Signature : .....

Guruji Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 5

[D.] विशालकाय / डिस्प्लास्टिक :- मिश्रित

अद्भुत आकार व ऊपर वाले तीनों का मिश्रण। जैसे खली (इनका शरीर विशाल होता है)

5 शैल्डन के अनुसार →

शारीरिक गुणों के आधार पर-

सिद्धान्त - "सोमेटाईप" (1940) जर्मनी

तीन प्रकार बताये -

(A) लम्बाकृति / सेरीटोनिया / एक्टोमार्फी :-

गुण - लम्बे, दुबले, पतले, निराशावादी, एकांतवासी, नींद की समस्या, लज्जाशील

(B) आयताकृति / सोमेटोनिया / मेसोमार्फी :-

गुण - सन्तुलित शरीर (सुडौल, बहादुर, आक्रामक)

(C) गोलाकृति / विसरोटेनिया / एण्डोमार्फी :-

गुण - गोलमटोल, मस्त रहने वाले,

6 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर :- ← (11 Jan 2017)

स्प्रेंगर

पुस्तक - 'टाइप ऑफ मैंन'

I सैद्धान्तिक :-

कवि, लेखक, पत्रकार, दार्शनिक, साहित्यकार

II आर्थिक :-

दुकानदार, उद्योगपति, व्यापारी

Teacher's Signature : .....

Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

(III) सामाजिक :-
सामाजिक कार्यकर्ता, अध्यापक, समाजसेवी,

(IV) राजनैतिक :-
नेता, मंत्री

(V) धार्मिक :-
संत, महात्मा, योगी, पुजारी

(VI) सौन्दर्यात्मक :-
कलात्मक
चित्रकार, कलाकार, मूर्तिकार, अभिनेता, नृतकी

7. आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार :→
प्रतिपादक - मार्गन / गिलीलैण्ड

I भावुक :-
दिमाग से ज्यादा दिल की बात सुनते हैं। इनमें भी चार प्रकार पाया जाता हैं।
A. प्रश्नचित B. निराशावादी C. चिड़चिड़े D. अस्थिर संवेगात्मक रूप से

II कर्मशील :-
हर समय कार्य करने वाले जैसे :- रचनात्मक, कलाकार, खिलाड़ी, सिपाही, पहलवान,

III विचारशील :- दिल से ज्यादा दिमाग की सुनते हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Note:- वार्नडाइक ने चिन्तन व कल्पना के आधार पर तीन प्रकार बताये हैं-

1. सूक्ष्म विचारक
2. प्रत्यक्ष विचारक / विचार प्रधान
3. स्थूल विचारक

8. व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक प्रकार:-

युंग या जुंग के अनुसार- (मनोवैज्ञानिक प्रकार)

पुस्तक - 'साइकलोजिकल टाइप'

इनके अनुसार तीन प्रकार →

1. अन्तर्मुखी
2. बहिर्मुखी
3. उभयमुखी

	अन्तर्मुखी	बहिर्मुखी
1.	जो अपने आप तक सीमित रहते हैं- आत्मकेन्द्रित	जो बाह्य रूप से प्रकट होते हैं, दूसरो पर केन्द्रित, लोककेन्द्रित
2.	कम बोलने वाला - मितभाषी	वाचाल
3.	एकान्तवासी	समूह के मध्य रहते हैं।
4.	सामाजिकता का अभाव	अत्यन्त सामाजिक
5.	मनोविनोद का अभाव (हँसी-मजाक)	अत्यंत मनोविनोदी
6.	निराशावादी	आशावादी
7	लेखन प्रभावी	भाषण प्रभावी
8.	विचार प्रधान	कार्य प्रधान व भ
9.	शर्मीलापन	शर्मीलेपन का अभाव
10.	निर्णय शक्ति कमजोर	निर्णय शक्ति उत्तम
11.	अध्ययन में विशेष योग्यता	सामान्य
12.	मानसिक शक्तियों का विकास विशेष रूप से	सामान्य रूप से
13.	ये आदर्शवादी होते हैं।	ये भचार्चवादी होते हैं।

Teacher's Signature .....

Scanned with CamScanner

14.	चिन्ता मुक्त	चिन्ता मुक्त होते हैं।
15.	दोस्तों का अभाव	अत्यधिक दोस्त
16.	समायोजन शक्ति कमजोर	उत्तम समायोजन शक्ति
17.	परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार नहीं।	अनुकूल व्यवहार
18.	आध्यात्मिक व साहित्य प्रधान दार्शनिक, लेखक, वैज्ञानिक	सामाजिक व राजनैतिक प्रधान राजनेता, गुरुजी

उभयमुखी -
अर्न्तमुखी व बर्हिमुखी का मिश्रण ।→ उभयमुखी

व्यक्तित्व के अन्य प्रकार:-

A व B टाईप- फ्रीडमैन। रोजे मैन

टाईप A:-
निराशावादी, धैर्य का अभाव, उतावलापन, हृदय रोग से ग्रस्त, उच्च स्तरीय अभिप्रेरणा का अभाव और रक्त चाप से ग्रसित व्यक्ति इसमें आते हैं। कार्य के बोझ से लदे रहते हैं।

टाईप B:→ टाईप A वाली विशेषताओ का अभाव होना B हैं।
आशावादी, उत्साही, अभिप्रेरणा युक्त

टाईप C:→ मॉरिस ।
कैंसर रोग के प्रति संवेदनशील ।

टाईप D:→ अवसाद ग्रस्त। तनाव ग्रस्त। खालीपन
प्रतिपादक - डेमोलेट

डुलईन-2 से रहना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

टाईप H:→ कोबासा।
मनोवैज्ञानिक रूप से कठोर। वचनबद्ध, नियन्त्रण की भावना से युक्त, चुनौतिपूर्ण

टाईप T:→ फ्रेंक कॉरले - जोखिमपूर्ण कार्य करने वाला, ये सृजनात्मक और विध्वंसात्मक भी होती हैं।

नोट:- तथा आइजैंक ने भी व्यक्तित्व के अर्न्तमुखी और बहिर्मुखी प्रकार बताये हैं। (Reet 2018, L-I)

नोट:- बुद्धि के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण टरमन ने किया हैं।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक:-

1. वंशानुक्रम:-
नोट:- फ्रांसिसी गाल्टन ने वंशानुक्रम को व्यक्तित्व विकास में सबसे महत्वपूर्ण माना हैं।

2. वातावरण:-
वातावरण के प्रकार - उ

I. भौतिक वातावरण- ठंडी व गर्म जलवायु का प्रभाव, तापमान, भौतिक प्रदेश
II. सामाजिक वातावरण-
परिवार का प्रभाव - परिवार की संरचना, माता-पिता का व्यवहार, आर्थिक स्थिति, पालन-पोषण की विधि, जन्म के क्रम का प्रभाव

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

नोट:- एडलर के अनुसार "मध्यम जन्म क्रम का व्यक्तित्व सबसे संतुलित व श्रेष्ठ होता है।"

विद्यालय का प्रभाव
पड़ौसियों का प्रभाव
सिनेमा साहित्य

good

(ii) सांस्कृतिक वातावरण:→ नोट:- मार्गरीड, मीड व रूथबेंटिक ने आदिम जातियों का अध्ययन करते हुए यह बताया है कि संस्कृति व्यक्तित्व का निर्धारक तत्व है। (नागालैण्ड की)

3. अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियाँ:- जैसे- पीयुष ग्रन्थि के कम सक्रिय होने पर व्यक्ति बौना हो जाता है तथा ज्यादा होने पर अत्यधिक लम्बा हो जाता है।

4. शारीरिक संरचना व स्वास्थ्य का प्रभाव:- सुन्दर व स्वस्थ शरीर में आत्मविश्वास अधिक पाया जाता है।

5. लिंग का प्रभाव- बालक व बालिका का स्वभाव, कार्यशैली व व्यक्तित्व भिन्नता पायी जाती है।

6. स्नायु मण्डल (नाड़ी संस्थान):- यह हमारे मानसिक विकास को प्रभावित करता है।

7. मनोवैज्ञानिक कारक:- जैसे- रुचि, आदतें, आकांक्षा, बुद्धि, मूलप्रवृतियाँ, मनोवृति, अभिवृति, स्मृति आदि

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 11

व्यक्तित्व का मापन –

आत्मनिष्ठ | वस्तुनिष्ठ | प्रक्षेपण/प्रक्षेपी | मनोविश्लेषण

I. आत्मनिष्ठ विधियां – व्यक्तिनिष्ठ – जॉन लॉक

1. आत्म निरीक्षण विधि :– आदि जनक – विलियम वुण्ट / टिचेनर – प्रतिपादक

मनोविज्ञान की पहली व प्राचीन विधि जिसमें व्यक्ति स्वंय अपना निरीक्षण करता हैं। इस विधि के द्वारा प्राप्त परिणामों में वस्तुनिष्ठता व वैज्ञानिकता का अभाव पाया जाता हैं।

नोट :– इसकी आलोचना विलियम जेम्स ने करते हुए लिखा हैं कि इसके द्वारा व्यवहार का अध्ययन करना ठीक वैसा ही हैं जैसे – अंधकार को जानने के लिए लाइट को जला देना।

2. व्यक्ति इतिहास विधि / जीवन इतिहास / केस स्टडी →

मैदानिक विधि. प्रतिपादक – टाइडमैन, 1787
इस विधि में बच्चे के भुतकाल से लेकर वर्तमान काल तक के इतिहास का अध्ययन किया जाता हैं। जैसे – प्रतिभाशाली मंदबुद्धि, पिछड़े बाल अपराधी, समस्यात्मक, अलाभान्वित बच्चे।

3. प्रश्नावली विधि :→ आदि जनक – सुकरात

मनोविज्ञान में शुरुआत / प्रतिपादक – वुडवर्थ

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

प्रश्नावली विधि चार प्रकार की होती हैं -
1. मुक्त प्रश्नावली / खुली प्रश्नावली
2. प्रतिबंधित प्रश्नावली / बंद प्रश्नावली
3. चित्रित प्रश्नावली
4. मिश्रित प्रश्नावली

4. **साक्षात्कार :-** आमने सामने बैठकर विचारों का आदान प्रदान करना साक्षात्कार कहलाता हैं यह दो प्रकार का होता हैं।

(i) संरचित / औपचारिक → पहले से निर्धारित
(ii) असंरचित / अनौपचारिक → पहले से निर्धारित नहीं

Gurm Narendra 9413566680

II. **वस्तुनिष्ठ विधियां :-**

प्रेक्षण विधियां -

1. **निरीक्षण विधि :-**

प्रतिपादक → वाटसन / बाण्डुरा

इस विधि का प्रयोग छोटे बालक, जानवरों व पागल व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करने में किया जाता हैं। निरीक्षण तीन प्रकार का होता हैं -

(i) सहभागी निरीक्षण — मिलकर साथ काम करते हुए निरीक्षण करना
(ii) असहभागी निरीक्षण — बिना साथ रहे निरीक्षण करना।
(iii) स्वभाविक निरीक्षण — ये स्वतंत्र निरीक्षण व वास्तविक होता हैं।

2. **रेंटिंग स्केल या निर्धारित मापनी :-**

प्रथम प्रयोगकर्ता - फैक्नर

प्रतिपादक - गाल्टन 1883

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

इसमे तीन या पाँच बिन्दुओ के आधार पर व्यक्तित्व का मापन होता हैं। गिलफोर्ड व फ्रीमैन ने इसका प्रयोग किया हैं

3. **समाजमिति विधि:-** जे. एल. मोरेनो, 1934

इस विधि के द्वारा समुह की संरचना का अध्ययन करके श्रेष्ठ, तटस्थ, व खराब व्यक्तित्व का पता लगाया जाता हैं।

4. **परिस्थिति परीक्षण:-**

इसमें दो स्थितियों में रखकर मापन किया जाता हैं-

वास्तविक परिस्थिति व काल्पनिक परिस्थिति

II. प्रक्षेपी विधियाँ →

प्रक्षेपण विधि :→

फ्रायड ने व्यक्तित्व के रक्षा कवच के रूप में प्रक्षेपण विधियों का सबसे पहले प्रयोग किया।

प्रक्षेपण का अर्थ है- फेकना. इसके द्वारा अचेतन मन में दबी हुई या दमित इच्छाओ का पता लगाया जाता हैं।

(I) स्याही धब्बा परीक्षण :→

IBT - Ink Blot Test

प्रतिपादक - हरमन रोर्शा (स्विजरलैण्ड) 1921

कुल कार्ड संख्या = 10

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

5 = काले व सफेद
2 = काले व लाल
3 = विविध रंग

इस परीक्षण में चार बिन्दुओ के आधार पर मापन किया जाता हैं-

1. स्थिति :- पुरे भाग के प्रति या आंशिक भाग के प्रति

2. विषय-वस्तु :- मनुष्य पशु या अन्य कोई चीज ।

3. मौलिकता :- हटकर कोई आकृति ।

4. निर्धारक :- रंगों के प्रति

→ Note :- यह परीक्षण छोटे-बच्चो के लिए उपयुक्त नही हैं।

→ इसके द्वारा व्यक्तित्व के मानसिक, भावात्मक तथा सामाजिक तत्वो का मापन किया जाता हैं।

→ यह एक व्यक्तिनिष्ठ विधि है इसमें समय बहुत अधिक लगता हैं।

→ यह व्यक्तिगत रूप से होता हैं।

होल्टजमैन ने 1961 में इसका प्रतिरूप बताया।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

2. **TAT विधि →** Thematick Apprecaption Test

प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण ← (II Jan 2017) (Reet 2016)
कथानक बोध परीक्षण, विषय आत्मबोधन परीक्षण

प्रतिपादक – मार्गन व मुर्रे (अमेरिका) – 1935
संशोधन – 1938
कुल कार्ड = 30+1

10 – पुरुष
10 – महिला
10 – महिला/पुरुष
1 – खाली कार्ड

भारत में अनुवाद – उमा चौधरी = 1960 में

एक बार में 19+1 कार्ड का प्रयोग होगा।
इस परीक्षण के दौरान चार बिन्दुओं के आधार पर मापन किया जाता है एवं बालक की आवश्यकता, अभिवृत्ति, समायोजन शक्ति, दृष्टिकोण, का पता लगाया जाता है।

3. **CAT विधि →** Child Apprecaption Test

बालक अन्तर्बोध परीक्षण
प्रतिपादक – लियोपोल्ड बैलक (अमेरिका) → 1948

1951 में विकास अर्नेस्ट क्रिस द्वारा
3 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी।

भारत में अनुवाद – उमा चौधरी – 1960

Teacher's Signature : .....

Narendra Poonia 9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 16

कार्ड – 10 , चित्र – जानवरों के

इस परीक्षण के द्वारा बालक की आवश्यकताओं, अभिवृति, समायोजन शक्ति, भावात्मक तत्व, तथा सामाजिक विशेषताओं का पता लगाया जाता है।

4. **F.W.A.T (स्वतंत्र शब्द साहचर्य परीक्षण) :→**

→ फ्रांसिस गॉल्टन – 1879
→ 75 शब्दों की सूची जारी की।
→ बाद में विकास – युंग व फ्रायड ने
→ वर्तमान में शब्दों की संख्या – 100

5. **S.C.T (वाक्य पूर्ति परीक्षण)→**

→ प्रतिपादक – पाम्ने / टेण्डलर (1930)
→ 40 अधूरे वाक्यों को पूरा करना होता है।
→ 14 से 19 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी

→ विश्व में सर्वप्रथम प्रयोग → एबिंगहास
→ भारत में इसका अनुवाद – एल. एन दुबे व अर्चना दुबे ने किया (1987)

6. **S.A.T (प्रौढ बोध परीक्षण)→**

→ प्रतिपादक – लिओपोल्ड बैलक
→ कार्ड संख्या – 16
→ 50 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिए।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 17

7. मोजेक परीक्षण → मार्गरेट लोवेन फील्ड
लकड़ी की 465 आकृतियाँ होती हैं।

8. चित्र कहानी बनाओ परीक्षण → स्नीडमैन
22 चित्र देखकर कहानी लिखनी होती हैं।

9. घर पेड़ व्यक्ति परीक्षण → बंक

10. डी. ए.पसन परीक्षण → मैक होवर
इसमें व्यक्ति की आकृति बनानी होती हैं।

11. तस्वीर कुण्ठा परीक्षण → रोजनवीग
24 चित्र होते हैं।

12. आत्म बोध परीक्षण → रॉबर्ट्स
इसमे 27 चित्र होते हैं।

13. सजोन्दी परीक्षण → 48 फोटोग्राफ होते हैं, इन्हे क्रमबद्ध करना होता हैं।

14. मनोनाटकीय / खेल विधि → जे० एल० मोरेनो

15. मनोविश्लेषण विधि → फ्रायड
ए. स्वंतत्र साहचर्य विधि – जो कुछ मन में आये वो कहना
ब. स्वप्न विश्लेषण विधि –
(3). शब्दों को मिलाने की विधि –

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व आविष्कारिका –

यह व्यक्तित्व मापन की प्रत्यक्ष विधि होती हैं, इसके द्वारा कुछ विशेष गुणों का मापन किया जाता हैं।

सर्वप्रथम 1918 में वुडवर्थ ने सैनिको की संवेगात्मक अस्थिरता का मापन करने के लिए इसका निर्माण किया।

इसमें 116 प्रश्न थे।

Imp

MNPI :- (मिनीसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व अनुसची) →

हाथवे। मैकिन्ले ने 1940 में इसका निर्माण किया।
व 1943 में प्रकाशित हुई।

→ इसमें 567 कथन होते हैं।

→ 10 नैदानिक मापनी व 3 वैधता मापनी होती हैं।

→ कैटल ने व्यक्तित्व आविष्कारिका का निर्माण किया। जिसे 16 P.F प्रश्नावली कहा जाता हैं। यह 16 कारको का मापन करती हैं।

Imp

व्यक्तित्व के सिद्धान्त / उपागम –

1. **मानवतावादी सिद्धान्त :-** मैस्लो। रोजर्स

यह सिद्धान्त मानव की श्रेष्ठता, गरिमा, स्वतंत्रता व आत्मसिद्धि पर बल देता हैं।

2. **विमीय उपागम →**

(a) **आइजेंक का सिद्धान्त –** आइजेक ने व्यक्तित्व के

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

तीन आयाम बताये हैं-
(a) अन्तर्मुखी बनाम बहिर्मुखी
(b) भावात्मक स्थिरता बनाम भावात्मक अस्थिरता
(c) अवसादग्रस्त

b. पॉलकोस्टा। रोबर्ट मैक्रे का पंचकारक मॉडल →
(i) अनुभवों के लिए खुलापन
(ii) विवेकशीलता
(iii) सहमतिशीलता
(iv) तंत्रिका तापिता
(v) बहिर्मुखता

3. शीलगुण उपागम। भावचित्रात्मक →
प्रतिपादक - आलपोर्ट
Q. व्यक्तित्व के अनोखेपन पर बल दिया हैं- आलपोर्ट ने तीन प्रकार के गुण बताए है
(i) कार्डिनल → महान व्यक्तियों में पाया जाने वाला गुण जैसे गाँधीजी में सत्य व अहिंसा।
(ii) केन्द्रीय गुण → सभी में (कम या ज्यादा हो सकता हैं) जैसे - आत्मविश्वासी, सामाजिकता
(iii) गौण गुण → विशिष्ट हेयर स्टाईल, कपड़े पहनना, चलना, बोलना।
इसने दो अन्य Concept बताए है (आलपोर्ट ने) →
(a) कार्यात्मक स्वायत्तता - वह गुण जिसके द्वारा हम एक बार लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं, कालान्तर में वह गुण स्वतंत्रता प्राप्त कर लेता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(6.) **प्रोपियम**– विभिन्न प्रकार के गुणों को संगठित करने वाला प्रोपियम कहलाता है। जैसे– विवेक।

4 **प्रतिकारक उपागम**→ कैटल
2 प्रकार बताये है–
(i) सामान्य व्यक्ति – 23 गुण
(ii) असामान्य व्यक्ति → 12 गुण
→ प्रधान गुण। कारक 16 होते हैं।

guru

वे गुण जो तुरन्त प्रकट हो जाते हैं, जैसे– सत्यनिष्ठता, परोपकारिता, दयालुता, प्रसन्नता इत्यादि, ये सतही गुण कहलाते हैं। (कैटल ने बताया)

5. **जीवन अवधि उपागम**→ इरिक इरिक्सन
इसके अनुसार व्यक्तित्व का विकास जीवन पर्यन्त चलता है

6. **सामाजिक संज्ञानात्मक उपागम**→ बाण्डुरा। वाल्टर
इसके अनुसार व्यक्तित्व अनुकरण व पर्यावरणीय कारकों से सबसे अधिक प्रभावित होता है।

Book- सामाजिक अधिगम व व्यक्तित्व का विकास

7. **माँग सिद्धान्त**→ हेनरी मुर्रे
इसके अनुसार व्यक्तित्व 40 कारकों से प्रभावित होता है।

8. **स्वप्रत्यय। सांवृतिक उपागम (घटना शास्त्र पर आधारित)**→ कार्ल रोजर्स
पूर्ण प्रकार्यशील व्यक्तित्व उपागम। सिद्धान्त – खुद अपनी योग्यता पर लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है।

Teacher's Signature : .....

Gurmeet Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

9. **संज्ञानात्मक उपागम** → कैली। कुर्त लेविन
इसके अनुसार हम वातावरण का प्रत्यक्षीकरण कैसे करते हैं, समस्याओं का समाधान कैसे करते हैं व अपना मूल्यांकन कैसे करते हैं, पर बल दिया जाता हैं।

मनोविश्लेषणवाद :-

(i) व्यक्तित्व की संरचना :-

I. आकारात्मक मॉडल (मनोगतिकी उपागम) :-

(A) मन के प्रकार —

a. **चेतन मन** → कूल मन का 1/10 वां भाग,
→ इसका संबंध व्यक्तिगत, सामाजिक, व नैतिक इच्छाओं से होता हैं।
→ इसकी तुलना बर्फ के टुकड़े के ऊपरी हिस्से से की जाती है
→ इसका संबंध तात्कालिक जानकारी से होता हैं।

b. **अर्द्धचेतन/अवचेतन** :- ना चेतन ना अचेतन जैसे- किसी को कोई वस्तु देकर भूल जाना। प्रयास करने पर याद आ जाना

c. **अचेतन** :- कूल मन का 9/10 वां भाग।
→ सर्वाधिक प्रभावित करने वाला मन,
→ यह गत्यात्मक व छद्म रूप में होता है।
→ इसका संबंध अनैतिक, असामाजिक व दमित इच्छाओं से होता है, जिनकी पूर्ति हम स्वप्न अवस्था में करते हैं।
→ इसके अन्तर्गत बड़बड़ाना, नींद में बोलना, व चलना, सम्मोहन
इसकी तुलना बर्फ के टुकड़े के निचले हिस्से से की जाती हैं।

इन तीनों भागों को आकारात्मक मॉडल कहा जाता हैं।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 22

II. गत्यात्मक मॉडल (= संरचनात्मक मॉडल) :-

(i) **Id / इदम् / उणाद** →
→ अचेतन मन का स्वामी
→ सबसे पहले या जन्म के समय उत्पन्न होता है।
→ प्राकृतिक वातावरण से उत्पन्न
→ खाओ, पीओ व मौज करो में विश्वास
→ मूल प्रवृति का केन्द्र
→ इसका नैतिकता से कोई संबंध नही होता है।
→ आनन्द के सिद्धान्त से संचालित
→ पशुत्व / राक्षसी प्रवृति

(ii) **Ego / अहम् :→** मन का प्रशासक
→ चेतन मन का स्वामी
→ ना तो पूर्णतया सुखवादी ना ही पूर्णतया आदर्शवादी
→ व्यक्तित्व की कार्यपालक शाखा
→ बुद्धि व तर्क से कार्य करता है।
→ मनोवैज्ञानिक वातावरण से उत्पन्न होता है।
→ यह मानवता का परिचायक है।

(iii) **Super Ego / परम् अहम् / पराह :→**
→ भगवान का / दैवत्व व अंतरात्मा का प्रतीक
→ आदर्शवादी, नैतिकतावादी सिद्धान्तों से संचालित
→ सामाजिक वातावरण से उत्पन्न
→ सहवर्ती इच्छाओं का परिणाम / प्रतीक (प्रेम के बदले प्रेम, जीओ और जीने दे)
→ यह कहता है "यह करो वह मत करो।"
→ इदम् व अहम् पर नियंत्रण, नैतिक समीक्षक।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व का गतिकी मॉडल →

A. मूल प्रवृति :- दो प्रकार
(i) इरोस (जीवन) → रचनात्मककारी
(ii) थेनाटोस (मृत्यु) → आक्रमणकारी / विध्वंसात्मक

Note:→ सिग्मंड फ्रायड ने लिबिडो (काम प्रवृति) को जीवन मूल प्रवृति का आधार माना है।

B. चिन्ताओं के प्रकार :-
(i) वास्तविक चिन्ता - साँप को देखकर डरना
(ii) तंत्रिका तापी चिन्ता - Id को Ego से दण्डित होने का भय
(iii) नैतिक चिन्ता - Super Ego से दण्डित होने का भय

C. अहम् रक्षात्मक प्रक्रम :- फ्रायड
समायोजन स्थापित करने की अप्रत्यक्ष विधियाँ इसमें आती हैं।

guru

मनोलैंगिक विकास →

(i) मुखावस्था :- ओरल स्टेज [0 से 1 वर्ष]
मुख के माध्यम से काम क्रियाएँ करना -
चूषण — दंशन (काटना)
स्तनपान, अंगुठा (0 से 6 माह) (7 से 12 माह) बटका भरना
चूसना

(ii) गुदावस्था (Anal stage) :- 2 से 3 वर्ष
→ मल-मूत्र क्रियाओं में आनन्द लेना।
→ इन क्रियाओं के कम होने पर धारणात्मक व्यक्तित्व (कंजूस) व ज्यादा होने पर आक्रामक व्यक्तित्व बनेगा।

Teacher's Signature : .....
Narendra Poonia 9413566680

Scanned with CamScanner

(iii) लिंग प्रधान अवस्था (Phallic stage) :- 3/4 से 5 वर्ष

ओडिपस (लड़कों में) इलेक्ट्रा (लड़कियों में)
मातृमनोग्रन्थि पितृमनोग्रंथि
लड़के के प्रति माँ का प्रेम लड़की के प्रति पिता का प्रेम

(iv) अव्यक्त / सुषुप्त अवस्था :- 6 से 12 वर्ष
(Latency stage) काम प्रवृति नही होती।

(v) जनेन्द्रिय अवस्था :- 13 वर्ष से लगातार
(Genital stage) समलिंगी व विषमलिंगी प्रेम

Note:→ फ्रायड ने बाल्यवस्था के अनुभव को महत्वपूर्ण मानते हुए अचेतन अभिप्रेरणा पर बल दिया हैं।

नव मनोविश्लेषणवाद →

फ्रायड के शिष्यों ने दिया
इरिक्सन, कार्ल युंग, एडलर, इरिक फ्रोम, सुल्लीवान, केरेन हार्नी, अन्ना फ्रायड।

यह उपागम जैविक कारको की अपेक्षा सामाजिक कारकों पर अधिक बल देता हैं।

1. **कार्ल युंग →** विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की स्थापना कार्ल युंग ने 1913 में की।

Teacher's Signature : .....

Narendra Poonia 9413566680

Scanned with CamScanner

चेतन व अचेतन मन पर बल देता है।

व्यक्तिगत अचेतन — सामुहिक अचेतन पर अधिक बल

इसने व्यक्तित्व के भी प्रकार बताये हैं →
(i) मदर आर्किटाईप
(ii) फादर आर्किटाईप
(iii) हीरो आर्किटाईप
(iv) एनिमस शेडो (खुद की छाया)
(v) परसोना

2. **एडलर** :→ व्यैक्तिक मनोविज्ञान के प्रतिपादक
इसने हीनता मनोग्रंथि शब्द का प्रयोग किया है जो अपर्याप्तता और अपराध बोध की वजह से उत्पन्न होती है।
इसने व्यक्तित्व की एकता शब्द का प्रयोग किया है।
'जीवन शैली' का सम्प्रत्यय दिया है।
पुरुषोचित विरोध का सम्प्रत्यय दिया।

3. **इरिक फ्रोम** :→ मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानते हुए सामाजिक कारकों को अधिक महत्वपूर्ण माना।

4. **केरोन हार्नी** :→ इसने आशावादी छवि पर बल दिया तथा यह कहा कि हमें विपरीत लिंग का सम्मान करना चाहिए

5. **सुल्लीवान** :→ अन्तर व्यैक्तिक उपागम पर बल दिया इसके अन्तर्गत दुसरों के साथ पारस्परिक संबंधो पर बल दिया जाता है।

Teacher's Signature : .....

Written by :- Guru Narendra Poonia
9413566680

Scanned with CamScanner

शिक्षा मनोविज्ञान

समायोजन

(Adjustment)

धीरसिंह धाभाई (असिस्टेंट प्रोफेसर)

लेखक (अवनी शिक्षा मनोविज्ञान)

BOL24.COM

Scanned with CamScanner

समायोजन (Adjustment)

Date .....

Expt. No. .....

यह दो शब्दों से मिलकर बना है सम. + आयोजन
↓ ↓
अच्छी तरह से व्यवस्था करना

परिभाषाएँ :-

Imp. → गेट्स व अन्य के अनुसार- "समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व वातावरण के मध्य सन्तुलन बनाये रखने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

→ एडलर के अनुसार- "समायोजन श्रेष्ठता प्राप्ति का आधार है"

→ स्किनर के अनुसार- "समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।"

→ बोरिंग शेफर व अन्य के अनुसार "समायोजन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं तथा उनको प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक सन्तुलन कायम रखता है।"

→ कॉलमैन के अनुसार- "समायोजन तनाव के साथ व्यवहार करने तथा वातावरण के साथ सुसंगत संबंध बनाने का प्रयास है।"

समायोजन की प्रकृति या विशेषताएँ :→

Imp. समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
(Continual Process)

Teacher's Signature : .....

9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 15

Imp.
→ शारीरिक व मानसिक संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। (Physical and mental balance)

→ समायोजन मनोवैज्ञानिक व शारीरिक दोनो तरह का होता है।

→ समायोजन बहुआयामी होता है- शारीरिक समायोजन, मानसिक व संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक, व्यवसायिक, घरेलु, लैंगिक समायोजन।

समायोजन के प्रकार :-

✡ समायोजन तीन प्रकार का होता है-

1. **रचनात्मक समायोजन** - कुछ रचनात्मक क्रियाएं करके जैसे- पेंटिंग बनाकर समायोजन स्थापित करना।

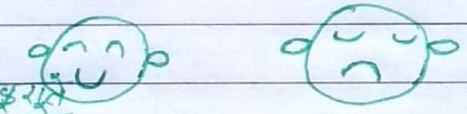

2. **मानसिक मनोरचना** - किसी अवांछनीय लक्षण को वांछनीय के बदे हुए रूप के द्वारा बदल लेना। गलत को अच्छे के द्वारा बदल लेना, झूठ बोलना - Nagative व खुश पढ़ना - positive

3. **स्थानापन्न समायोजन** - दुसरों पर डाल देना। खुद की असफलता को दुसरो पर स्थानान्तरित कर देना

→ समायोजन वातावरण व व्यवहार दोनो में परिवर्तन करता है।

→ समायोजन एक उपलब्धि है।

→ समायोजन मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित अवधारणा है। दोनो साथ-2 चलते हैं।

✡ **समायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ :-**

→ परिस्थितियों के अनुकूल आचरण।

Teacher's Signature : .....

9412566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 16

→ सामाजिकता का गुण पाया जाता है।

→ कार्यक्षमता उत्तम होती है।

→ स्वस्थ रुचियां व अभिवृति।

→ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता।

→ स्वतंत्र निर्णय शक्ति।

→ आत्म-सम्मान की भावना।

→ आत्म-मूल्यांकन की योग्यता।

★ समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक / कुसमायोजन की ओर ले जाने वाले कारक →

क **भग्नाशा / कुण्ठा / अवसाद (frustration) :→** इसमें तनाव, क्रोध चिन्ता, दबाव सब मिले जुले होते हैं। प्रयत्नों के लगातार विफलता की स्थिति कुण्ठा

कार्टर / गुड के अनुसार → "किसी इच्छा या आवश्यकता की पुर्ति में बाधा के आने से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव कुण्ठा कहलाता है।"

कोलसैनिक के अनुसार - "व्यक्ति द्वारा महत्वपूर्ण समझी गई आवश्यकता के अवरुद्ध होने की प्रक्रिया भग्नाशा कहलाती है"

भग्नाशा के प्रकार — दो प्रकार

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 17

1. **आन्तरिक भग्नाशा** – स्वंय की कमी की वजह से उत्पन्न होने वाली।
काश ये मैं नही करता। स्वंय जिम्मेदार हूँ।

2. **बाह्य भग्नाशा** – दुसरे व्यक्ति की वजह से उत्पन्न होने वाली भग्नाशा। बाहरी कारक की वजह से।

✡ **कारण** – **Causes of frustration :-**

(1.) **बाह्य कारण** – (1) भौतिक वातावरण → बाढ, भुकम्प, सुनामी, तुफान वर्षा।
(2) सामाजिक वातावरण → परम्पराऐ, नियम। किसी को आप बहुत चाहते हो
(3) आर्थिक वातावरण → निर्धनता, पैसा
(4) अन्य व्यक्ति - दो के बीच तीसरा आ गया, बीच में किसी भी रूप में आ सकता है।

2. **आन्तरिक कारण** →
भग्नाशा का सबसे बड़ा आन्तरिक कारण
1. मानसिक संघर्ष – निर्णय नही ले पाना
2. विरोधी इच्छाए या विरोधी आवश्यकताए – विचारो में प्रतिद्वन्दता एक तरफ घुमना एक तरफ खाना
3. असंगत आवश्यकताऐ। – जो जरूरी नही हो, जैसे मोबाइल, गाड़ी क्लास बिचार
4. शारीरिक दोष। → विकलांग बच्चा साथी को खेलते हुए देखकर खुद में भी खेल पाता
5. नैतिक आदर्श। → किसी भूखे बच्चे के लिए चोरी करना
6. विरोधी उद्देश्य →

भग्नाशा के लक्षण :-

खोये-खोये रहना एकान्तवासी बन जाना।
बीमारी का बहाना बनाना, रोगग्रस्त होने की बात करना।
हिम्मत नहीं है। आक्रमणकारी बन जाना। तोड़फोड़ करना मोबाइल तोड़ना
लटक जायेगा आत्म समर्पण कर देना
जहन्नुम या जन्नत में फेंकेगा

नोट :- भग्नाशा मापने वाले विद्वान – रोजनवीग

Teacher's Signature : .....

"टेस्ट का नाम – तस्वीर कुंठा परीक्षण"

Scanned with CamScanner

रोजनवीग ने तस्वीर कुंठा परीक्षण का निर्माण किया।
कार्टून संख्या - 24

नोट- ओलार्ड मीलर ने आक्रामकता का कारण कुण्ठा को माना है। कुण्ठा आक्रामकता की अवधारणा दी है।

(ख) **तनाव (Tension):-** दुख नही लगता, ज्यादा खाऐगा, बस में किसी ने सीट क्यो दी, तनाव हो गया
जब व्यक्ति वातावरण ——— की माँग के अनुसार व्यवहार नही कर पाता है तो वह तनाव का शिकार हो जाता है।

गेट्स व अन्य के अनुसार- "तनाव असंतुलन की स्थिति है जो व्यक्ति को उत्तेजित दशा का अन्त करने के लिए प्रेरित करती है।"

(ग) **दुश्चिन्ता (Anxiety):-** व्यक्तित्व की रक्षा
उपभुक्त अहं रक्षा न अपनाने के कारण चेतन तथा अचेतन के मध्य संघर्ष से उत्पन्न, भय व आशंका की अवस्था। जिसके कारण व्यक्ति दुश्चिन्ता का शिकार हो जाता है
यह दो प्रकार की होती है-
(1) सामान्य दुश्चिन्ता Normal tension (2) आतंक दुश्चिन्ता (फोबिया) पानी से, पेड़ से डर लगना

(घ) **दबाव (Stress):-** कुछ बच्चे wall बच्चे की तरह कोई फर्क नही पड़ता, कुछ फटबुल बल की तरह, - जैसे चलते-चलते रोगी से टकरा जाना
Stress की उत्पति Stringere से हुई है जिसका अर्थ है "कसना" ⇒ Exam आते ही
दो प्रकार का होता है-
(1) सकारात्मक (युस्ट्रेस) (2) नकारात्मक (डिस्ट्रेस)
डर नही लगता परीक्षा का उत्साह — में लड़किया में Teacher's Signature : ..... व लड़को में कम

selection mental stress पर निर्भर करता है

Scanned with CamScanner

अन्य दबाव के प्रकार–

(i) भौतिक दबाव – मौसमी वातावरण के अनुकूल नहीं बना पाना। बहुत ज्यादा गर्मी व सर्दी

(ii) मनोवैज्ञानिक दबाव – खुद की इच्छाओं का दबाव

(iii) सामाजिक दबाव – रीति-रिवाज, परम्परा, आडम्बर

दबाव अनुसंधान के जनक – हेनरी सेल्वे

नोट:- दबाव मापनी का निर्माण – हॉलमश/राहेनिकिया ने किया

दबाव का प्रभाव :–

(i) शारीरिक प्रभाव

(ii) संज्ञानात्मक / मानसिक प्रभाव – कल्पना, ध्यान केन्द्रित नहीं होना।

(iii) संवेगात्मक प्रभाव

(iv) व्यवहारिक प्रभाव – व्यवहार चिड़चिड़ा, अनिद्रा।

नोट:- दबाव की तकनीक लैजारस / फोकमैन ने दी है, यह दो प्रकार की होती है।–

(i) समस्या केन्द्रित (ii) संवेग केन्द्रित

(5.) संघर्ष / द्वन्द्व (Conflict) :–

→ डगलस व हॉलैण्ड के अनुसार "दो विरोधी या विरोधी उद्देश्यों की वजह से उत्पन्न होने वाली कष्टदायक संवेगात्मक दशा / द्वन्द्व है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 20

शैफर के अनुसार – "द्वन्द्व वह स्थिति है जब दो ऐसी इच्छाएं उत्पन्न हो जाती हैं जिनकी पुर्ति एक साथ संभव नहीं।

फ्रायड के अनुसार – "ईड, ईगो व सुपर इगो में समन्वय का अभाव होना द्वन्द्व कहलाता है।"

द्वन्द्व। संघर्ष के प्रकार –

(i) उपागम – उपागम संघर्ष (Approach पहुँच, पद्धति) – दो सकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष। जैसे – दो सुन्दर लड़कियों में से एक को जीवन साथी चुनने में होने वाला संघर्ष

(ii) परिहार – परिहार संघर्ष (Avoidance त्याग, वर्जन) – दो नकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष। जैसे – ना पढ़ना चाहता है ना ही मैच देखना चाहता है।

(iii) उपागम – परिहार संघर्ष (पद्धति वर्जन) — एक सकारात्मक व दुसरा नकारात्मक विचारों में होने वाला संघर्ष। जैसे :- गाड़ी खरीदनी है लेकिन पैसे नहीं देना है।

(iv) बहु – उपागम – परिहार संघर्ष – दो या दो से अधिक सकारात्मक व नकारात्मक में होने वाली स्थिति।

समायोजन की विधियां। युक्तियां →

दो प्रकार –

(i) प्रत्यक्ष (जो दिखता है, सामने होता है।) (ii) अप्रत्यक्ष

(i) प्रत्यक्ष विधियाँ →

चार प्रकार –

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 21

1. बाधा को हटा देना। बाधा का विनाश → बेसिक को हटा दे, रास्ते के पत्थर को हटा देना
2. अन्य उपाय की खोज। - side से निकल जाना
3. लक्ष्य का प्रतिस्थापन - (Reet 2012, L-2)
4. व्याख्या करके निर्णय लेना या विश्लेषण एवं निर्णय

(ii) **अप्रत्यक्ष विधि →**

अन्य नाम - मानसिक मनोरचना / अहम् रक्षात्मक प्रक्रम / व्यक्तित्व का रक्षा कवच

अप्रत्यक्ष विधियाँ दो प्रकार की होती है -
(i) प्रधान युक्तियाँ (ii) गौण युक्तियां

(क) **प्रधान युक्तियाँ :-** ← Primary mental mechanisms

(1) **युक्तिकरण / औचित्यस्थापन / परिमेयकरण / तार्किकरण →** (Rationlisation) Reet 2018, L-I
student life में सबसे अधिक प्रयोग

अपनी असफलता के पीछे कोई भी तर्क संगत कारण तलाश करके उसका औचित्य स्थापित करना - मैं बनना ही नहीं चाहता, पेपर आउट हो गया नौकरी उसके योग्य नहीं थी, जैसे - अंगूर खट्टे हैं, नीबू मीठे हैं। पापा ने मुझे टीचिंग की जॉब पसन्द नहीं है मैं तो ज्यादा की दुकान खोलूंगी और अपना बिजनेस करूंगी; लॉजिक ऐसा ढूंढो, साथ में इमोशन होना, इस दिन खाना नहीं खाया।

(2) **दमन (Repression) →** इस युक्ति के अन्तर्गत किसी दुखमयी घटना, विचार या व्यक्ति को बिना जानकारी के अचेतन मन में भेज देना वक्त के साथ। कुछ लोग जिन्दगी में ऐसे आते हैं जिनके अलावा हम सोच भी नहीं सकते उसके बिना जीना पड़े अन्दर दर्द था फिर भी भुला देना, वक्त बड़े से बड़े घाव को भी भर देता है, कुंदाने में भी मिलोगे तो नजरे मुस्कुरा देगी।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 22

(3.) **शमन (Supression) :-** इस युक्ति के अन्तर्गत सचेतन रूप से जबरदस्ती या बलपूर्वक घटनाओं को दबा देना या भूल जाना। इतना घटिया इंसान अपनी लाईफ में नहीं देखा, नफरत का भाव आता है, उसे याद नहीं करना चाहते, जिसने घटकन मूर्ती देखी है उसने यह मध्युसविग्रा है

(4.) **प्रतिगमन / प्रत्यावर्तन (Regression) :-** पीछे की ओर लौटना इस युक्ति में व्यक्ति छोटे बच्चे के समान व्यवहार करके समायोजन स्थापित करता है।

यह दो प्रकार के रूप में होती है -

(i) अहन् प्रतिगमन (ii) यौन प्रतिगमन

इस युक्ति में व्यक्ति जैसे - दस वर्ष का बच्चा 6 माह के बच्चे के समान घुटने के बल चलता है। जैसे- अंगूठा चूसना।

(5.) **उदात्तीकरण / शोधन / मार्गान्तीकरण (Sublimation) :-** उन्मोचन इस युक्ति में व्यक्ति गलत या अस्वीकृत इच्छा को स्वीकृत इच्छा के रूप में बदल लेता है। जैसे - एक बहुत बड़ा बदमाश व्यक्ति बहुत अच्छा मुकेश बाज बन जाता है

नोट :- यह सबसे अधिक रचनात्मक युक्ति मानी जाती है।

(6.) **प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction formation) :-** विपरीत रचना मन में अन्तर्निहित इच्छा के बिल्कुल विपरीत व्यवहार करना

→ जैसे - मन बनावे मुँह दिखावे।

→ मुँह मे राम बगल में छुरी।

एक भ्रष्टाचारी नेता द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध भाषण देना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 23

(Conversion)-

(7) रूपान्तरण :- व्यक्ति तनाव को शारीरिक लक्षण के रूप में बदल लेता है। जैसे- बीमारी में पलायन

(ii) गौण युक्तियाँ (Secondary Mental mechanisms)

(1) Compensation (क्षतिपूर्ति) :→ इस युक्ति में व्यक्ति किसी अपनी अयोग्यता को किसी दुसरी योग्यता से ढक लेता है, जैसे- एक विकलांग बालक कक्षा में प्रथम स्थान लाकर समायोजन स्थापित करता है।

(2) प्रेक्षपण (Projection) :- स्वंय की कमी या दोष को दुसरे व्यक्ति या परिस्थिति विशेष पर डाल देना। जैसे- नाच न जाने आँगन टेढ़ा, अपनी असफलता का दोष असहयोगी कारकों को देना। चरित्रहीन व्यक्ति अपनी पत्नी पर चारित्रिक दोषारोपण करता है।

(3) आत्मीकरण / तादात्मयकरण (Identification) :- इस युक्ति में व्यक्ति अपने किसी आदर्श व्यक्ति के गुणों या अवगुणों का आदर करना प्रारम्भ कर देता है जैसे- फिल्म अभिनेता की नकल करना, व्यापार में असफल होने पर सफल व्यापारी की नकल करना।

4. अन्तः क्षेपण (Introjection) :→ स्वंय को आदर्श व्यक्ति के व्यक्तित्व का हिस्सा बना लेना अन्तः क्षेपण, दुसरों की विशेषताओं को अपने अन्दर देखना

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

5. विलोपन :→ (Withdrawal) :-

अन्य व्यवहार - विनिवर्तित व्यवहार। पलायन भावी असफलता से डरकर उस क्रिया या कार्य से स्वंय को अलग कर लेना। जैसे- परीक्षा में असफलता के भय से पेपर देने नही जाना।

6. नकारात्मक व्यवहार :→ (Negativion)

नियम विरोधी या समाज विरोधी व्यवहार करके अपने महत्व को स्थापित करना।
जैसे-प्रतिबंधित स्थान पर गाड़ी चलाना, नियम तोड़ना

7. सहानुभूति :→ (Synpathism)

इस युक्ति में व्यक्ति दुःखद स्थितियों में दुसरों की सहानुभूति अर्जित करता है, अपनी दयनीय स्थिति का उल्लेख करके - जैसे अपनी आर्थिक स्थिति का दुखड़ा रोना।

8. आक्रामक व्यवहार :→ (Aggression Behave) :-

दो प्रकार -

(i) प्रत्यक्ष → मूल व्यक्ति या वस्तु पर गुस्सा उतारना।
(ii) अप्रत्यक्ष। विस्थापन (Displacement) → दुसरे व्यक्ति या वस्तु पर गुस्सा उतारना जैसे - पिता द्वारा पिटाई होने पर छोटे भाई को पिटना।

9. मनतंरग ॥ कल्पनातंरग → दिवास्वप्न (daydriminy)

हवाई किले बनाकर समायोजन स्थापन करना।

Written by :- Guru Narendra Poonia 9413566680

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

कुसमायोजन (Mal Adjustment)

Date .....

Expt. No. .....

Page No. 25

परिभाषा –

गेट्स व अन्य के अनुसार – "कुसमायोजन व्यक्ति व वातावरण के मध्य असन्तुलन का उल्लेख करता है।"

कुसमायोजन तीन प्रकार का होता है –

1. **साधारण कुसमायोजन :–** जैसे चोरी करना, झुठ बोलना, घर से भाग जाना।

2. **गंभीर कुसमायोजन :–** लम्बे समय तक मानसिक संघर्ष का समाधान नही कर पाना जैसे – न्यूरोसिस, हिस्टीरिया

3. **अत्यधिक गंभीर कुसमायोजन :–** भावनात्मक रूप से असंतुलन या पागलपन जैसे – मनोविदालिता, साइकोसिस

कुसमायोजित बालको के लक्षण :–

→ एकान्तवासी।
→ दोस्त नही बनाना।
→ चिड़चिड़ा स्वभाव होना।
→ निराशावादी
→ आत्म विश्वास का अभाव
→ चोरी करना
→ झुठ बोलना

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ घर से भाग जाना
→ गृह कार्य नही करना
→ अंगूठा चूसना
→ पैर हिलाना
→ अंगुलियाँ हिलाना
→ कोधी व्यवहार
→ गाली-गलौच करना
→ हकलाना-तुतलाना

कुसमायोजन के कारण-

1. व्यक्तिगत कारण :- शारीरिक दोष / रोग

→ निम्न बुद्धि लब्धि
→ वंशानुक्रम संबंधी दोष
→ ग्रन्थि विकार

2. पारिवारिक कारण :-

→ उपेक्षापूर्ण व्यवहार ।
→ अत्यधिक लाड-प्यार ।
→ आवश्यकताओ की पुर्ति नही होना ।
→ निर्धनता
→ माता-पिता का सौतेला-व्यवहार
→ लड़ाई-झगड़े
→ परिवार का टुट जाना
→

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 27

3. **सामाजिक कारण :-**

समाज की संरचना (जातिवाद, वर्ग, भेदभाव, साम्प्रदायिकता, दुषित साहित्य, टी.वी, पड़ौसी, समुह)

4. **विद्यालय संबंधी कारण :-**

→ विद्यालय का निरकुंश वातावरण
→ अमनोवैज्ञानिक विधियाँ
→ दोषपूर्ण पाठ्यक्रम
→ दोषपूर्ण मूल्यांकन
→ शिक्षको का पक्ष-पात व्यवहार

5. **वातावरण संबंधी कारण :-**

1. भौतिक वातावरण
2. सामाजिक वातावरण
3. सांस्कृतिक वातावरण

✡ **कुसमायोजित बच्चों के साथ शिक्षक का व्यवहार :-**

1. निदानात्मक- उपचारात्मक विधि का प्रयोग → कारणों का पता लगाकर समाधान करना।
2. प्रेम, सहयोग, सहानुभूति व सकारात्मक अभिवृति का विकास
3. व्यंग्यात्मक टिप्पणी न करना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 28

4 अच्छे उदाहरण व आदर्श प्रस्तुत करें।

5 निर्देशन व परामर्श का प्रयोग।

6 सामाजिक नैतिक मूल्यों व हस्त कौशल की शिक्षा।

✡ माता-पिता की समायोजन में भूमिका:-

→ बालक की मुलभुत आवश्यकताओ की पुर्ति करना।

→ बालक के साथ झगड़ा या वाद-विवाद न करें।

→ बालक के भविष्य के प्रति ज्यादा उत्सुक हो।

→ दुसरो बच्चों के साथ तुलना ना करें।

Teacher's Signature : .....

Written by:- Guru Narendra Poonia 9413566680

Scanned with CamScanner

शिक्षा मनोविज्ञान

बुद्धि

(Intelligence)

धीरसिंह धाभाई (असिस्टेंट प्रोफेसर)

लेखक (अवनी शिक्षा मनोविज्ञान)

BOL24.COM

Scanned with CamScanner

✡ बुद्धि ✡ Date .....

Expt. No. ..... Page No. 44

(Intelligence)

परिभाषाएँ :-

→ रॉस के अनुसार "– बुद्धि समायोजन की योग्यता है"

→ बकिंघम के अनुसार – "बुद्धि सीखने की योग्यता है।"

→ टरमन के अनुसार – "अमूर्त चिन्तन करने की योग्यता है।"

→ अल्फ्रेड बिने – "बुद्धि चार शब्दों में निहित है, ज्ञान, आविष्कार, निर्देश व आलोचना।"

→ स्टर्नबर्ग के अनुसार – "बुद्धि आलोचनात्मक ढंग से सोचने की प्रक्रिया है।"

→ वर्स्टन के अनुसार – "बुद्धि विभिन्न वस्तुओं व विचारों के मध्य जटिल संबंधों को समझने की योग्यता है।"

→ कॉलसेनिक के अनुसार – "बुद्धि विभिन्न योग्यताओं का योग है।"

→ वेक्सलर के अनुसार – "बुद्धि एक सार्वजनिक योग्यता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है व समायोजन स्थापित करता है।"

बुद्धि की विशेषताएँ →

→ बुद्धि एक जन्मजात / प्राकृतिक शक्ति है।

→ बुद्धि का अधिकतम विकास मध्य किशोरावस्था तक होता है। स्पीयरमैन (14–16 वर्ष)

Teacher's Signature : .....

Guruji Narendra

With Guruji Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

→ बुद्धि वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों का परिणाम हैं।

→ बुद्धि पर लिंग का कोई प्रभाव नही पड़ता हैं।

→ बुद्धि समस्या - समाधान, चिंतन करने, समायोजन स्थापित करने तथा मानसिक योग्यताओं का संगठित रूप होती हैं।

प्रश्न → बुद्धि क्या नही हैं?
(a) स्मृति नही हैं।
(b) बुद्धि ज्ञान नही हैं।
(c) बुद्धि प्रतिमा नही हैं।
(d) बुद्धि स्किल नही हैं। (कौशल)

बुद्धि के प्रकार :-

मुख्य रूप से थार्नडाइक ने बताये, गैरिट ने समर्थन किया- (1920)

1. मूर्त / गामक / यांत्रिक / व्यवहारिक / स्थूल बुद्धि (Concrete) :- Reet 16, L-2

इस बुद्धि का संबंध मशीन, यंत्र व हस्तकला से होता हैं, जैसे- मैकेनिक, इंजनीयर, कारीगर, औद्योगिक कार्यकर्ता व कम्प्यूटर ओपरेटर आदि।

2. अमूर्त बुद्धि / सूक्ष्म / सैद्धान्तिक (Abstract) :-

इस बुद्धि का संबंध पुस्तकीय ज्ञान, शब्द, संकेत, प्रतिमा, सूत्र से होता हैं, जैसे- पेंटर, गणितज्ञ, साहित्यकार, दार्शनिक, वकील, चित्रकार

Teacher's Signature : .....

With Guruu Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

3. सामाजिक बुद्धि :-

इसका संबंध सामाजिक अन्त क्रिया, व्यवहार कुशलता, संबंध व समायोजन शक्ति से होता है। जैसे- राजनेता, अध्यापक, कुटनीतिज्ञ, व्यापारी, सामाजिक कार्यकर्ता

नोट- 1. विश्व में सामाजिक बुद्धि पर कार्य गिलफोर्ड व क्रॉनबैक ने किया।

→ भारत में रु. घोष व गंगोपाध्याय ने सामाजिक बुद्धि पर कार्य किया है।

नोट 2 → समाकलित बुद्धि → वह बुद्धि जिसमें व्यक्ति तथा समाज के संबंधो को प्रमुखता दी जाती है।

बुद्धि के सिद्धान्त →

दो भागों में विभाजित किया जाता है-

(i) मनोगतिक उपागम / कारकीय सिद्धान्त

(ii) प्रक्रिया प्रधान

I. मनोगतिक उपागम / कारकीय सिद्धान्त →

(i) एक खण्ड / एक कारक / एक तत्व सिद्धान्त :→ Unitary theory

प्रतिपादक- अल्फ्रेड बिने सहयोगी- टर्मन / स्टर्न

इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि एक अखण्ड इकाई है इसे बुद्धि का निरकुंशतावादी सिद्धान्त भी कहा जाता है।

(ii) द्विकारक सिद्धान्त →

(Two factor theory) स्पीयरमैन (1904) (Reet 2016, L-I)

(II Gr 2017)

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(क) ज कारक (सामान्य) →

→ यह जन्मजात व स्थाई होता है।
→ हर क्षेत्र में सफलता के लिए जिम्मेदार,
→ ज को मानसिक ऊर्जा भी कहा जाता है।

(ख) ऽ कारक (विशिष्ट) →

→ यह अर्जित है।
→ परिवर्तनशील है।
→ विशिष्ट क्षेत्र जैसे- संगीत, नृत्य, अभिनय

(iii) त्रिकारक सिद्धान्त/त्रि खण्ड/त्रितत्व :→
प्रतिपादक - स्पीयरमैन

स्पीयरमैन ने 1911 में अपने ज व ऽ कारक के मध्य तीसरा खण्ड सामुहिक खण्ड के नाम से जोड़ दिया। जिसमें ज से कम व विशिष्ट (ऽ) से अधिक योग्यताओं को शामिल किया गया।

(iv) बहुकारक सिद्धान्त → (Maltiple factor)
असंतात्मक सिद्धांत ✓ प्रतिपादक - थार्नडाइक ✓

बुद्धि स्वंतत्र व विशिष्ट मानसिक इकाइयों से निर्मित है। थार्नडाइक ने इस सिद्धान्त के छः कारक बताये हैं-

1. शाब्दिक योग्यता
2. आंकिक योग्यता
3. तार्किक योग्यता
4. स्मृति योग्यता
5. दिशा योग्यता
6. भाषण योग्यता

Teacher's Signature : .....

Note:- इस सिद्धांत को बालु के टीले का सिद्धांत भी

Scanned with CamScanner

परमाणुवादी सिद्धांत भी कहा जाता है।

→ थार्नडाइक के अनुसार बुद्धि के चार गुण होते हैं-
1. स्तर 2. विस्तार 3. क्षेत्र 4. गति

→ बुद्धि के चारो गुणों की तुलना बालु के टिले से करने के कारण इसे बालु के टीले का सिद्धान्त, परमाणुवादी सिद्धान्त, अस्तात्मक सिद्धान्त भी कहा जाता है।

V समूह कारक सिद्धान्त:- प्रतिपादक - थर्स्टन, 1938
पुस्तक - 'प्राथमिक मानसिक योग्यताएं'
कुल 13 व इसने प्रधान 7 समूह बताये हैं-
1. शब्द अर्थ योग्यता
2. शब्द प्रवाह योग्यता
3. आंकिक योग्यता
4. स्थानिक योग्यता
5. तार्किक योग्यता
6. स्मृति योग्यता
7. प्रत्यक्षीकरण योग्यता - वस्तु को पहचानने की योग्यता।

VI त्रिआयामी / त्रिविमीय सिद्धान्त:→ गिलफोर्ड (1967)
इसे बुद्धि की संरचना का सिद्धान्त भी कहते हैं, (Jun 2010)
इसने तीन आयाम बताये हैं-

1. संक्रिया / प्रक्रिया / प्रोसेस - इसमें 6 मानसिक क्रिया शामिल हैं-
(i) संज्ञान (ii) स्मृति धारण (iii) स्मृति अभिलेखन (कोडिंग)
(iv) अभिसारी चिन्तन (v) अपसारी चिन्तन (vi) मूल्यांकन

↓ केवल एक दिशा में

↓ C.B.I जाँच प्रत्येक पहलु

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(ii) विषय वस्तु (Subject) → इसमें सूचनाएँ शामिल हैं – (II Gr 2017)
सूचनाएं 5 प्रकार की होती हैं –
(i) दृष्टि (ii) श्रवण (iii) शाब्दिक (iv) सांकेतिक (v) व्यवहारिक
प्रतीकात्मक

(iii) उत्पादन / परिणाम :– (Result)
परिणाम यह 6 : रूप में प्राप्त होता है
(i) इकाई (ii) वर्ग (iii) सम्बन्ध (iv) रूपान्तरण
(v) विधियों (vi) आशय / निहितार्थ

VII बहु-बुद्धि सिद्धान्त (आयामी) → हावर्ड गार्डनर – 1983 में दिया (Reet 2018, L-2)
पुस्तक – "फ्रेमस ऑफ माइण्ड"
प्रारम्भिक रूप से गार्डनर ने 7 प्रकार बताये, 1998 में 8वां व 2000 में 9वां प्रकार जोड़ा ।

(i) तार्किक व गणितीय बुद्धि → जैसे- गणितज्ञ, वैज्ञानिक व नोबेल पुरस्कार विजेता

(ii) भाषात्मक बुद्धि व शाब्दिक बुद्धि → लेखक, कवि, गीतकार वकील, व्याख्याता ।

(iii) संगीतात्मक बुद्धि → वाद्य यंत्र बजाने वाले जैसे- सारंगीवादक अलगोजावादक, बांसुरी वादक, न कि गाने वाले ।

(iv) स्थानिक (देशज) बुद्धि → इसका संबंध दिशा संबंधी ज्ञान से होता है जैसे- पायलेट, वास्तुकार, मूर्तिकार, सर्वेक्षक, शतरंज खिलाड़ी नौकाचालक, शिल्पकार, चित्रकार, ।

Teacher's Signature :

With Gurus Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

(v) शारीरिक गतिक बुद्धि → नृतकी, खिलाड़ी, सर्जन (शल्य-चिकित्सक)

(vi) अन्तर व्यक्तिगत / व्यक्तिगत अन्य (Interpersonal) → दुसरों को जानने की योग्यता रखने वाला, जैसे- दुकानदार, राजनेता, डॉक्टर, वैज्ञानिक।

(vii) अन्त: व्यक्तिगत / व्यक्तिगत आत्मन (Intrapersonal) → स्वंय को जानने की योग्यता रखने वाला संत, योगी, महात्मा, दार्शनिक

(viii) प्राकृतिक बुद्धि → किसान, वनस्पति विज्ञान, शिकारी, पर्यटक

(ix) अस्तित्ववादी बुद्धि → जीवन के रहस्यो को जानने की इच्छा रखने वाले लोग जैसे- तत्व विज्ञानी

VIII. ज.F / ज.C / तरल / ठोस / धारा प्रवाह → प्रतिपादक - कैटेल / हर्न-1963

ज.F - तरल बुद्धि → ये जन्मजात होती हैं।
ज.C - ठोस बुद्धि → ये अर्जित होती हैं।

IX. A-B-C / क-ख-ग / अ-ब-स बुद्धि सिद्धान्त → प्रतिपादक - हैब

A → जन्मजात वंशानुक्रम आधारित
B → वातावरण आधारित
C → परीक्षण प्राप्तांक के रूप में मापी जाने

X. मात्रा सिद्धान्त → थार्नडाइक

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि स्नायुतंत्रों की मात्रा पर निर्भर करती है।

XI. त्रिस्तर सिद्धान्त – कैरोल

इसने बुद्धि के तीन स्तर बताये हैं –
प्रथम स्तर पर सामान्य बुद्धि
द्वितीय स्तर पर तरल। ठोस। स्मृति संरूपात्मक आंकिक
तृतीय स्तर पर प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक

XII. पदानुक्रमिक महत्व का सिद्धान्त → सिरिल बर्ट
वर्नन। वर्मन

इस सिद्धान्त में योग्यताओं को क्रमिक रूप से व्यवस्थित किया गया है,
(1.) सबसे ऊपर – सामान्य बुद्धि
(2) V. Ed – शाब्दिक व शैक्षिक योग्यता
(3) K.M. – व्यवहारिक व यांत्रिक योग्यता
(4) सबसे निम्न स्तर – संरूपात्मक

XIII. त्रितंत्र। त्रिचापीय सिद्धान्त – स्टर्न बर्ग

यह सूचना संसाधन। प्रक्रिया प्रधान सिद्धान्तों में आता है,
इसने तीन प्रकार Reef 18 बताये हैं –
(i) घटक बुद्धि → यह बुद्धि समस्या को टुकड़ों मे विभाजित कर उसका विश्लेषण करती है इसे विश्लेषण बुद्धि भी कहा जाता है।
(ii) अनुभव बुद्धि – समस्या समाधान में पूर्व अनुभव के आधार पर नवीन रचना करना।
इसे सृजनात्मक बुद्धि भी कहा जाता है।

CT-14

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(iii) संदर्भ बुद्धि / व्यवहारिक बुद्धि → दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान करना। CT-14
पुस्तक का नाम - 'Beyond IQ'

XIV बुद्धि का पास मॉडल / सहकालिक अनुक्रमिक → जे. पी. दास (1994)

इसके चार तत्व होते हैं-
(i) योजना (ii) अवधान (iii) सहकालिक (iv) अनुक्रमिक

XV CAVD सिद्धान्त → थार्नडाइक
चार तत्व बताये हैं-
(i) पूर्ति (ii) अंकगणितीय (iii) शब्दावली (iv) दिशा।

XVI द्विपदानुक्रमिक सिद्धान्त - आर्थरजेन्सन
दो पद-
(i) साहचर्यात्मक अधिगम (ii) संज्ञानात्मक अधिगम

XVII बहुमानसिक योग्यता का सिद्धान्त → कैली
इसने 9 मानसिक योग्यताएं बताई हैं।

XVIII इकाई सिद्धान्त → जॉनसन व स्टर्न

XIX आश्चर्यजनक बुद्धि का सिद्धान्त → ब्लूम।

बुद्धि का मापन →
→ मानसिक परीक्षण शब्द का प्रयोग करने वाला पहला व्यक्ति - कैटल, 1890

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 53

→ बुद्धि परीक्षण का जन्मदाता → अल्फ्रेड बिने (1905)

→ मानसिक आयु (M.A) का विचार → अल्फ्रेड बिने (1908) (II Jan 2017)

→ बुद्धि लब्धि का सर्वप्रथम सुझाव → विलियम स्टर्न (1912) ($\frac{M.A}{C.A}$)

→ बुद्धि लब्धि के वर्तमान सूत्र को विकसित करने वाले → टर्मन (1916) (Reet 2016)

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100 = \frac{M.A}{C.A} \times 100$$

→ शैक्षिक लब्धि ज्ञात करने का सूत्र = $\frac{\text{शैक्षिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

→ उपलब्धि ज्ञात करने का सूत्र = $\frac{\text{शैक्षिक आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$

→ बेसल वर्ष → जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को बालक हल कर लेता है, वह उसका बेसिल वर्ष कहलाता है।

→ टर्मिनल वर्ष → जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को बालक हल नहीं कर पाता है, वह उसका टर्मिनल वर्ष कहलाता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

मानसिक-मूनता ग्रसित की श्रेणी- 70 से कम (मूर्ख) Date .....

Expt. No. ..... Page No. 54

बुद्धि लब्धि की सामान्य सारणी-

बुद्धि लब्धि	बालक का प्रकार
140 से अधिक	प्रतिभाशाली (Genius)
120-139	अति श्रेष्ठ / अति तीव्र (Superior)
110-119	श्रेष्ठ / तीव्र (Above Average)
90-109/110	सामान्य / औसत (Normal / Average)
80-89	पिछड़ा (Dull) मंद (Back ward)
70-79	क्षीण / दुर्बल / सीमान्त बुद्धि / अल्प (Feeble)
50-69	अल्प / मंद बुद्धि मूर्ख (Moron) निर्बल
25-49	/ हीन (Imbecile) मूढ
25 से कम	जड़ / महामुर्ख (Idiots)

सामान्य से कम सभी पिछड़े की श्रेणी में आते हैं।
औसत मंद बुद्धि लब्धि 35-40 से 50-55 होती है।

बुद्धि परीक्षण

- व्यक्तिगत
  - शाब्दिक (भाषात्मक)
  - अशाब्दिक (क्रियात्मक)
- सामुहिक
  - शाब्दिक
  - अशाब्दिक

→ नोट- भाषात्मक परीक्षण का प्रयोग पढ़े-लिखे लोगों की अमूर्त बुद्धि के मापन में किया जाता है।

→ क्रियात्मक / अशाब्दिक परीक्षण का प्रयोग- छोटे बालकों, अनपढ़ गूंगे बहरे व अलग-अलग देशों में रहने वाले लोगों की

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 55

मूर्त बुद्धि का पता लगाने में किया जाता है

☒ व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण →

(i) **बिने साइमन बुद्धि परीक्षण** → अल्फ्रेड बिने - 1905
→ संशोधन 1908 व 1911 में
→ 3 से 15 वर्ष के बच्चो के लिए उपयोगी
→ प्रारम्भ में प्रश्न = 30
→ वर्तमान में प्रश्नों की संख्या = 59
→ भारत में इसका अनुवाद - 1935 में वी. वी. कामत

(ii) **स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण** → टर्मन 1916
→ 2 से 22 वर्ष तक के बच्चों के लिए
→ कुल प्रश्न = 90

(iii) **आवृति परीक्षण** → टर्मन / मैरिल (1937)
→ 2 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिए ।

→ भारत में 1922 में C.H. राइस, हिन्दुस्तान बिने परीक्षण बनाया यह उर्दू भाषा में था तथा 5 से 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयोगी बताया ।

☒ व्यक्तिगत अशाब्दिक परीक्षण →

(i) **कोह ब्लॉक डिजाइन क्रियात्मक परीक्षण** → S.C कोह 1923

→ इसमें लकड़ी के 16 ब्लॉक होते है जिनसे लकड़ी की

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

डिजाइन बनाई जाती हैं।

(ii) पास एलॉग क्रियात्मक परीक्षण – 1932, अलैक्जेण्डर पास

(iii) घन रचना क्रियात्मक परीक्षण – गा (प्रतिपादक)
26 घन

(iv) पिंटनर – पैटरसन क्रियात्मक परीक्षण – 1917
पसे 16 वर्ष के लिए उपयोगी

(v) मूलभूलैभा परीक्षण → S.D पोरटिअस, 1924 (3 से 14 वर्ष के बालकों)

(vi) मैरिल-पाल्मर परीक्षण → मैरिल

→ 13 माह से $5\frac{1}{2}$ वर्ष तक के बच्चो के लिए
→ 38 उप परीक्षण होते हैं।

(vii) मिनिसोटा पूर्व स्कूल परीक्षण – मिनिसोटा

→ 18 माह से 5 वर्ष के बच्चों के लिए।

(viii) इ. ए. मैन परीक्षण – गुडएनफ (आदमी) 1926

नोट – भारत में पहला व्यक्तिगत अशाब्दिक परीक्षण –

भाटिया बैटरी क्रियात्मक परीक्षण – चन्द्रमोहन भाटिया) 1955

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ 11 से 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयोगी
→ पाँच उपपरीक्षण शामिल होते हैं-
(1.) कोह-ब्लॉक परीक्षण
(2) पास-ए-लॉग परीक्षण
(3) स्मृति परीक्षण
(4) चित्र परीक्षण
(5) पेट्रन ड्राइंग परीक्षण

सामूहिक शाब्दिक परीक्षण →

सामूहिक शाब्दिक परीक्षणों की शुरुआत अमेरिका से हुई।

(1.) आर्मी एल्फा परीक्षण → आर्थर एस. ओटिस, (1917)

(2.) सामान्य सेना वर्गीकरण परीक्षण → शब्दावली, गणितीय तर्क आदि

(3.) सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण → टर्मन 1920

नोट - भारत में जे. मैनरी ने 1924 में प्रथम सामूहिक शाब्दिक परीक्षण का निर्माण किया।

सामूहिक अशाब्दिक परीक्षण →

(1.) आर्मी बीटा परीक्षण → आर्थर एस. ओटिस 1919 में, अनपढ लोगों के लिए।

(2.) शिकागो क्रियात्मक परीक्षण → 6 वर्ष से लेकर व्यस्क लोगों की बुद्धि का मापन करता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 58

(3) संस्कृति मुक्त परीक्षण → आर बी. कैटल (प्रतिपादक)
(i) 5 से 8 वर्ष
(ii) 8 से 12 वर्ष
(iii) उच्च स्तर के बच्चों के लिए ।

(4) रैवेन प्रोग्रेसिव मेट्रीसेज परीक्षण — जे. सी. रैवेन, 1938
→ ज कारक का मापन करता है।
→ इसमें रंगीन शांचे होते हैं। (छोटे बच्चो के लिए)

✡ मिश्रित बुद्धि परीक्षण —
वेक्सलर बुद्धि परीक्षण — डेविड वेक्सलर, 1939
संशोधन — 1944 व 1955 में
→ 7 शाब्दिक व 7 अशाब्दिक टेस्ट होते हैं।
→ 5 से 15 वर्ष व 16 से 64 वर्ष के लिए उपयोगी।
नोट — इसे शक्ति परीक्षण भी कहा जाता है।
भारत में पहला मिश्रित परीक्षण पी. एन. मेहरोत्रा ने 1975 में किया, यह 11 से 17 वर्ष के बच्चो के लिए उपयोगी।

नोट — कृत्रिम बुद्धि → रोबोट, मशीन, केलकुलेटर, कम्प्यूटर

→ बुद्धि के विकास में सामाजिक व सांस्कृतिक कारको को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। → वाइगोत्सकी

→ जेन्सन के अनुसार → बुद्धि बिजली के समान है, जिसको मापना कठिन है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Education Psychology

REET

Emotional Intelligence

(संवेगात्मक बुद्धि)

Connecting With Guru Narendra

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 59

✱ संवेगात्मक बुद्धि → (Emotional Intelligence)

(1.) थॉर्नडाइक द्वारा दिए गए 1920 में सामाजिक बुद्धि के प्रकार में संवेगात्मक बुद्धि का विकास सर्वप्रथम दिखाई देता है।

(2.) 1983 में हावर्ड गार्डनर द्वारा दिए-गए बहु- बुद्धि के सिद्धान्त में व्यक्तिगत आत्मन बुद्धि व व्यक्तिगत अन्य बुद्धि का संबंध संवेगात्मक बुद्धि से है।

(3.) संवेगात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1990 में जॉन मेयर। पीटर सेलोवी ने किया था।

पुस्तक का नाम → 'what is EI'

अन्य पुस्तक — संवेगात्मक बुद्धि व संवेगात्मक विकास

(4.) Imp संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिपादक - डेनियल गोलमैन 1995 अमेरिका

पुस्तक - 'संवेगात्मक बुद्धि बुद्धिलब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों?'

→ डेनियल गोलमैन के अनुसार - "संवेगो को जानने, समझने व संबंध स्थापित करने की शक्ति संवेगात्मक बुद्धि कहलाती है।"

→ जॉन मेयर। पीटर सेलोवी - "संवेगात्मक बुद्धि वह योग्यता है जिसके द्वारा हम अपनी व दुसरों की भावनाओं का संचालन करते हैं।"

→ रेयुबेनबार के अनुसार - "संवेगात्मक बुद्धि वह योग्यता है जिसके द्वारा दैनिक जीवन में आने वाली पर्यावरणीय समस्याओं से निपटा जाता है।"

Teacher's Signature : .....

Guru Narendra

With guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 60

(RGV 2017)

संवेगात्मक बुद्धि के तत्व → पाँच तत्व, डेनियल गोलमेन ने बताये हैं।

1. **आत्म चेतना (आत्म जागरूकता)** – स्वंय के गुण व कमियों तथा पहचान का ज्ञान।

2. **आत्म नियंत्रण** – अपनी भावनाओं पर नियंत्रण।

3. **आत्म अभिप्रेरणा** – इसे संवेगात्मक बुद्धि का हृदय कहा जाता है

4. **समानुभूति (परानुभूति)** – दुसरों के दुख-दर्द को अपने अन्दर महसुस करना।

5. **सामाजिक कौशल →** नेतृत्व, सम्प्रेषण, अन्तर व्यक्तिक संबंध मजबूत होना, चिन्तन, समस्या समाधान की योग्यता। संबंधों को संचालित करना।

संवेगात्मक बुद्धि की प्रकृति –

1. यह बुद्धि कभी नष्ट नही होती अपितु वक्त के साथ बढती जाती है।
2. इस बुद्धि पर लिंग का प्रभाव पड़ता है।
3. संवेगात्मक बुद्धि पर वातावरण व अभिप्रेरणा का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिमान →

(i) **योग्यता आधारित प्रतिमान** – जॉन मेयर। पीटर सेलोवी

इसमें चार योग्यताएं होती है-

(1) संवेगों का प्रत्यभिज्ञीकरण करने की योग्यता (देखकर पहचानना)

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

2. विचार करके संवेगों का प्रयोग करना ।
3. संवेगो को समझने की योग्यता ।
4. संवेगों का प्रबन्धन करने की योग्यता ।

(iii) गुण आधारित प्रतिमान – कैवी पेट्राइउस – "संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व का अभिन्न गुण होती है।"

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता →

→ संबंध बनाने में सहायक ।
→ जीवन को सुखमय व शान्तिप्रिय बनाने में उपयोगी ।
→ अभिप्रेरित करने में ।
→ जीवन में सफलता प्रदान करने में ।
→ समायोजन स्थापित करने में ।
→ नेतृत्व के गुण का विकास करने में ।
→ आत्मविश्वास को बढ़ाने में
→ मूल्यांकन में
→ तनाव का प्रबन्धन करने में ।
→ समस्या समाधान का निर्णय करने में ।

नोट – संवेगात्मक बुद्धि का मापन जॉन मेयर । पीटर सेलोगी. रेमुबेन बार व डॉ. मगल ने किया है।

संवेगात्मक बुद्धि से युक्त बालक की विशेषताएं →

→ आशावादी
→ आत्मविश्वासी

Teacher's Signature : .....

9413566680
Scanned with CamScanner

→ सकारात्मक अभिवृति
→ संवेदनशील
→ स्वतंत्र निर्णय शक्ति
→ आत्म सम्मान की भावना
→ उत्तम समायोजन शक्ति
→ नेतृत्व का गुण

संवेगात्मक बुद्धि का सूत्र – कीथ बिसले

$$= \frac{\text{भावात्मक स्थिरता}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$$

Written by :- Guru Narendra Poonia 9413566680

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मानसिक स्वास्थ्य
Mental Health

Date .....

Expt. No. .....

Page No. 29

मानसिक विकास स्वास्थ्य के **प्रतिपादक** – C.W. **बीयर्स** (1908) अमेरिका

पुस्तक – "ए माइण्ड दैट फाउण्ड इट सेल्फ"

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस – 10 अक्टूबर

प्रेरणा प्रदान की – एडोल्फ मेयर

डोरथिया डिक्स ने मानसिक स्वास्थ्य संबंधी अमेरिका में आन्दोलन चलाया।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य ए. वी. शाह ने किया है 1947 में।

परिभाषाएँ:→

1. **जेम्स ड्रेवर के अनुसार** – "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मानसिक स्वास्थ्य के नियमों की खोज करना व संरक्षण करना।"

2. **हेडफील्ड के अनुसार** – "मानसिक स्वास्थ्य व्यक्तित्व की सामंजस्य पूर्ण व संतुलित क्रिया अवस्था को व्यक्त करता है।"

3. **लैंडेल के अनुसार** – "मानसिक स्वास्थ्य वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता है।"

4. **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** – "मानसिक स्वास्थ्य का संबंध मानव संबंधों तथा कल्याण से है।"

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 3

5. **कुप्पुस्वामी के अनुसार–** "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ दैनिक जीवन में इच्छाओं, भावनाओं, महत्वकांक्षाओं व आदर्शों में संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है।"

6. **कॉलसेनिक के अनुसार–** " मानसिक स्वास्थ्य नियमों का समूह जो व्यक्ति को स्वंय के साथ व दुसरों के साथ रहने के योग्य बनाता है।"

7. **स्कीनर के अनुसार–** "मानसिक स्वास्थ्य का संबंध समग्र मानव संबंधों के विकास से है।"

8. **फ्रेउसन के अनुसार–** "मानसिक स्वास्थ्य व अधिगम का सफलता से घनिष्ट संबंध है।"

✿ मानसिक स्वास्थ्य की प्रकृति या विशेषताएँ→

→ यह एक सकारात्मक अवधारणा है।
→ यह गतिशील अवधारणा है।
→ यह शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ी अवधारणा है।
→ यह सामाजिक व नैतिक स्तर से भिन्न अवधारणा है।

✿ मानसिक स्वास्थ्य के तत्व:– पाँच

1. शारीरिक स्वास्थ्य
2. मानसिक स्वास्थ्य
3. संवेगात्मक स्वास्थ्य
4. स्वस्थ वातावरण

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. .....

5. स्वस्थ रुचियाँ व अभिवृतियाँ

✡ मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषताएँ :-

→ आत्मविश्वासी
→ सहनशीलता
→ संवेगात्मक रूप से परिपक्वता
→ निश्चित जीवन दर्शन
→ वास्तविकता में निवास। यथार्थ में
→ स्पष्ट जीवन लक्ष्य
→ आत्म सम्मान की भावना
→ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता।
→ स्वाभाविकता
→ आत्म-निर्णय की भावना
→ स्वंतत्र-निर्णय शक्ति
→ स्वस्थ रुचियां व अभिवृतियां

मानसिक स्वास्थ्य के उद्देश्य :-

1. मानसिक स्वास्थ्य का चिंतन करना जैसे- सकारात्मक चिंतन करते हुए मानसिक विकारों को दुर करना।
2. मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा व देखभाल करना।
3. मानसिक रोगों व विचारों को दुर करना / उपचार करना
4. मानसिक स्वास्थ्य को वातावरण के अनुकूल बनाना।
5. मानसिक स्वास्थ्य की अंत शक्ति को जगाना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 31

✡ बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक— 5

(i) वंशानुक्रम
(ii) शारीरिक दोष/रोग
(iii) पारिवारिक वातावरण

नोट:- प्लांक की पुस्तक "Personality and Cultural Pattern" में परिवार की निर्धनता को जिम्मेदार माना है।

(iv) सामाजिक कारण
(v) विद्यालय संबंधी कारण

✡ शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक→

→ पद की असुरक्षा
→ कम वेतन
→ अतिरिक्त कार्यभार
→ निरकुंश प्रशासन
→ शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव होना।
→ अपरिपक्व बुद्धि के बालकों का होना।
→ जातीय विद्यालय
→ मनोरंजन के साधनों का अभाव होना।
→ सामाजिक सम्मान का प्राप्त न होना।
→ शिक्षकों का आपसी संघर्ष

✡ मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक के लक्षण:-

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

→ उत्साहयुक्त ।
→ विनोद प्रिय ।
→ विषय-वस्तुओं में प्रवीणता / सब्जेक्ट कमाण्ड ।
→ आत्म चेतना व आत्म निभंत्रण से युक्त ।
→ प्रभावशाली संचार
→ वैज्ञानिक व तार्किक सोच
→ सहयोगी व्यवहार - दूसरो की आलोचना नही करना
→ समसामयिकता (अपडेट)

✡ मानसिक रोगों का वर्गीकरण :-

→ विश्व में सबसे पहले मानसिक रोगों का वर्गीकरण क्रेपलीन ने किया ।

→ विश्व स्तर पर मानसिक रोगों का वर्गीकरण डी.एस.एम-IV व भारत में ICD-10 करता है।

प्रमुख मनोवैज्ञानिक विकार / रोग या मानसिक रोग :-

1. दुश्चिन्ता →
भय व आशंका की अवस्था,
इसके आधार पर चार प्रकार है -

(a) **दुर्भीति (फोबिया) :-** एक भय की प्रवृति जो व्यक्ति वस्तु या स्थान विशेष के प्रति ।
फोबिया के प्रकार -
(i) विशिष्ट फोबिया - व्यक्ति विशेष या जानवर विशेष से भय होना ।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(ii) सामाजिक फोबिया → दूसरे व्यक्ति के साथ सामाजिक अंत क्रिया करने में कठिनाई।

(iii) विवृती फोबिया → अनजान जगह या अपरिचित स्थान से भयभीत होना।

(b) **मनोग्रस्ति बाध्यता विकार**– (uptet 2016) एक ही क्रिया या कार्य को बार-बार दोहराना।

(c) **मनोग्रस्ति विकार**– स्वयं के विचारो को कमजोर व हीन समझना

(d) **अभिघातज दबाव विकार**– किसी प्राकृतिक आपदा या दुर्घटना के समय उत्पन्न होने वाली सांवेगिक हानि।

2. **विच्छेदी विकार**:– इसमें निम्नलिखित रोग आते हैं-

(i) **व्यक्तित्व लोप**– व्यक्ति स्वयं को तथा वास्तविकता को अस्वीकार कर देता है।

(ii) **विच्छेदी स्मृतिलोप**– अतित कालीन विशेष घटनाओं को भूल जाना।

(iii) **आत्मविच्छेदी विकार**– स्वयं को एक नये स्थान पर ले जाकर नये लोगों के साथ जीवन की शुरुआत करना।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(iv) **बहु व्यक्तित्व दोष** – प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्तित्व के अलग-2 रूपों का प्रदर्शन करना। 'अपरिचित' मूवी में

3. भाव दशा विकार:-

इसमें तीन विकार आते हैं –

(i) **अवसाद** – निंद का न आना, आत्महत्या का विचार बार-2 आना।

(ii) **उन्माद** – अत्यधिक सक्रियता व संवेगात्मक अस्थिरता।

(iii) **द्विध्रुवीय भाव दशा विकार** – जिसमें अवसाद व उन्माद दोनो शामिल होते हैं।

4. मनोविदालिता →

इसके अन्तर्गत चिंतन प्रत्यक्षीकरण व संवेगात्मक संतुलन में कठिनाई आती है।

(A.) **सकारात्मक लक्षण:-**

विकृत अतिशयता व विलक्षणता का बढना

(i) **भ्रमसक्ति** – एक गलत विश्वास जो मजबूत आधार पर टिका होता है जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नही होता हैं, जैसे – मेरे खिलाफ कोई साजिश रच रहा हैं।

(ii) **विभ्रान्ति (हेलुजिनेशन)** :- बिना बाह्य उद्दीपक के प्रत्यक्षीकरण होना।

(iii) **आलोगिया** :- वाक् अयोग्यता (विचार व्यक्त नही कर पाना)

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

(iv) **कैटाटोनिया** – विचित्र मुख – मुद्रा प्रदर्शित करना व गतिहीनता की स्थिति।

विकासात्मक / व्यवहारात्मक –

(1) **अवधान न्यूनता अतिक्रिया विकार (ADHD) :–** (Reet 18, L-I)
एक जगह ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाना, बीच में बोलना, अत्यधिक क्रियाशीलता।

(2) **ऑटिज्म / शैशव स्वलीनता / आत्म – विमोह :–** (2018, L-I) सर्वप्रथम व्याख्या – लियो कैनर 1943 Htet 2018
एकान्तवासी, दोस्त नहीं बनाने वाले, सामाजिक अन्तः क्रिया नहीं करने वाले, एक ही क्रिया को बार – बार करने वाले।
→ हाल ही में 22 ऑटिज्म ग्रस्त बच्चों की फुटबाल टीम का गठन किया गया है।

(3) **एनोरेक्सिया नर्वोसा :–** (2017, L-I Reet) स्वयं को पतला बनाये रखने के लिए भुखा रहना।

(4) **बुलिमिया :–** अत्यधिक भोजन ग्रहण करना।

प्रमुख चिकित्सा उपागम :–

✿ **व्यवहारवादी उपागम :–**

(क) पॉवलव के परम्परागत अनुबंधन संबंधित प्रमुख चिकित्सा विधियाँ–

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 36

(i) **फ्लोडिंग** – जिस जगह व स्थान से डर लगता है, उसी जगह व स्थान पर आपको लगातार रखा जाता है, कुछ समय बाद आप उससे डरना बंद कर देते हैं।

(ii) **भंत: स्फोटात्मक चिकित्सा** – इसके अन्तर्गत डरने वाली स्थिति के बारे में बालक को कल्पना करने के लिए कहा जाता है।

(iii) **क्रमबद्ध संवेदीकरण**:- प्रतिपादक – जोसेफ वोल्फ
इसके अन्तर्गत भय उत्पन्न करने वाली स्थिति के प्रति क्रमिक रूप से कल्पना करना व अनुक्रिया करने के लिए कहा जाता है।

(iv) **विमुखीय अनुबंधन** – इसके अन्तर्गत भय उत्पन्न करने वाली स्थिति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना सीखाया जाता है।

(ख) स्किनर से संबंधित प्रमुख चिकित्सा विधियाँ –

(i) **सकारात्मक पुर्नबलन विधि** – प्रशंसा, पुरस्कार

(ii) **नकारात्मक पुर्नबलन विधि** – दण्ड देना, अपमान करना

(2018, 4-II)

(iii) **टोकन इकोनॉमी (सांकेतिक व्यवस्था)**:- इसके अन्तर्गत अच्छे व्यवहार के बदले बच्चे को टॉकन दिया जाता है तथा फिर कुछ टॉकनो के बदले उपहार दिया जाता है।

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 33

संज्ञानवादी चिकित्सा उपागम→

यह उपागम मानसिक रोगों की व्याख्या, चिंतन, स्मृति, प्रत्यक्षीकरण, सूचना संगठन व स्कीमा के द्वारा करता है।

संवेग तर्क चिकित्सा विधि – प्रतिपादक एल्बर्ट ऐलिस
इस विधि के अनुसार बालक के मानसिक रोगों का कारण अंत तर्क संगत विश्वास को माना जाता है।

मानवतावादी व अस्तित्ववादी चिकित्सा उपागम→

मानवतावादी उपागम आत्मसिद्धि (अपनी आंतरिक शक्तियों को जानने तथा उन्हे पुरा करना), इन्होंने रोगी केन्द्रित चिकित्सा विधि का समर्थन किया है जिसके प्रतिपादक रोजर्स हैं।

लोगोथेरेपी (उद्बोधक चिकित्सा विधि):-
प्रतिपादक - विक्टर फ्रैंकल
इसके अंतर्गत उसके अस्तित्व का उत्तरदायित्व से परिचय करवाना, वर्तमान पे बल, आज व अभी पर बल।

गेस्टाल्ट चिकित्सा उपागम–

प्रतिपादक – फ्रेडरिक लारा पर्ल्स
आत्म-जागरूकता तथा आत्म स्वीकृति को बढावा दिया जाता है।

मनोविश्लेषण चिकित्सा उपागम / मानसिक रोगो का सबसे प्राचीन उपागम→ फ्रायड

Teacher's Signature : .....

Scanned with CamScanner

Que. एक पाँच वर्ष के बच्चे में दुसरों के प्रति प्रतिक्रिया तथा संप्रेषण में कमी है तथा असामान्य व्यवहार को बारंबार करता है। इस तरह के लक्षण किस चीज का प्रतीक है? (2017 L-II)

(A) श्रवण बाधिता (B) शैक्षिक पिछड़ापन

(C) शैशव स्वलीनता (D) अधिगम अक्षमता

Que. किशोरावस्था की ऐसी आदत जिसमे खुद को भुखे रखने की प्रवृति होती है तथा यह जयादा बालिकाओं में पायी जाती है ऐसी अवस्था में कहा जाता हैं – (2017 L-II)

(A) एनोरेक्सिया नरवोसा (B) ऐलीरियम ट्रेमेन्स (C) स्वलीनता (D) डाउन सिण्ड्रोम

Que. निम्न में से कौनसे स्वलीनता के लक्षण है? (2018 L-II)

[A] कम जोड़ सामाजिक व्यवहार [B] रूढ़िबद्ध व्यवहार

[C] कम जोड़ सम्प्रेषण [D] उपर्युक्त सभी

Que. स्वलीनता की सर्वप्रथम व्याख्या की – लियो कैनर (Htet-18)

Scanned with CamScanner

शिक्षा मनोविज्ञान

व्यक्तिगत विभिन्नताएं

(Individual Differences)

धीरसिंह धाभाई (असिस्टेंट प्रोफेसर)

लेखक (अवनी शिक्षा मनोविज्ञान)

BOL24.COM

Scanned with CamScanner

Expt. No. _____ Date _____

व्यक्तिगत विभिन्नताएँ

Page No. 25

सामान्य अर्थ → कोई भी दो बालक समान नहीं होते हैं।

→ **स्किनर के अनुसार** – व्यक्तिगत विभिन्नता के अन्तर्गत व्यक्तित्व का कोई भी हिस्सा शामिल हो सकता है जिसका मापन किया जा सके।

** व्यक्तिक विभिन्नता का सर्वप्रथम अध्ययन (वैज्ञानिक अध्ययन) 1880 में फ्रांसिस गाल्टन ने किया।

→ व्यक्तिक विभिन्नता के प्रकार / क्षेत्र →

→ शारीरिक विभिन्नता – बड़ा छोटा, काला गौरा रंग, मोटा-पतला आदि
→ मानसिक विभिन्नता – प्रतिभाशाली, मंद बुद्धि
→ संवेगात्मक विभिन्नता – शांत आक्रमणशील क्रोधी
→ मनोवैज्ञानिक विभिन्नता → रूचि, आदत, अभिवृति, अभिक्षमता, आकांक्षा
→ व्यक्तित्व में विभिन्नता – अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी
→ गामक योग्यताओं में विभिन्नता – बालक जल्दी चलना सीखता है दूसरा नहीं सीख पाता
→ सीखने की गति में विभिन्नता – कोई तेज गति से, कोई मंद गति से।
→ चरित्र में विभिन्नता – कोई नैतिक कोई अनैतिक
→ लैंगिक विभिन्नता – स्त्रियों का हस्तलेख, अच्छा, कला में अन्तर
→ उपलब्धि में विभिन्नता – प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग होते हैं।
→ सामाजिक विभिन्नता –

→ व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक →

→ वंशानुक्रम – शारीरिक व मानसिक विभिन्नता पर सर्वाधिक प्रभाव
→ वातावरण – व्यक्तित्व के प्रत्येक भाग को प्रभावित जैसे – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक
→ जाति – कृत्रिम व्यापारी, ब्रह्मण में अन्तर दिखाई देता है, अमेरिकन व नीग्रो में विभिन्नता
→ शिक्षा – साक्षर व निरक्षर के व्यवहार में विभिन्नता
→ लिंग – लड़किया अधिक दयालु सहानुभूतिपूर्ण व कोमल, लड़के बहादुर व कठोर
→ परिपक्वता का प्रभाव
→ आयु का प्रभाव

Teacher's Signature _____

Gurukul Nareendra 9413566680
With Gurukul Nareendra 9413566680
Scanned with CamScanner

→ आर्थिक स्थिति–

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का शैक्षिक महत्व :→

→ व्यक्तिगत निर्देशन में उपयोगी।
→ कक्षा का वर्गीकरण करना।
→ शिक्षण विधि व पाठ्यक्रम के चयन में उपयोगी।
→ मूल्यांकन में उपयोगी।
→ गृह कार्य देने में उपयोगी।
→ शारीरिक दोषों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में उपयोगी।

विशिष्ट बालक→

वे बालक जो सामान्य बालक की अपेक्षा असाधारण विशेषताओं से युक्त होते हैं, विशिष्ट बालक कहलाते हैं। ये चार प्रकार के होते है–

1. प्रतिभाशाली बालक :–

टर्मन व ओडेन – "प्रतिभाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन व विद्यालय उपलब्धि में सामान्य बालकों से बहुत श्रेष्ठ होते है।

स्किनर व हैरीमैन – "प्रतिभाशाली शब्द का प्रयोग उन एक प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।"

जेम्स ड्रेवर → "किसी विशेष क्षेत्र में उच्च मौलिक योग्यता वाले बालक 'प्रतिभाशाली' होते हैं।"

Gurukul Narendra 9413566680

Teacher's Signature _____

with Gurukul Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 27

प्रतिभाशाली बालको की विशेषताएँ :-

- जन्मजात होते है न कि अर्जित
- इनकी बुद्धि लब्धि 140 व उससे अधिक होती है।
  नोट- को एण्ड को के अनुसार बुद्धि लब्धि 130 व उससे अधिक होती है।
- → विशाल शब्द कोश होता है।
- → ये सामान्य अध्ययन में रुचि रखते हैं। (Reet 2015 L-I)
- → मानसिक शक्तियाँ विशेष रूप से विकसित → अमूर्त विषय में रुचि, अन्तः दृष्टि उच्च, तर्क व जिज्ञासा की योग्यता, अन्वेषण, सामानीकरण, विभेदन की योग्यता।
- → अध्ययन में अद्वितीय सफलता
- → अपने से अधिक आयु के लोगो को मित्र बनाते हैं।
- → विषय का गहन ज्ञान
- → मानवीय व नैतिक मूल्यों से युक्त
- → उत्तरदायित्व की योग्यता

→ प्रतिभाशाली बालकों की निषेधात्मक विशेषताएँ:-

- → बेचैन व उद्दण्ड प्रवृति के होते हैं।
- → ये स्वार्थी व आलोचक होते है
- → घमण्ड की भावना
- → नियम व सिद्धान्तों के खिलाफ आवाज उठाना।

→ प्रतिभाशाली बालको की समस्याएँ →

- → समायोजन की समस्या का सामना
- → मनोवैज्ञानिक समस्या → हीनता, कुंठा, अहम् की भावना
- → सामाजिक विकास की समस्या
- → बुद्धि के दुरुपयोग की समस्या

→ प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा →

- → संवर्द्धन कार्यक्रम → वाद-विवाद

Teacher's Signature _____

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

→ विशेष विद्यालय व भोग्य शिक्षकों का चयन ।
→ विशाल व विविध पाठ्यक्रम
→ विशेष शिक्षण विधियाँ → करके सिखना, प्रयोगात्मक विधि, अनुसंधानविधि
→ पाठ्य सहगामी क्रियाओं की शिक्षा
→ सामाजिक नैतिक मूल्यों की शिक्षा
→ तीव्र उन्नति का प्रयोग → 1 वर्ष में दो कक्षा उत्तीर्ण करने की छुट
→ व्यक्तिगत निर्देशन व परामर्श
→ विशेष छात्रवृतियाँ

नोट– 1986 की शिक्षा नीति में इन बच्चो के लिए नवोदय विद्यालयों का प्रावधान किया गया ।

NCERT के अनुसार– उच्च योग्यता + उच्च प्रतिबद्धता + उच्च सर्जनात्मकता

II **पिछड़े बालक →** वे बालक जो कक्षा का औसत कार्य नही कर पाते हैं तथा औसत छात्रो से पीछे रहते हैं।

→ **सिरिल बर्ट** – "वे बालक जो विद्यालय जीवन के मध्य में अपने से नीचे की उस कक्षा का औसत कार्य नहीं कर पाता है जो उसकी आयु के बालको के लिए सामान्य होता है।"

नोट→ सिरिल बर्ट ने इन बच्चो का शिक्षा अंक 85 से कम बताया हैं।

→ **शोनेल** – "वे बालक जो अपने आयु के बालको की अपेक्षा विशेष शैक्षिक मन्दता दिखाता हैं।"

पिछड़े बालक के प्रकार–

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

1. सामान्य पिछड़ा → सभी विषयों में कमजोर
2. विशिष्ट पिछड़ा → जो विषय विशेष में कमजोर / अच्छा हो

✡ पिछड़े बालकों की विशेषताएँ →

→ इन बालकों की शैक्षिक गति बहुत धीमी होती है।
→ आत्मविश्वास का कमजोर व निराशावादी होना।
→ मानसिक योग्यताएं न्यून होती हैं → स्मृति, चिन्तन, समस्या-समाधान व निर्णय शक्ति का कमजोर होना
→ शैक्षिक लब्धि व उपलब्धि लब्धि दोनों का कमजोर होना
*** इनकी बुद्धि लब्धि 80–90 होती हैं।
→ सामान्य पाठ्यक्रम व सामान्य शिक्षण विधियों से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाना
→ समाज विरोध व्यवहार करते हैं
→ दोस्त कम होते हैं।
→ समायोजन शक्ति कमजोर
→ इनकी मानसिक आयु कमजोर होती हैं।

✡ पिछड़ेपन के कारण → सामान्य बुद्धि का अभाव / विशिष्ट पिछड़ापन (Reet 2015, L-I)

→ शारीरिक दोष / रोग
→ पारिवारिक वातावरण → झगड़े, निर्धनता, आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होना
→ सामाजिक कारण → वर्ग संघर्ष, पड़ोसी, समाज की दूषित संरचना
→ विद्यालय संबंधी कारण → दोषपूर्ण वातावरण, दोषपूर्ण पाठ्यक्रम, दोषपूर्ण शिक्षण विधियां, शिक्षकों का व्यवहार
→ मनोवैज्ञानिक कारण → रुचि, ध्यान व अभिप्रेरणा का अभाव होना

✡ पिछड़े बालकों की शिक्षा →

→ छोटे-छोटे समूह में अलग से शिक्षा प्रदान करना

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

→ सरल व रुचिपूर्ण पाठ्यक्रम
→ खेल व मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग
→ शिक्षण सहायक सामग्री व मूर्त वस्तुओं द्वारा शिक्षण (RTET 2012, Level-I)
→ वास्तविक जीवन से जोड़ते हुए शिक्षा
→ सामाजिक, नैतिक व हस्त कौशल की शिक्षा
नोट – हस्त कौशल शिक्षा मंद बुद्धि बालकों के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है बजाय पिछड़े बालकों के।
→ व्यवसायिक शिक्षा
→ प्रेम, सहयोग व सहानुभूति व्यवहार
नोट – एक बालक कक्षा 8 तक अच्छा है लेकिन कक्षा 9 में उसकी बौद्धिक उपलब्धि कमजोर होने लगी वह बालक बौद्धिक रूप से कमजोर है। – पिछड़ा बालक

II मंदबुद्धि बालक→

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार – "वे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, मंद बुद्धि बालक कहलाते हैं।"

स्किनर – "वे बालक जो एक निर्धारित वर्ष में पाठ्यक्रम पूरा नहीं कर पाते हैं मंद बुद्धि बालक कहलाते हैं।"

मानसिक मंदता का सबसे पहला महत्वपूर्ण अध्ययन फ्रांस में 1799 में जीन इटार्ड द्वारा किया गया, प्रथम बालक-विक्टर इटार्ड के एक शिष्य डॉ॰ जीन इटार्ड सेगुईन ने 1837 में पेरिस में मानसिक रूप से मंदित बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र खोला।

✡ मंद बुद्धि बालकों की विशेषताएं→

with Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

→ सीमित बौद्धिक क्षमता। बौद्धिक न्यूनता → स्मृति, चिन्तन, सामान्यीकरण ध्यान, अधिगम, इत्यादि का अभाव पाया जाता है।
→ शारीरिक न्यूनता → आकार का बेडौल होना, किसी अंग का कम/ज्यादा होना।
→ इनमें मौलिकता (सृजनात्मकता) का अभाव पाया जाता है।
→ रूढिवादी व अंधविश्वासी होता है।
→ रुचियां सीमित व साधारण होती हैं।
→ शब्दावली दोषपूर्ण होती है। (पापा को नाप, ममी को डमी बोलते हैं)
→ मूर्त विषयों में रुचि रखते हैं। (जो दिखेगा उसी के बारे में बात करेंगे)
→ अन्तरव्यैक्तिक संबंध अच्छे होते हैं।
→ सुझाव ग्रहण करने की प्रवृति (किसी की भी बात पर विश्वास कर लेना)
→ संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं।
→ समायोजन शक्ति कमजोर होती हैं।

⇒ अमेरिकन मंद बुद्धि एशोसिएशन के अनुसार मंद बुद्धि बच्चों का वर्गीकरण →
चार प्रकार बताये हैं।

1. **साधारण मंद बुद्धि बालक →** बुद्धि लब्धि 52 – 67
8 से 11 वर्ष के बच्चे के समान
ये शिक्षणीय वर्ग में आते हैं।

2. **अल्प मानसिक मंद बुद्धि बालक →** I.Q 35 – 51
गामक कौशल कमजोर फिर भी प्रशिक्षणीय श्रेणी में आते हैं। 5 से 7 वर्ष के बच्चे के समान
प्रशिक्षणीय श्रेणी – छोटे - मोटे व्यवसायिक प्रशिक्षण सीखाये जाते हैं।

3. **गंभीर मानसिक मंद बुद्धि बालक →** IQ लेवल 20 से 34
इन बालको में क्रियात्मक व भाषात्मक योग्यताए नही के बराबर होती हैं।

Teacher's Signature _____

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

4. अति गंभीर मंद बुद्धि बालक → IQ लेवल 20 से कम (जड़ बुद्धि)
ये पराश्रित होते है, कुछ भी नही कर पाते है, कम आयु में ही मृत्यु हो जाती है

✡ मंद बुद्धि बालक के कारण →

→ वंशानुक्रम
→ प्रसव के पूर्व की स्थिति – गर्भ के समय का खान-पान, मोबाइल, विकिरण, रेडियो विकिरण।
→ अधिक आयु में माँ का बनना।
→ शारीरिक रोग व चोट।

✡ मंद बुद्धि बालको के लिए शिक्षा → (हस्त शिल्प की शिक्षा) (Reet 2016 L-2)

→ विशेष विद्यालय, विशेष अध्यापक
→ अलग पाठ्यक्रम → लिखना, बोलना, पढना, चलना, पीना, खाना, बैठना, शारीरिक प्रशिक्षण, आर्थिक प्रशिक्षण (हस्त कौशल व व्यवसायिक शिक्षा), सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा, अच्छी आदतो के निर्माण की शिक्षा।
→ शिक्षण सहायक सामग्री व मूर्त वस्तुओं द्वारा शिक्षा
→ खेल व मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग – किंडन गार्टन विधि

⑦. सृजनात्मक बालक –

शाब्दिक अर्थ → निर्माण करने। उत्पादन करने। विधान करने की योग्यता।

स्टेन – "जब किसी कार्य का परिणाम नवीन तथा उपयोगी हो सृजनात्मकता कहलाता है।"
आइजैक – "सृजनात्मकता द्वारा नये संबंधो का ज्ञान होता है।"

Teacher's Signature _____

with Guruji Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

गिलफोर्ड – "सृजनात्मकता एक असाधारण गुण है जिसका संबंध उत्पादन/उत्पादकता से होता है।"

ड्रावडेल – "सृजनात्मकता वह क्षमता है जिसके द्वारा नवीन विचारों की उत्पति होती है जो उद्देश्य व लक्ष्य केन्द्रित हो"

✡ सृजनात्मकता की प्रकृति व विशेषताएँ →

→ सृजनात्मकता सार्वभौमिक है।

→ सृजनात्मकता जन्मजात व अर्जित दोनो है।

→ सृजनात्मकता का संबंध अपसारी (पार्श्व, out of box/बहुविध) चिंतन से है। (विस्तृत रूप से सोचना)

समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषो, कमियों एवं रिक्तियो के प्रति सजगता → (Ktet 2011, L-2)

→ सृजनात्मकता का प्रारम्भ 6 वर्ष से होता है व 30 वर्ष की आयु में उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।

→ सृजनात्मकता प्रक्रिया व परिणाम (उत्पाद) दोनो है।
(सोचना शुरू — सोची गई क्रिया का बन जाना)

→ सृजनात्मकता व बुद्धि में सकारात्मक संबंध पाया जाता है। अर्थात सृजनात्मकता के लिए औसत से अधिक बुद्धि का होना आवश्यक है। (IQ level 110)

देहली मॉडल → सृजनात्मकता के लिए एक निर्धारित बौद्धिक स्तर का होना आवश्यक है।

नोट – एक मंद बुद्धि बालक सृजनात्मक नही हो सकता।

✡ प्रतिभाशाली व सृजनात्मक बालकों में अन्तर →

प्रतिभाशाली बालक सृजनात्मक हो यह आवश्यक नही है। गिलफोर्ड ने बहु विद चिंतन का संबंध सृजनात्मकता से तथा एक विद का संबंध प्रतिभाशाली से है।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

प्रतिभाशाली बालक सफलता उन्मुख होते है सृजनात्मक नही

✡ **सृजनात्मक चिंतन की अवस्थाएँ—** चार अवस्था
1. आयोजन (तथ्यों का संग्रह)
2. उद्भवन (चिन्तन)
3. प्रबोधन (समस्या-समाधान) (प्रदीप्त अवस्था)
4. प्रमाणीकरण (संशोधन)/सत्यापन/समाधान

✡ **सृजनात्मकता के प्रकार—** 3 प्रकार
→ आकस्मिकता
→ सहज
→ संरचणात्मक

✡ **सृजनात्मकता के सिद्धान्त→** चार
1. **मनोविश्लेषण सिद्धान्त →** "फ्रायड के अनुसार पूर्व चेतना के विकास पर सृजनात्मकता निर्भर करती हैं।"

2. **साहचर्यवाद** सिद्धान्त → जॉन लॉक/रिबोट
"सृजनात्मकता संयोगो का पुनर्गठन हैं।"

3. **गेस्टाल्टवादी सिद्धान्त →** कोहलर, कॉफका, वर्दीमर
"अवबोध पर बल"
"सृजनात्मकता अवबोध पर निर्भर करती हैं।"

4. **अस्तित्ववादी/संरचनावादी सिद्धान्त →** विलियम पुण्टा टिचनेर
"सृजनात्मकता व्यक्ति व संसार को आपस में जोड़ने वाली प्रक्रिया हैं।"

✡ **सृजनात्मकता के तत्व/विशेषताएँ →**
→ मौलिकता

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

→ उत्पादकता / रचनात्मकता / विधायकता (निर्माण की योग्यता)
→ नवीनता
→ उपयोगिता
→ धारा प्रवाह
→ लोचशीलता / नमनिमता (वक्त के अनुसार स्वंभ को बदलना)
→ विस्तारण की योग्यता (बढा-चढा कर पेश करना)
→ कल्पनाशीलता (काल्पनिक होते हैं)
→ महत्वकांक्षी होते है (बढ कर कार्य करना)
→ कार्य में लीनता (कार्य में डुबना)
→ अपने गुण व कमियों की समझ (स्वाग्रह)
→ दुरदर्शी होते हैं। (आगे की सोचते हैं)
→ परिहास प्रियता (हसी-मजाक)
→ सौन्दर्यात्मक मूल्यों की अभिव्यक्ति
→ स्पष्टवादी होते हैं। (मुंह पर कह देना)
→ उत्तरदायित्व, समस्या-समाधान व नेतृत्व का गुण पाया जाता हैं।
→ संवेदनशीलता (दुखी / गरीब को देखकर वर्णन करना- पेन्टिंग के माध्यम से)
→ स्वंतत्र निर्णय शक्ति

गिलफोर्ड के अनुसार सृजनात्मकता के तत्व → 4

→ तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता (केन्द्र विमुख)
→ समस्या को पुनः परिभाषित करने की योग्यता
→ विचारो में समन्वय स्थापित करने की योग्यता
→ दुसरो के विचारो में परिवर्तन करने की योग्यता

नोट → प्लेटो ने सृजनात्मकता को दैविक प्रेरणा, नीत्शे ने पागलपन, कांट ने अर्न्तज्ञान, डार्विन ने कॉस्मिक जीवन शक्ति, टोरेन्स ने मानसिक प्रक्रिया, स्टेन ने उत्पाद, बार्टलेट ने साहसिक चिन्तन व बैरन ने मौलिकता कहा हैं।

Teacher's Signature _____

with Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

→ **सृजनात्मकता मापन के परीक्षण →** चार प्रकार होते हैं-

1. चित्र पुर्ति परीक्षण
2. वृत परीक्षण
3. टीन के डिब्बो का परीक्षण
4. प्रोडेक्ट इम्पूर्वमेन्ट टास्क

→ **सृजनात्मकता विकास में शिक्षक की भूमिका →**

1. स्वतंत्र व प्रेरणादायक वातावरण उपलब्ध करना।
2. आत्म अनुशासन व आत्म मूल्यांकन की योग्यता का विकास
3. अभिनव कार्यक्रमों का आयोजन (वाद-विवाद)
4. प्रयुक्त विधियाँ → 1. ब्रेन स्टोरमिंग - आसबोर्न
   बौद्धिक आक्रमण
   2. सिनेटिक्स विधि - वि. गार्डन
   3. मुक्त प्रश्नावली - वुडवर्थ
   4. खोज/अन्वेषण विधि
   5. प्रयोगात्मक विधि
   6. समस्या-समाधान विधि
   7. भुमिका निर्वाह - मोरेनो

बालको को कार्य केन्द्रित रखना - (Ret 2012 L-I)

सृजनात्मकता के प्रमुख परीक्षण →

टोरेन्स सृजनात्मकता परीक्षण → टोरेन्स, 1966

→ यह परीक्षण धारा प्रवाहिता, मौलिकता, नवीनता, लोचशीलता व विस्तारण की योग्यता का मापन करता है।

→ 6 शाब्दिक व 3 अशाब्दिक परीक्षण होते हैं।

→ 5 वर्ष से लेकर वयस्क लोगों की सृजनात्मकता का मापन करता है।

Guruji
with Guruji Narendra 9413566680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

(i) **गिलफोर्ड व मेरीफिल्ड परीक्षण** → 1967
यह परीक्षण धारा प्रवाहिता, विस्तारण, संवेदनशीलता व पुनः परिभाषित करने की योग्यता का मापन करता है।

(ii) **रिमोट एशोसियट परीक्षण** → मेडनिक (1974)
धारा प्रवाहिता का मापन करता है।

नोट- सृजनात्मकता मापन में गेट-जेल, जेकसन व वालच तथा कॉगन द्वारा भी मापन किया गया है।

भारत में सृजनात्मकता मापन का परीक्षण बी. के. पासी 1972 में बनाया इसमें 6 उपपरीक्षण शामिल हैं।
यह शाब्दिक व अशाब्दिक दोनों हैं।

बाकर मेहन्दी परीक्षण → 1973 में
इसमें 4 शाब्दिक व 3 अशाब्दिक परीक्षण हैं।

8. बाल अपराधी

गुड के अनुसार- "कोई भी बालक जिसका व्यवहार सामान्य व्यवहार से इतना अलग हो जाये कि उसे समाज विरोधी कहा जा सके।"

स्किनर- "बाल अपराध की परिभाषा उस कानून के उल्लंघन के रूप में की जाती है जो किसी व्यस्क द्वारा की जाने पर अपराध सिद्ध होता है।"

विलियम हिली- "समाज द्वारा स्वीकृत आचरण के विपरीत

Scanned with CamScanner

व्यवहार करने वाला बालक बाल अपराधी कहलाता है।"

बाल अपराधी बालक के कार्य →

→ चोरी करना
→ नशा करना
→ जुआ खेलना
→ बिना टिकिट यात्रा करना
→ सार्वजनिक सम्पती को नुकसान पहुँचाना
→ हत्या करना
→ यौन अपराध करना
→ चुनौती देना
→ ठगी या बेईमानी करना
→ भगोड़ापन

बाल अपराधी बालकों की विशेषताएँ →

→ शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट
→ अध्ययन में मन न लगना
→ समाज विरोधी कार्यों की प्रवृति पाई जाती हैं।
→ जिददी, स्वार्थी व साहसी होते हैं।
→ आक्रमणकारी व बर्हिमुखी स्वभाव
→ वर्तमान के आनन्द में विश्वास, भविष्य की कोई चिन्ता नही
→ समस्याओ को उचित विधि से हल नही करते हैं।
→ आयु 18 वर्ष से कम
→ ये संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं।

बाल अपराध के कारण →

1. **वंशानुक्रम →** XYY गुणसूत्र की वजह से होते हैं।
वैलेन्टाईन, जुक्स व कॉलीकॉक ने माना हैं।

Teacher's Signature _____

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

2. शारीरिक दोष / रोग / संरचना

3. मनोवैज्ञानिक कारण — निम्न बुद्धि लब्धि
संवेगात्मक असन्तुलन
अवरुद्ध इच्छा (अधूरी इच्छा)

Note:- ग्लूक ने बाल अपराधियों के लिए 95% जिम्मेदार कुसंगति को माना है।

4. पारिवारिक कारण
5. सामाजिक कारण
6. विद्यालय संबंधी कारण

बाल अपराधी बालकों के उपचार की मनोवैज्ञानिक विधियाँ →

1. व्यक्ति इतिहास / केस स्टडी — टाईडमैन
2. मनोविश्लेषण विधि — सिग्मंड फ्रायड
3. मनोअभिनय विधि — जे. एल. मोरेनो
4. अनिर्देशित विधि — कार्ल रोजर्स

कानूनी उपागम →

→ प्रवीक्षण → समाज में एक नियत्रण अधिकारी के तहत इनको खुला छोड़ दिया जाता है।
→ बाल सुधार गृह
→ किशोर न्यायालय
किशोर बंदीगृह → 15 से 21 वर्ष के बच्चे व औद्योगिक शिक्षा दी जाती है।

बोस्टर्ल स्कूल → 16 से 21 वर्ष के बच्चो के लिए होती है।

Teacher's Signature _____

With Guruji Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

सर्टिफाइड स्कूल → छोटे बाल अपराधियों को रखा जाता है। 7वीं तक की शिक्षा व हस्त कौशल की शिक्षा दी जाती है।

रिफॉर्म स्कूल → इनमें भी बच्चों को निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षा दी जाती है।

→ बाल अपराध विज्ञान का जनक – सीजर लाम्ब्रोसो

नोट → कुप्पू स्वामी परिवार की निर्धनता को, वेल्स ने व्यक्तिगत स्कूलों को तथा मेडिनस। जॉनसन ने टी.वी को बाल अपराध का कारण माना है।

समस्यात्मक बालक →

वेलेन्टाइन – "समस्यात्मक बालक शब्द का प्रयोग उन बालकों के लिए किया जाता है जिनका व्यवहार व व्यक्तित्व गंभीर रूप से असामान्य है।"
(i) चोरी करना (ii) झूठ बोलना (iii) गुस्सा करना, समस्यात्मक बालकों की प्रमुख विशेषताएं हैं।
ऐसे बच्चों का उपचार करने के लिए निदानात्मक–उपचारात्मक विधि का प्रयोग व व्यक्ति इतिहास विधि का प्रयोग करेंगे।

विकलांग बालक →

चक्षु विकलांग →
ब्रेल विधि → लुई ब्रेल
→ मोटे अक्षरों की किताबें
→ छपे हुए, उभरे हुए मानचित्र सामग्री

Teacher's Signature Narendra Poonia
9413566680

Scanned with CamScanner

→ अबेकस व ऑडिओ सामग्री का प्रयोग करके

श्रवण विकलांग → ओष्ठ वाचन विधि
दृश्य सहायक सामग्री
संवेगात्मक सामग्री

वाक् विकलांग → हकलाना, तुतलाना
अभ्यास विधि

अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस → 3 दिसम्बर

⇒ **अलाभान्वित बच्चे →**

वे बालक जो सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक व शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े हुए होते हैं। जैसे- झुग्गी झोपड़ी वाले बालक

✡ **समावेशी शिक्षा →**

बिना किसी धर्म, जाति, लिंग व आर्थिक स्तर के भेदभाव से दूर सभी को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करवाना।

यह सभी विकलांग, पिछड़े व विशिष्ट बालकों को शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल करने तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने पर बल देती है।

→ **समावेशी शिक्षा के मॉडल - पाँच**

1. सांख्यिकी मॉडल
2. मौखिक संचार मॉडल
3. चिकित्सीय जीव विधा मॉडल
4. सांस्कृतिक मॉडल
5. मनोसामाजिक मॉडल

Written By:-

Guruji Narendra Poonia 9413566680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Que. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के लिये निम्न में से कौनसी व्यूह रचना कार्य करेगी? (2012 L-I)

(A) कार्यों को मूर्त रूप से समझना (B) विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करने के लिये प्रोत्साहित करना (C) स्व अध्ययन के अवसर प्रदान करना (D) सहायता के लिए बाहर से संसाधनों को प्राप्त करना

Q. निम्न में से कौनसी विशेषता सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की नहीं है? (2012 L-I)

(A) बालकों की देखभाल के अनुभव उन्हें स्कूल के लिए प्रभावशाली ढंग से तैयार नहीं करते (B) नियमित स्वास्थ्य संबंधी देखभाल नहीं मिलती (C) व्यापक एवं विविध अनुभवों को प्राप्त करने का मौका नहीं मिलता (D) विद्यालय में अच्छा करने के लिए अभिप्रेरित नहीं किया जाता

Q. निम्न में से कौनसा पिछड़ेपन का कारण नहीं है? (2015 L-I)

(A) सामान्य बुद्धि का अभाव (B) शारीरिक दोष (C) विशिष्ट पिछड़ापन (D) स्वस्थ वातावरण

Q. निम्न में से कौनसी सामाजिक रूप से वंचित की समस्या नहीं है- (2015 L-I)

(A) सीखने के लिए प्रेरणा का अभाव (B) सृजनशीलता को पोषित होने के अवसर नहीं मिलता (C) रहने के लिए स्वस्थ परिवेश (D) विद्यालय में पक्षपातपूर्ण वातावरण का सामना करना

Scanned with CamScanner

Q. छात्रों में चोरी करने की आदत को कैसे दूर किया जा सकता है?
(A) बालकों को पारितोषिक देकर (B) उदाहरण देकर (C) ताड़ना देकर
(D) सजा देकर (2015 L-II)

Q. मैरडिच के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य रूप से उन परिवारों के बालक —— होते हैं, जो सामाजिक स्तर से ऊँचे होते हैं– (2015 L-II)
(A) कम स्वस्थ एवं विकसित (B) अधिक स्वस्थ एवं विकसित
(C) अधिक स्वस्थ एवं कम विकसित (D) स्वस्थ नहीं पर विकसित

Q. प्रगतिशील परिवारों में बच्चों में अपेक्षाकृत कौनसा प्रेरक अधिक प्रबल होता है? (2015 L-I)
(A) सम्बन्धन (B) जिज्ञासा (C) उपलब्धि (D) आक्रामकता
उपलब्धि प्रेरक स्वतंत्र सोच व प्रगतिशील वातावरण में उत्पन्न होता है इसका अध्ययन एटकिन्सन व मैकक्लिलैण्ड ने 1961 में किया।

Scanned with CamScanner

Que. समावेश [redacted] शब्द का मतलब, विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले बच्चों को —— निर्भमित कक्षाकक्ष में शिक्षित करना (17 L-I)

(A) सर्वाधिक समय (B) पूरा समय (C) कुछ समय (D) किसी समय नहीं

Que. नि:शक्त बालको की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता हैं – (2011 L-I)

(A) समावेशित शिक्षा द्वारा (B) मुख्य धारा में बालकर

(C) समाकलन द्वारा (D) इनमें से कोई नहीं

2011 L-I Que. निम्न में से कौनसी मानसिक मन्दता की विशेषता नहीं है?

(A) बुद्धि लब्धि का 25 से 70 के मध्य होना

(B) धीमी गति से सीखना एवं दैनिक जीवन की क्रियाओं को न कर पाना (C) वातावरण के साथ अनुकूलन में कठिनाई (D) अन्तर्वैयक्तिक सम्बंधो का कमजोर होना

दुसरे व्यक्तियों के साथ सम्पर्क

Scanned with CamScanner

शिक्षा मनोविज्ञान

शिक्षा शास्त्र

धीरसिंह धाभाई (असिस्टेंट प्रोफेसर)

लेखक (अवनी शिक्षा मनोविज्ञान)

BOL24.COM

Scanned with CamScanner

शिक्षण अधिगम व्यवस्था →

वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बालक के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता हैं।

मोरीसन के अनुसार – "शिक्षण में एक परिपक्व व्यक्ति कम परिपक्व व्यक्ति को शिक्षा प्रदान करता है।"

स्मिथ – "शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया हैं जो सीखने में उत्सुकता प्रदान करती है"

गेज – "शिक्षण का उद्देश्य दुसरे के व्यवहार में परिवर्तन करना है"

क्लार्क – "शिक्षण के प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिए की जाती हैं, ताकि बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके"

स्किनर – "शिक्षण पुर्नबलन की आकस्मिकताओं की कड़ी हैं।"

शिक्षण व अनुदेशन में अन्तर →

शिक्षण	अनुदेशन
शिक्षण में शिक्षक का होना अनिवार्य हैं।	अनुदेशन में शिक्षक का होना अनिवार्य नही हैं।
अन्तः क्रिया होना आवश्यक है	अन्तः क्रिया का होना आवश्यक नही हैं
शिक्षण ज्ञानात्मक व क्रियात्मक दोनो रूप में होता हैं।	जब कि अनुदेशन में केवल ज्ञानात्मक होता हैं।

guru

Teacher's Signature _____

With guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

शिक्षण की प्रकृति / विशेषताएँ →

शिक्षण कला व विज्ञान दोनो है,
शिक्षण मुख्य रूप से औपचारिक होता है।
शिक्षण मौखिक, शाब्दिक व सांकेतिक रूप में होता है।
शिक्षण के दो पक्ष होते है - (i) देने वाला (ii) ग्रहण करने वाला
शिक्षण निदानात्मक व उपचारात्मक दोनो रूपों में होता है।
शिक्षण उद्देश्यभुक्त व मनोवैज्ञानिक होता है।

शिक्षण के चर - तीन
स्वतंत्र चर → शिक्षक
आश्रित चर → विद्यार्थी ← (Reet 2016 L-I) (Btet L-I 2014)
मध्यस्थ चर / हस्तक्षेप → पाठ्यक्रम और शिक्षण

चरो के कार्य →
निदानात्मक - कारणों का पता लगाना।
उपचारात्मक - समस्याओ का समाधान।
मुल्यांकन - व्यवहार परिवर्तन की जाँच करना।

शिक्षण की अवस्थाएँ → तीन, पी. डब्लु. जेक्सन ने बताई हैं.

(i) पूर्व क्रिया चरण (Pre Active)
(ii) अन्तः क्रिया चरण (Intra Active)
(iii) उत्तर क्रिया चरण (Post Active)

(i) **पूर्व क्रिया चरण →** कक्षा - कक्ष में जाने से पूर्व की जाने वाली क्रियाएँ, जैसे - उद्देश्यों का निर्धारण, पाठ्य वस्तु का चुनाव, शिक्षण विधियों व सहायक सामग्री का चयन।

(ii) **अन्तः क्रिया अवस्था →** कक्षा आकार की अनुभूति, विषय-वस्तु

Teacher's Signature _____
with Guru Narendra

Scanned with CamScanner

का प्रस्तुतीकरण, पुनर्बलन

उत्तर क्रिया अवस्था → इसमें मूल्यांकन संबंधी क्रियाएं की जाती हैं।

प्रभावी शिक्षण की विशेषताएँ / उद्देश्य / सिद्धान्त →

- उद्देश्य युक्त / निर्धारित होना चाहिए।
- बाल केन्द्रित
- करके सीखने पर आधारित।
- व्यक्तिक विभिन्नताओं पर आधारित।
- क्रियाशीलता युक्त
- संवादमूलक / अन्तः क्रिया युक्त – बातचीत होनी चाहिए।
- लोकतांत्रिक
- निर्देशात्मक होना न कि आदेशात्मक
- अभिप्रेरणा युक्त होना।
- समुवाय आधारित (दूसरे विषय से जोड़कर)
- निदानात्मक व उपचारात्मक
- रुचि व पूर्वज्ञान पर आधारित।

शिक्षण अधिगम का संबंध →

शिक्षण व अधिगम दोनों का उद्देश्य व्यवहार में परिवर्तन करना होता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।
यद्यपि शिक्षण एक कार्य व अधिगम उपलब्धि है
शिक्षण बाह्य है, अधिगम आन्तरिक है।

बनार्ड के अनुसार – शिक्षण, अधिगम व अनुदेशन का संबंध →

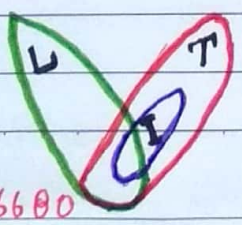

L – Learning अधिगम
T – Teaching शिक्षण
I – Instruction अनुदेशन

Teacher's Signature _____

With Gurcu
Narendra 9413566600

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 45.

शिक्षण अधिगम के सोपान →

पुस्तक – शिक्षण अधिगम का प्रबन्धन
चार सोपान बताये हैं।

1. **शिक्षण अधिगम का नियोजन →** (प्लानिंग)
पाठ्य वस्तु विश्लेषण, कार्य विश्लेषण, उद्देश्यो का विश्लेषण व उद्देश्यों को लिखना

2. **शिक्षण अधिगम की व्यवस्था →**
शिक्षण विधि, पाठ्य वस्तु व सहायक सामग्री की सहायता से अधिगम वातावरण का निर्माण

3. **शिक्षण अधिगम का अग्रसरण / मार्गदर्शन (मोटिवेशन) →**
अभिप्रेरणा प्रदान करना

4. **शिक्षण अधिगम का निमत्तंण →**
इसमें मूल्यांकन क्रियाओ के द्वारा उद्देश्यो की जाँच करना व पुनः निर्धारण करेंगे।

शिक्षण के प्रकार →

तीन आधार पर →
I स्तर के आधार पर
II व्यवस्था के आधार पर
III उद्देश्यो के आधार पर

I. स्तर के आधार पर →

शिक्षण तीन प्रकार का होता है-

(1.) **स्मृति स्तर →**
प्रतिपादक – हरबर्ट

Teacher's Signature _____

With Guru Narendra 9413866680

Scanned with CamScanner

इसका मुख्य उद्देश्य ज्ञानात्मक पक्ष है यह तथ्यों के प्रत्यास्मरण व रटने पर बल देता है। यह हरबर्ट की पंचपदीय प्रणाली पर आधारित है, इसमें शिक्षक प्रधान व छात्र गौण होता हैं तथा इसमें मूल्यांकन के रूप में लिखित व मौखिक परिक्षाओं का प्रयोग किया जाता हैं।

(2.) **बोध स्तर** → प्रतिपादक → मोरीसन

यह तथ्यों की समझ, विवेक तथा अन्तः दृष्टि के विकास पर बल देता है, इसमें शिक्षक व छात्र दोनों ही सक्रिय रहते हैं। सभी प्रकार की परिक्षाऐ जैसे निबन्धात्मक व वस्तुनिष्ठता का प्रयोग होगा।

(3.) **चिन्तन स्तर** → प्रतिपादक → हण्ट

यह सृजनात्मकता व स्वतंत्र चिन्तन के विकास पर बल देता है, इसमें छात्र प्रधान होता है। परिक्षाएं निबन्धात्मक होती हैं।

II. व्यवस्था के आधार पर →

इस आधार पर शिक्षण तीन प्रकार का होता हैं-

1. **औपचारिक** → निर्धारित समय व स्थान जैसे- विद्यालय
2. **अनौपचारिक** → परिवार
3. **निरौपचारिक** → पत्राचार

III. उद्देश्यो के आधार पर →

इस आधार पर शिक्षण तीन प्रकार का होता है, ब्लूम ने बताये हैं। (Reet 2018 SST L-2, दो प्रश्न)

1. **ज्ञानात्मक** → ज्ञान, बोध, प्रयोग, संश्लेषण, विश्लेषण, मूल्यांकन

Scanned with CamScanner

2. भावात्मक → ग्रहण करना, अनुक्रिया, अनुमूल्यन व्यवस्था मूल्य समूह का विश्लेषीकरण

3. क्रियात्मक → अन्य नाम – मनोगत्यात्मक। साइकोमोटर उद्दीपन, कार्य करना, निमंत्रण, संयोजन, स्वाभाविकरण आदतों का निर्माण करना।

रचनात्मक / क्रियात्मक

✡ अभिवृति (Attitude) →

अभिवृति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति पसंद या नापसंद को व्यक्त करता है।

थर्स्टन के अनुसार – कुछ मनोवैज्ञानिक पदार्थों से संबंधित सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों की मात्रा अभिवृति कहलाती है।

अभिवृति के प्रकार → दो प्रकार –
(i) सकारात्मक अभिवृति।
(ii) नकारात्मक अभिवृति।

(i) सकारात्मक अभिवृति →
स्वंय व दुसरों के प्रति विश्वास रखना, प्रेम करना, आकर्षित होना।

(ii) नकारात्मक अभिवृति →
अविश्वास, नफरत, दुर भागना।

अभिवृति के दो गौण प्रकार और होते है –

(iii) सामान्य अभिवृति →
सभी के प्रति प्रेम या घृणा का भाव

(iv) विशिष्ट अभिवृति →
व्यक्ति विशेष के प्रति प्रेम या घृणा का भाव

Teacher's Signature _____

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

अभिवृति की विशेषताएँ →

→ अभिवृति अनुभव के आधार पर अर्जित होती हैं।

→ अभिवृति का संबंध्य भाव व संवेगो से होता हैं।

→ अभिवृति में ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक तीनो पक्ष होते हैं।

→ अभिवृति परिवर्तनशील होती हैं।

→ अभिवृति पर शारीरिक, मानसिक, नैतिक, मनोगत्यात्मक, सामाजिक विकास का प्रभाव पड़ता हैं।

→ अभिवृति में विचार, विश्वास, पूर्वाग्रह व मूल्यनिहित होता हैं। अभिवृति पर शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता हैं।

अभिवृति का मापन →

→ 1927 में सर्वप्रथम- थर्स्टन

टेस्ट का नाम → युग्म तुलनात्मक परीक्षण

→ थर्स्टन व चेव → 1929 - समदृष्टि अन्तर परीक्षण

→ लिकर्ट ने 1932 - योग निर्धारण परीक्षण

→ सफीर 1937 - क्रमबद्ध अन्तर परीक्षण

→ गटमैन 1945 - स्केलोग्राम विधि

→ एडवर्डस व कैलपैट्रिक 1948 - भेदबोधक मापनी विधि।

→ ओसगुड ने सिमेन्टिक डिफैरेन्शियल विधि।

बोगार्डस 1953 सामाजिक अन्तर्मापन

अभिवृति का POX त्रिकोण हाईडर ने दिया था-

P- व्यक्ति जिसकी अभिवृति का अध्ययन

O- दूसरा व्यक्ति

X- विषय वस्तु

Scanned with CamScanner

(Aptitude) अभियोग्यता / अभिक्षमता :→

किसी कार्य विशेष में व्यक्ति की योग्यता, कुशलता, प्रवीणता व दक्षता अभियोग्यता कहलाती हैं।

बिंघम के अनुसार– किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के पश्चात ज्ञान, दक्षता व प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता अभियोग्यता हैं।

अभियोग्यता की विशेषताएँ :–

→ अभियोग्यता एक जन्मजात योग्यता हैं।
→ अभियोग्यता व रुचि में सकारात्मक संबंध पाया जाता हैं।
→ अभियोग्यता के तीन घटक होते है– (i) बुद्धि (ii) रुचि व (iii) पेशेवर विलक्षणता (आपके जैसा कोई नही)
→ अभियोग्यता व्यक्ति के भविष्य की ओर संकेत करती हैं।
→ अभियोग्यता पर वंशानुक्रम, वातावरण व व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रभाव पड़ता हैं।
→ अभियोग्यता अमूर्त व स्थायी स्वरूप में होती हैं।
→ अभियोग्यता में रचनात्मकता पायी जाती हैं।

अभियोग्यताओं के प्रकार → 5

1. संवेदनात्मक अभियोग्यताएँ → दृष्टि, स्पर्श, गन्ध, स्वाद, ध्वनि सुनना
2. मैकेनिकल अभियोग्यताएँ → बढ़ई – बढ़ईगिरी में पड़ा।
3. कलात्मक अभियोग्यताएँ → संगीत नृत्य अभिनय, पेंटिंग
4. व्यवसायिक अभियोग्यताएँ → लिपिक कार्य व वकालत संबंधी
5. शैक्षिक अभियोग्यताएँ → अध्ययन अध्यापन

अभियोग्यता का शैक्षिक महत्व →

बालक के बारे में भविष्यवाणी करने में।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन प्रदान करने में ।
विषय व संकाय चयन में
कक्षा वर्गीकरण में ।

अभिभोग्यता मापन–

1. विभेद अभिक्षमता परीक्षण (DAT) → बिनेट, सीशोर, वैसमैन
भारत में अनुवाद – J.M. ओझा

2. सामान्य सेना वर्गीकरण परीक्षण (G.A.T.B) →
1962 में अमेरिका की सैनिक परिषद ने बनाया ।

3. फलैनेगन अभिक्षमता परीक्षण (FACT) →
9 अभिभोग्यताओं का मापन होता है ।

यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण
लिपिक अभिक्षमता] → माइनेसोटा (मिनिसोटा)

संगीत योग्यता परीक्षण → ट्रेक
book में सीशोर

Written By:-
Guru Narendra Poonia
9413566680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Expt. No. _____ Date _____

रुचि :-

Page No. 50

रुचि (Interest):→ 'Interest' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के 'Interesse' से हुई हैं। इसके तीन अर्थ होते हैं- महत्वपूर्ण होना, लगाव होना, अन्तर होना।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार:- "रुचि किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती हैं।"

जेम्स ड्रेवर- "रुचि किसी प्रवृति का क्रियात्मक रुप हैं।"

रुचि के पहलू → 3

(i) ज्ञानात्मक - जानना।
(ii) भावात्मक - अनुभव करना।
(iii) क्रियात्मक - इच्छा करना।

रुचि की विशेषताएँ →

→ रुचि जन्मजात व अर्जित दोनो होती हैं।

(1) **जन्मजात रुचि-** इसका संबंध मूल प्रवृति से होता हैं। जैसे- खेलना

(2) **अर्जित रुचि-** भाव संवेदना से संबंध जैसे-पढना

→ रुचि सदैव सकारात्मक होती हैं।
→ रुचि सदैव परिवर्तनशील होती हैं।
→ रुचि का संबंध वर्तमान से होता हैं।
→ रुचि व अभिप्रेरणा में सकारात्मक संबंध होता हैं।

रुचि का मापन →

रुचि का मापन सबसे पहले 1914 में कार्निगी तकनीकी संगठन ने किया।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____

आदत (Habit) :-

Page No. 51

Habit शब्द की उत्पति लेटिन भाषा के Habites से हुई है जिसका अर्थ है - किसी चीज को प्राप्त करना

गैरिट/गैरेट के अनुसार - "आदत उस व्यवहार को दिया जाने वाला नाम है जो इतनी अधिक बार दोहराया जाता है कि वह कार्य यंत्रवत हो जाता है।"

आदतों के प्रतिपादक - विलिअम जेम्स

आदतों के प्रकार - वेलेन्टाइन के अनुसार

1. **यांत्रिक आदतें** → जैसे - शर्ट के बटन बन्द करना, जूतों के शॉल बांधना।
2. **शारीरिक अभिलाषा संबंधी आदतें** → जैसे - सिगरेट पीना, पान खाना।
3. **नाड़ीमण्डल संबंधी आदतें** → जैसे - नाखून चबाना, पेन चबाना, अगुंठा चुसना
4. **भावना संबंधी आदतें** → जैसे - प्रेम या घृणा का भाव पैदा होना।
5. **विचार संबंधी आदतें** → जैसे - तर्क करना, वाद-विवाद करना, लॉजिक देना।
6. **नैतिक आदतें** → जैसे - सुठ बोलना, सत्य बोलना, अहिंसा, दया.

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 52

7. भाषा संबंधी आदतें → जैसे – एक ही शब्द का बार-बार दोहराव

आदतों की विशेषताएँ →

→ राइबर्न के अनुसार – "सीखना आदतों के निर्माण की प्रक्रिया है।"

→ आदतें सदैव अर्जित होती हैं।

→ आदतें व्यक्तित्व व चरित्र निर्माण में उपयोगी हैं।

→ आदतें सन्तुलित विकास में उपयोगी हैं।

→ आदतें कार्य को भूलने नहीं देती हैं।

→ आदते कार्य के प्रति घृणा उत्पन्न नहीं होने देती।

→ आदते उपयोगी व अनुपयोगी होती हैं।

आदत निर्माण के चरण →

1. संकल्प
2. क्रियाशीलता
3. निरन्तरता
4. अभ्यास
5. अच्छे उदाहरण
6. पुरस्कार
7. दण्ड

Written By:-
Guru Narendra Poonia
94135 66680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Expt. No. _____ Date _____

अवधान (Attention)

Page No. 53

ड्रमवील के अनुसार—"किसी दूसरी वस्तु की बजाय एक ही वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण कर लेना अवधान है।"

अवधान की विशेषताएँ

→ यह एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
→ अवधान एक अभिप्रेरणात्मक प्रक्रिया है।
→ अवधान एक चयनात्मक प्रक्रिया है।
→ अवधान एक मानसिक तत्परतायुक्त प्रक्रिया है।
→ अवधान में शरीर की विशेष मुद्रा होती है।
→ अवधान में मानसिक तत्परता पायी जाती है।
→ अवधान का विस्तार सीमित समय एक समय कुछ उद्दीपकों तक.
→ अवधान में विभाजन का गुण पाया जाता है।

अवधान को प्रभावित करने वाले बाह्य कारक→

1. गति २. परिवर्तन
3. नवीनता 4. पुनरावृति ५. विषमता ६. रहस्य ७. आकार ८. आवाज
९. अवधि १०. तीव्रता

अवधान को प्रभावित करने वाले आन्तरिक कारक→

1. रुचि/अभिरुचि
२. ज्ञान ३. वंशानुक्रम 4. मूल प्रवृतियाँ ५. आदत ६. लक्ष्य/उद्देश्य
७. उत्तेजना की एकान्तता ८. जिज्ञासा ९. अभिवृति १०. आवश्यकताएँ

अवधान के प्रकार—

1. **ऐच्छिक अवधान→** अर्जित रुचियों पर आधारित होता है।
२. **अनैच्छिक अवधान→** मूल प्रवृतियों से इसका संबंध होता है।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

3. **आभ्यासिक अवधान →** यह आदतों की वजह से होता है।

अवधान के अन्य प्रकार →

1. **चयनात्मक अवधान –** दो या तीन उद्दीपक आपके सामने होते हैं।

2. **सघंत अवधान –** एकाग्रता युक्त जैसे - एकदम से खो जाना।

Written By :-
Guru Narendra Poonia
9413566680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

मानसिक क्रियाएँ

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 55

1. संवेदना (Sensation) :→

विलियम जेम्स के अनुसार– "संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है।"

→ संवेदना आरम्भिक मानसिक क्रिया है। ← (Reet 2016 L-2)
→ संवेदना ज्ञान के मार्ग की पहली सीढ़ी है।
→ संवेदना जीवन का प्रारम्भिक व सरल मानसिक अनुभव है।
→ संवेदना द्वारा प्राप्त ज्ञान अर्थ रहित होता है।

→ **संवेदना के प्रकार–** पाँच प्रकार
1. दृष्टि 2. ध्वनि 3. स्पर्श (त्वचा) 4. स्वाद (जीभ)
5. गंध संवेदना ।

→ **संवेदना का शिक्षा में महत्व :–**
→ वस्तु के गुण समझना ज्ञानेन्द्रियों का उचित प्रयोग में सहायक ।
→ वस्तु की सत्ता का ज्ञान होना।
→ प्रत्यक्षीकरण के लिए आवश्यक ।
→ मानसिक विकास में सहायक ।

→ **संवेदना का अर्थ एवं स्वरूप :–**
संवेदना एक ऐसी सरल मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमें वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में एक आभास मात्र होता है क्यों कि इससे अर्थ हीनता एवं अस्पष्टता होती है।

संवेदना के गुण :– छः होते हैं–
1. संवेदना निश्चित प्रकार की होती है। 2. तीव्रता (कोई अधिक कोई कम) 3. अवधि (कुछ समय के लिए आवश्यक होती)
4. स्पष्टता 5. प्रसार 6. स्थानीय चिन्ह ।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 56

प्रत्यक्षीकरण

जलोटा के अनुसार–"किसी वस्तु का सम्पूर्ण ज्ञान प्रत्यक्षीकरण कहलाता हैं।"

इसे ज्ञान की दुसरी सीढी कहा जाता है क्यों कि इसमें संवेदना + पूर्व अनुभव शामिल होता हैं।

✡ प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ→

→ प्रत्यक्षीकरण हमारे विचारों का विकास करता हैं।
→ इसमें अर्थ युक्त ज्ञान प्राप्त होता हैं।
→ प्रत्यक्षीकरण में संगठन की विशेषता होती हैं।
→ प्रत्यक्षीकरण किसी वस्तु का सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करता हैं।
→ प्रत्यक्षीकरण ध्यान, कल्पना, स्मरण, व चिंतन की योग्यता का विकास करने में उपयोगी हैं।

✡ संवेदना व प्रत्यक्षीकरण में अन्तर–

	संवेदना	प्रत्यक्षीकरण
1.	पहली सीढी	दुसरी सीढी
2.	मस्तिष्क निष्क्रिय	मस्तिष्क सक्रिय होता हैं।
3.	संवेदना मे पूर्व अनुभव नही होता	प्रत्यक्षीकरण में पूर्व अनुभव होता हैं।
4.	संवेदना वस्तु का परिचय प्रदान करेगी।	वस्तु का सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करेगी
5.	ये जीवन का प्रारम्भिक व सरल मानसिक अनुभव हैं।	जीवन का जटिल व विकसित अनुभव हैं।
6.	ज्ञान अपस्पष्ट / अनिश्चित	स्पष्ट व निश्चित

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 57

प्रत्यय (Concept)

ज्ञान प्राप्ति की तीसरी सीढ़ी →

संवेदना + पूर्व अनुभव + प्रत्यक्षीकरण = प्रत्यय

बोरिंग व अन्य के अनुसार – "किसी देखी गयी वस्तु की मानसिक प्रतिमा प्रत्यय कहलाती हैं।"

→ प्रत्यय की विशेषताएँ →

→ प्रत्यय हमारे विचारों का आधार होता हैं।

→ प्रत्यय किसी वर्ग या वस्तु की सामान्य विशेषताओं को व्यक्त करता हैं।

→ प्रत्यय का आधार हमारा अनुभव होता हैं।

→ प्रत्यय आरम्भ में अस्पष्ट व अनिश्चित होते है, धीरे-धीरे स्पष्ट व निश्चित होते जाते हैं।

→ प्रत्यय निर्माण के चरण –

1. निरीक्षण करना
2. तुलना करना
3. प्रत्यक्षीकरण करना
4. सामान्यीकरण
5. परिभाषा निर्माण

Written By:–
Guru Narendra Poonia
94135 66680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Education Psychology

REET

Unit-5

-NCF-2005

-RTE-2009

-मापन-मूल्यांकन

-क्रियात्मक अनुसंधान

-आकलन

-उपलब्धि परीक्षण

-निदानात्मक एवं
उपचारात्मक शिक्षण

Connecting With Guru Narendra

Scanned with CamScanner

शिक्षा मनोविज्ञान

मापन-मूल्यांकन

धीरसिंह धाभाई (असिस्टेंट प्रोफेसर)

लेखक (अवनी शिक्षा मनोविज्ञान)

BOL24.COM

Scanned with CamScanner

मापन

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 64

स्टीवेन्शन के अनुसार – "निश्चित स्वीकृत निमयों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया।"

मापन की विशेषताएँ :–

1. मापन में किसी वस्तु की श्रेणी को व्यक्त किया जाता हैं।
2. वस्तुओं को अंक प्रदान किये जाते हैं।
3. संख्याओं को श्रेणी प्रदान की जाती हैं।
4. वस्तु को मात्रात्मक, औसत, मध्यमान, प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता हैं।
5. मापन में वस्तु को परिभाषित किया जाता हैं।

मापन के प्रकार :– 4

(a) **शाब्दिक मापनी** – यह मापन का सबसे निम्न स्तर हैं, इसमें वस्तु को उसके गुण तथा विशेषताओ के आधार पर रखा जाता हैं।

(b) **क्रमिक स्तर मापनी** – किसी वस्तु को उच्चतर से निम्नतर या निम्नतर से उच्चतर की ओर रखना या व्यवस्थित करना क्रमिक मापनी हैं।

(c) **अन्तराल मापनी** – दो वस्तुओ के मध्य की दुरी को व्यक्त करना।

(d) **अनुपात मापनी** – यह मापन का सर्वोत्तम रूप हैं जहाँ प्रतिशत के रूप में वस्तुओं को व्यक्त किया जाता हैं।

मापन की उपयोगिता –

→ बच्चों को वर्गीकृत करना।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

→ उनकी समस्याओं को जानना।
→ निर्देशन व परामर्श देना, अनुसंधान कार्य करना।

✡ **मूल्यांकन :-** मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हैं जहाँ किसी मापन के संदर्भ में निर्णय प्रदान किया जाता हैं।

व्यक्ति की उपलब्धियों का मात्रात्मक वर्णन + योग्यताओं का गुणात्मक वर्णन = निर्णय प्रदान करना।

मापन व मूल्यांकन में अन्तर-

मापन	मूल्यांकन
1. मात्रात्मक	✓ मात्रात्मक + गुणात्मक
2. मापन पहले होता हैं।	मापन के बाद मूल्यांकन होता हैं।
3. यह निर्धारित समय तक होता हैं।	यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है
4. यह सीमित है	यह व्यापक हैं।

✓ **डाडेकर के अनुसार-** "बालक द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया गया हैं, यह जानने की व्यवस्थित प्रक्रिया मूल्यांकन हैं।"

रेमर्स / गेज के अनुसार- "मूल्यांकन वह प्रक्रिया हैं जिसमें व्यक्ति / समाज दोनों की दृष्टि से जो उत्तम व वांछनीय होता हैं, उसका प्रयोग किया जाता हैं।"

बी. एस. ब्लूम- "मूल्यांकन योग्यता नियंत्रण की वह अवस्था हैं जो शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता की जाँच करती हैं।"
मूल्यांकन को त्रिमुखी बताया- ब्लूम ने
(Reet 2016, L-1 Hindi)

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 66

वेस्ले के अनुसार – मूल्यांकन वह अवधारणा है जो इच्छित परिणामों के गुण, महत्व व प्रभावशीलता का निर्णय लेने के लिए सभी प्रकार के साधनों की ओर संकेत करता है।

मूल्यांकन के सोपान – 3

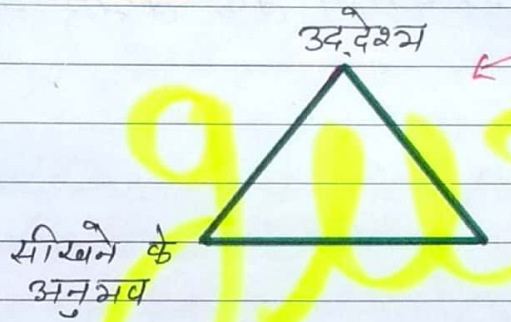

(Reet 2016 L-I PSY.)

1. **उद्देश्यो का निर्धारण** :– सामान्य व विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण व परिभाषीकरण। मूल्यांकन का निकटतम संबंध – उद्देश्यों से (Reet 2016, L-I, Env.)

2. **अधिगम अनुभवो की व्यवस्था** – विषय वस्तु का चुनाव व अधिगम क्रियाओं की व्यवस्था।

3. **व्यवहार परिवर्तन की जाँच** – लिखित, मौखिक व प्रयोगात्मक परिक्षाओं का प्रयोग।

Imp **अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएँ / अच्छे प्रश्न-पत्र की विशेषताएँ / उपलब्धि परीक्षण की विशेषताएँ** → दोनो लेवल में अभी तक 10 प्रश्न आये हैं reet में 2016, 18 में

1. **वैधता / प्रमाणिकता** → जिस उद्देश्य के लिए बनाया गया है, उसकी पुर्ति करता हो व पाठ्यक्रम आधारित हो।

2. **वस्तुनिष्ठता** → जाँचकर्ता की मनोदशा का प्रभाव नहीं पड़े व बहुविकल्प आधारित हो।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

3. **विश्वसनीयता** → परिणामों में अन्तर नहीं हो अपितु एकरूपता हो।
4. **व्यापकता/समग्रता** → पूरे पाठ्यक्रम आधारित
5. **विभेदीकरण** → व्यक्तिगत विभिन्नता आधारित हो।
6. मितव्ययी
7. व्यावहारिकता आधारित
8. उद्देश्य आधारित
9. क्रमबद्धता

मूल्यांकन के उद्देश्य :→

→ शिक्षा के विस्तृत उद्देश्य को स्पष्ट करना। (Reet 18, L-1)

→ पाठ्यक्रम का परिमार्जन व उसमें सुधार करना।
→ सम्पूर्ण विद्यालय कार्यक्रम का मूल्यांकन करना।
→ शिक्षक व छात्र की सफलता की जाँच करना।
→ अधिगम कर्त्ता की उपलब्धि जानना एवं सुधार करना। (Reet 2016 L-2 Science) ← (Rtet 2012, L-1 Env.)

मूल्यांकन की विशेषताएँ :-

→ मूल्यांकन सतत् प्रक्रिया है।
→ निर्णय प्रदान करने वाली प्रक्रिया है।
→ व्यापक प्रक्रिया है।
→ यह बाल केन्द्रित व उद्देश्य केन्द्रित है।

विद्यार्थी की प्रगति, कक्षा उपस्थिति व उसका आचरण जानने में उपयोगी Rtet 2012, L-1

मूल्यांकन के प्रकार :- दो प्रकार-

(i) परिमाणात्मक (ii) गुणात्मक

(i) **परिमाणात्मक** → लिखित, मौखिक व प्रयोगात्मक परिक्षाएँ
(ii) **गुणात्मक** → साक्षात्कार, अवलोकन, व्यक्ति इतिहास, जाँच सूची रेटिंग स्केल, समाजमिति, घटना वृत, संचयी वृत

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 68

मूल्यांकन के अन्य प्रकार :-

(i) निर्माणात्मक / रचनात्मक मूल्यांकन
(ii) निदानात्मक मूल्यांकन
(iii) योगात्मक मूल्यांकन (Reet 2016, L-2 Psy.)

संकल्पनात्मक मूल्यांकन (Reet 18, L-I, Hindi)

निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य :-
(Rtet 2012, L-2 Psy.)

प्रगति पर गौर करना एवं उपचारात्मक अनुदेशन की योजना बनाना।

योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य :-
(Rtet 2012 L-I, Psy.)

समग्र विशेषएवं विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादित किया है, का पता लगाना

निदानात्मक / उपचारात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य :-

अधिगम प्रक्रिया में आने वाली बांधा, समस्या, कठिनाई की पहचान कर निवारण करने के लिए उपचारात्मक कार्य किया जाता हैं।

Written By :-
Guru Narendra Poonia
9413566680

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Topic :- CCE

Subject

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Continous and Comprehensive Evalution

(सतत एवं समग्र मूल्यांकन)

प्रतिपादक - शिक्षाशास्त्री स्क्रीवेन को माना जाता हैं।
(सन 1967)

CCE का अर्थ व परिभाषा :→

अर्थ- CCE विद्यालय आधारित वह मूल्यांकन प्रणाली हैं जिसमें छात्रों के विकास के सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है अर्थात् शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक दोनों गतिविधियों का समग्र मूल्यांकन किया जाता हैं।

सतत् का अर्थ- इकाई परिक्षणों की नियमितता, परीक्षणों की आवृति अर्थात् सम्पूर्ण सत्र में प्रत्येक स्तर पर सत्र पर्यन्त मूल्यांकनो का आयोजन सतत् मूल्यांकन कहलाता हैं।

समग्रता का अर्थ- अर्थात विद्यार्थी के विकास के शैक्षणिक और सह शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों को मूल्यांकन में शामिल किया जाना चाहिए अर्थात् अकादमी विषयों के साथ-साथ पाठ्य सहगामी गतिविधियों एवं विभिन्न कौशलों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए जिससे मूल्यांकन समग्र या सकल हो सके।

निष्कर्ष रूप में CCE वह मूल्यांकन प्रणाली है जो मूल्यांकन को एक घटना नहीं मानकर सम्पूर्ण-सत्र में चलने वाली सतत् प्रक्रिया मानती है और साथ ही बालक के विकास के सभी पहलु का समग्र मूल्यांकन करने पर बल देती है ताकि कुशल गुणवत्ता युक्त सर्व गुण सम्पन्न नागरिक तैयार किये जा सकें।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

CCE की उपयोगिता/महत्व एवं कार्य :-

→ अध्यापक को प्रभावी शिक्षा नियोजन एवं कार्य नीति बनाने में सहायक हैं।

→ विद्यार्थियों की प्रगति की सीमा और मात्रा का नियमित रूप से अंकन करने में सहायक हैं।

→ विद्यार्थियों की कमजोरियों का निदान करने में सहायक है

→ इस प्रणाली से अध्यापक विद्यार्थियों की क्षमताओं, रुचि, अभिरुचि और आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त होती है

→ यह प्रणाली अध्यापक एवं विद्यार्थियों को तुरन्त प्रष्ठ पोषक प्रदान करती हैं।

→ यह प्रणाली विद्यार्थियों में अध्ययन आदत का विकास करती हैं।

→ यह प्रणाली शिक्षक एवं विद्यार्थियों को अपनी गलतियों को सुधारने का अवसर देती हैं।

→ यह प्रणाली विद्यार्थियो को शैक्षणिक एवं व्यवसायिक मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक हैं।

→ विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों की नियमित रूप से प्रगति रिपोर्ट प्रदान करता हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

सतत् एवं समग्र मूल्यांकन का क्रियान्वयन :-

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा सत्र 2009-10 में कक्षा 9 व सत्र 2010-11 में कक्षा 10 में CCE प्रणाली को लागु किया गया। (Reet 2016 L-2, Hindi P-I)

राजस्थान में तीन चरणों में CCE प्रणाली को लागु किया गया है -

1. **प्रथम चरण -**

2010-11 अलवर और जयपुर के 60 प्राथमिक विद्यालयों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागु।

2. **दुसरा चरण -**

2012-13 राज्य के 178 शिक्षा ब्लॉक में 3059 प्राथमिक विद्यालयो में + कुछ उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पायलट प्रोजेक्ट लागु।

3. **तीसरा चरण -**

2013-14 राज्य के 5811 प्राथमिक विद्यालयों में इस प्रणाली को लागु कर दिया गया।

CCE में CBSE का पाठ्यक्रम :-

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने कक्षा 10 हेतु सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया है -

Part-I शैक्षणिक क्षेत्र (अकादमिक विषय)

Part I (A)
(i) अध्ययन किये जाने वाले विषय
(ii) अंग्रेजी तथा हिन्दी

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

(iii) अन्य गणित-विज्ञान, सा. अध्ययन, तृतीय भाषा

वैकल्पिक विषय :- कॉमर्स, संगीत, गृह विज्ञान, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) या अतिरिक्त विषय

Part-I(B) → अधिगम अक्षमता पीड़ित छात्रों हेतु अध्ययन विषय (i) अंग्रेजी, हिन्दी
(ii) इनमें से कोई चार (गणित, विज्ञान, सा. अध्ययन चित्रकला, कोई दो भाषाएं, संगीत

Part-II सह शैक्षणिक क्षेत्र

Part-II(A) → जीवन कौशल-निम्नलिखित में से कोई दो-
(i) चिंतन कौशल :→ निर्णय, क्षमता, विवेचना और समस्या-समाधान।
(ii) सामाजिक कौशल :→ सम्प्रेषण क्षमता, और अन्तर्व्यक्तिक संबंध
(iii) संवेगात्मक कौशल :→ शंका प्रबन्धन, तनाव प्रबन्धन

Part-II(B) → अभिवृद्धि एवं मूल्य
(i) शिक्षक (ii) सहपाठी (iii) विद्यालय

Part-III → सह शैक्षिक क्षेत्र

Part III(A) → विचारोत्तेजक क्रियाएँ (निम्नलिखित में से दो का मूल्यांकन)-

[i] साहित्य एवं सृजन कौशल - भाषण, निबंध, वाद-विवाद

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

[ii] वैज्ञानिक एवं ICT कौशल :→ विज्ञान क्लब, विज्ञान प्रदर्शनी, विज्ञान मेला, प्रोजेक्ट इत्यादि ।

[iii] दृश्य प्रदर्शन कौशल – संगीत, नाटक, मूर्तिकला, चित्रकला

[IV] संगठन नेतृत्व कौशल – इको क्लब, आपदा प्रबन्धन क्लब, बाल सभा, बाल ससंद ।

Part-II (B) → स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

निम्नलिखित में से कोई दो का मूल्यांकन –

1. खेल 2. प्राथमिक चिकित्सा 3. योगा 4. बागवानी 5. N.C.C 6. N.S.S 7. स्काउट एवं गाइड 8 तैराकी 9 जिम्नास्टिक

CCE में परीक्षा प्रणाली :–

मूल्यांकन प्रणाली

CBSE ने अपने सम्पूर्ण सत्र को दो भागों में विभाजित किया है –

TURM-I एक अप्रैल से 30 सितम्बर तक –

(i) F.A-I → 10%
(ii) F.A-II → 10%
(iii) S.A-I → 30%

50%

F.A – Formative Assesment
S.A – Submative Assesment

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

TURM-II :- एक अक्टुबर से 30 मार्च तक -

F.A-III → 10%
F.A-IV → 10%
S.A-II → 30%

50%

Note :- राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर CCE प्रणाली दो रूपों में संचालित है -

1 कक्षा 1 से 2 →

इन कक्षाओं में कुल 8 चक्र होते है और न्यूनतम ग्रेड C मिलती है।

2. कक्षा 3 से 5 →

कुल परीक्षण 6 होते है और कुल ग्रेड पाँच प्रकार की होती है।

सहशैक्षणिक क्षेत्र का अंकन →

CCE प्रणाली में छात्र का समग्र मूल्यांकन करने हेतु Part-I के साथ-साथ Part-II व Part-III की सह शैक्षणिक गतिविधियों एवं कौशलो का परीक्षण भी किया जाता है और यदि सह-शैक्षणिक क्षेत्र में अच्छे ग्रेड पॉइन्ट प्राप्त करता है तो इससे शैक्षणिक क्षेत्र के विषयों की ग्रेड अपग्रेड हो जाती है।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

सह-शैक्षणिक क्षेत्र का अंकन :-

प्राप्त ग्रेड पॉइंट	अपग्रेड होने वाले विषय
30-42	शैक्षणिक क्षेत्र के दो विषयों की ग्रेड अपग्रेड हो जायेगी।
17-29	एक विषय की ग्रेड अपग्रेड हो जायेगी
16 या कम	कोई भी विषय अपग्रेड नहीं

कक्षा 10 में ग्रेडिंग फार्मूला :-

प्राप्तांक	ग्रेड (Reet 2016 L-2 Hindi P-I)	ग्रेड पॉइन्ट
91-100	A_1	10
81-90	A_2	9
71-80	B_1	8
61-70	B_2	7
51-60	C_1	6
41-50	C_2	5
33-40	D	4
21-32	E_1	—
20 से कम	E_2	—

Note:- शैक्षणिक क्षेत्र में उपयुक्त नौ प्रकार की ग्रेड होती हैं, जिसमें उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम ग्रेड D है।

ग्रेडिंग के साथ-साथ ग्रेड पॉइन्ट भी दिए जाते हैं जो अधिकतम 10 होते हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

CGPA (कम्युलेटिव ग्रेड पॉइन्ट एवरेज) :→

सभी विषयों के ग्रेड पॉइन्ट को मिलाकर किये जाने वाले औसत ग्रेड पॉइन्ट को CGPA कहते हैं।

राजस्थान में कक्षा 8 में ग्रेडिंग प्रणाली -

प्राप्तांक	ग्रेड	ग्रेड पॉइन्ट
90-100	A+ (out standing)	5
75-89	A (Excellent)	4
56-74	B (Very good)	3
35-55	C (good)	2
0-34	D (Scope of Improvement)	1

Q.1. सी.सी.ई. में व्यापकता का आशय निम्नांकित से नहीं है-
(A) विषयों की व्यापकता (B) उपकरणों की व्यापकता
(C) दायरे की व्यापकता (D) प्रश्नों की व्यापकता
(Reet 2018 L-2 Hindi L-I)

Q.2 सी.सी.ई. प्रणाली में A_1 ग्रेड कितने प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्र को प्रदान की जायेगी? (Reet 2016 L-2 Hindi P-I)

[A] 91-100 [B] 81-90 [C] 90-100 [D] 71-80

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

Subject _____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Q.1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की विशेषता नही हैं-

[A] विद्यार्थी के विकास के पक्षो पर जोर न देना।

[B] विद्यार्थी का नियमित मूल्यांकन करना।

[C] गुणवतापूर्ण मूल्यांकन करना (Reet 2018 L-1, Hindi P-2)

[D] विद्यार्थी की संप्राप्ति में सुधार करना।

Q.2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) का मुख्य उद्देश्य हैं- (Reet 2018 L-I Env.)

[A] विद्यालय में उपस्थिति के समय बालक के प्रत्येक पहलू का मूल्यांकन करना।

[B] विद्यालय में उपस्थिति के समय बालक की रुचि का मूल्याकन करना [C] विद्यालय में उपस्थिति के समय बालक के ज्ञान एवं बोध का मूल्यांकन करना।

[D] विद्यालय में उपस्थिति के समय बालक के कौशलो का मूल्यांकन करना।

Q.3. सतत् और समग्र मूल्यांकन — (Rtet 2012, L-2, Hindi P-I)

[A] विद्यार्थी के लिए उपयोगी वस्तु के लिए भार हैं।

[B] में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच निकट संबंध आवश्यक है। [C] शिक्षण के दौरान भी संभव हैं।

[D] से ही विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास संभव हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(Action Research)

Date _____

Expt. No. _____

Page No. 61

क्रियात्मक अनुसंधान

→ बंकिंघम ने 1926 में रिसर्च फॉर टीचर्स में क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता पर बल दिया।

→ 1946 में कोलियर ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इस शब्द का प्रयोग किया।

→ प्रतिपादक → स्टीफेन एम. कोरे (1953)
पुस्तक → विद्यालय की कार्य पद्धति में सुधार करने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान।

परिभाषाएँ :→

→ कोरे के अनुसार – "क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालय के कार्यकर्त्ताओं द्वारा अपने कार्यों में सुधार करने के लिए किया जाने वाला अनुसंधान है।"

→ गुड के अनुसार – "विद्यालय के कार्यकर्ताओं, प्रशासकों व निरीक्षकों द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है जिसके द्वारा वे अपने कार्य में गुणात्मक उन्नति कर सके।"

→ **क्रियात्मक अनुसंधान व मौलिक अनुसंधान में अन्तर –**

मौलिक अनुसंधान	क्रियात्मक अनुसंधान
1. इसका संबंध भौतिक विज्ञान से है।	→ इसका संबंध सामाजिक विज्ञान से है।
2. इसमें न्यादर्श (नमूने) सम्पूर्ण जनसंख्या से लिए जाते हैं।	→ इसमें न्यादर्श (नमूने) कक्षा-कक्ष से लिए जाते हैं।
3. इसका उद्देश्य नवीन सिद्धान्तों की खोज करना है।	→ इसका उद्देश्य विद्यालय की कार्य-प्रणाली में सुधार करना है।
4. इसकी रूपरेखा जटिल होती है, परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।	→ रूपरेखा लचीली होती है।

Teacher's Signature _____

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 62

5.	इसमें अनुसंधान कर्त्ता विश्लेषज्ञ होते हैं।	→ अनुसंधानकर्त्ता विद्यालय संबंधी कार्यकर्त्ता होते हैं।
6.	इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती हैं।	→ इसमें प्रशिक्षण की आवश्यकता नही पड़ती हैं।
7.	मूल्यांकन – बाहरी कोई भी विश्लेषज्ञ	→ इसमें मूल्यांकन विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किया जाता हैं।
8.	इसका संबंध किसी सामान्य समस्या से होता हैं।	→ इसका संबंध विशिष्ट समस्या से होता हैं।
9.	इसमें सामान्यीकरण का विशेष महत्व होता हैं।	→ इसमें सामान्यीकरण का विशेष महत्व नही होता हैं।

→ क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकार :–

पूर्व अनुभव पर आधारित –

(i) प्रयोगात्मक क्रियात्मक अनुसंधान
(ii) आनुभविक क्रियात्मक अनुसंधान
(iii) निदानात्मक क्रियात्मक अनुसंधान
(iv) सहभागी क्रियात्मक अनुसंधान

→ क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र या समस्याएँ :–

1. बाल व्यवहार संबंधी समस्याएँ
2. शिक्षण संबंधी समस्याएँ
3. पाठ्य सहगामी संबंधी क्रियाएँ
4. परीक्षा संबंधी समस्याएँ
5. विद्यालय संगठन व प्रशासनिक संबंधी समस्याएँ → स्कूल की भौतिक समस्याएँ जैसे – बैठक व्यवस्था, पानी आदि

→ क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य व उपयोगिता :–

→ विद्यालय की कार्य प्रणाली संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना व उनका निदान (समाधान) करना।

Written By – Guruu Narendra 9413566680

Teacher's Signature _____

9413566680

Scanned with CamScanner

Date _____

Expt. No. _____ Page No. 63

→ विद्यालय में जनतांत्रिक वातावरण की स्थापना करना।
→ पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों में परिवर्तन करते हुए उन्हे उपयोगी बनाना।
→ विद्यालय के कार्यकर्ताओं को कर्तव्य व उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक बनाना।
→ विद्यालय के वातावरण को रोचक बनाना।
→ शिक्षकों व शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करना।

क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान :-

1. समस्या का उपस्थित होना।
2. समस्या व कार्य-प्रस्ताव पर विचार विमर्श।
3. योजना का निर्माण व उपकल्पना का निर्धारण।
4. तथ्य संग्रह करने की विधियों का निर्धारण।
5. योजना का क्रियान्वयन व तथ्यों का संकलन।
6. निष्कर्ष निकालना।
7. दूसरों को परिणामों की सूचना देना।

Narendra
9413566680

Written By:-

Guru Narendra Poonia

Teacher's Signature _____

9413566680

Scanned with CamScanner

Que. क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य है (2011 L-II)

(A) नवीन ज्ञान की खोज (B) शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास (C) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना (D) इनमें से सभी

Que. क्रियात्मक अनुसंधान के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन सही नही है? - (2011 L-I)

(A) यह अध्यापकों एवं शिक्षा व्यवसाय से जुड़े लोगो के द्वारा किया जाता है। (B) यह किसी विशिष्ट समस्या के समाधान के लिए किया जाता है (C) व्यापक स्तर पर निर्णय लेने के लिए सूचना संकलन का कार्य इसमें किया जाता है (D) स्थानीय स्तर पर रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिये क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है।

Que. क्रियात्मक अनुसंधान में- (2012 L-I)

(A) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण समस्याओ के कारणों पर आधारित है। (B) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण किसी तर्कयुक्त विवेक पर आधारित है। (C) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण इस प्रकार किया जाता है ताकि उनका सांख्यिकीय सत्यापन किया जा सके। (D) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण नही किया जाता।

(2012 L-I)

Q. क्रियात्मक अनुसंधान मौलिक अनुसंधान से भिन्न है क्योंकि यह -

(A) अध्यापकों, शैक्षिक प्रबंधकों एवं प्रशासको द्वारा किया जाता है। (B) शोधकर्त्ताओं द्वारा किया जाता है जिनका विद्यालय से कोई संबंध नही होता (C) यह प्रमापीकृत उपकरणों पर आधारित होता है (D) यह न्यादर्श पर आधारित होता है।

Q. निम्न में से कौनसा शोध का चरण शोध को क्रियात्मक अनुसंधान बनाता है? (Rtet 2012, L-2)

(A) उपकल्पनाओं का निर्माण (B) प्रोग्राम का क्रियान्वयन एवं अंतिम मूल्यांकन (C) सामान्यीकरण (D) शोध आकल्प का अपरिवर्तन / कठोर होना।

Written By- Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Q. क्रियात्मक अनुसंधान के महत्व के बारे में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है? (Reet 2016 L-I)
(A) उपभोक्ता ही अनुसंधानकर्ता है। (B) समस्याओं का हल शीघ्रता से प्राप्त हो जाता है (C) समस्याओं का हल अभ्यास में ले आया जाता है और उसका मूल्यांकन नहीं किया जाता है (D) इनमें से कोई नहीं

Q. अनुसंधान जो सामाजिक समस्या से संबंधित होता है तथा विद्यालय की जनशक्ति के द्वारा विद्यालय में क्रिया-कलापों के सुधार हेतु संचालित किया जाता है ——— कहलाता है — (2016 L-II)
(A) मौलिक अनुसंधान (B) क्रियात्मक अनुसंधान (C) सामाजिक अनुसंधान (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Q. निम्न में से कौन क्रियात्मक शोध से संबंधित नही है? (2018 L-II)
(A) क्रियात्मक शोध सिद्धान्त निर्माण में सहायता करता है।
(B) यह व्यावहारिक समस्या के समाधान करने में सहायक है।
(C) त्वरित चिंताजनक समस्या के ऊपर यह केन्द्रित होता है।
(D) यह रचनात्मक प्रतिक्रिया देता है जैसे उद्देश्य और प्रणाली में खुला परिवर्तन होना।
व्याख्या:- सिद्धान्त निर्माण मौलिक अनुसंधान का कार्य होता है।

Q. निम्न में से कौनसी समस्या क्रियात्मक अनुसंधान के लिए उपयुक्त नही हैं? (Rtet 2012, L-II)
(A) हिन्दी में 5वी कक्षा के विद्यार्थियों के लेख में सुधार (B) 7वी कक्षा के विद्यार्थियों के व्यवहार पर लिखित प्रशंसा एवं मौखिक प्रशंसा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (C) परम्परागत विधि के ऊपर कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन का प्रभाव (D) भूगोल के अधिगम में एटलस एवं ग्लोब का प्रयोग।

Written By- Guruji Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Education Psychology

REET

RTE-2009

Connecting With Guru Narendra

Scanned with CamScanner

RTE-2009

Date .....

Expt. No. .....

Page No. 27

निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009

→ नार्वे विश्व का पहला देश है जिसने RTE को लागु किया।
→ भारत विश्व का 135 वाँ देश है।
→ भारत में सबसे पहले 1906 में बड़ौदा रियासत ने शिक्षा अधिकार अधिनियम
अध्यक्ष - शिवाजी गायकवाड
→ 1 दिसम्बर 2002 को 86वे संविधान संशोधन द्वारा भाग-3 में शिक्षा को मूल अधिकार घोषित किया गया तथा भाग-4 में मूल कर्तव्यों में 11वां मूल कर्तव्य जोड़ा गया।

→ अनुच्छेद 45 का संबंध भी निः शुल्क शिक्षा से है।

→ RTE 20 जुलाई को राज्य सभा से पारित व 4 अगस्त को लोकसभा से पारित तथा 26 अगस्त 2009 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिह पाटिल ने हस्ताक्षर किये।

→ 1 अप्रैल 2010 में सम्पूर्ण भारत में जम्मू-कश्मीर को छोड़कर लागु किया गया। (2015, L-II REET)
नोट:- वर्तमान में जम्मू-कश्मीर में भी लागु है।

→ राजस्थान में 29 मार्च 2011 में अधिसुचना जारी व 1 अप्रैल 2011 से लागु।

→ शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है।
→ इसमें 7 अध्याय एवं 38 धाराएं हैं।

Teacher's Signature : .....

With Guruji Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

अध्याय-1:- प्रस्तावना

धारा-1

नाम → निःशुल्क अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009

नोट:- ये धार्मिक स्थानों पर लागू नहीं हैं। (मदरसा, वेद विद्या.

धारा-2

बालक → 6-14 (18) वर्ष के बालक। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार आयुवर्ग 6-18 वर्ष

प्रारम्भिक शिक्षा → 1 से 8 कक्षा तक की शिक्षा

समुचित सरकार → केन्द्र व राज्य सरकार जहाँ विद्यालय स्थित हैं।

दुर्बल वर्ग → जिन बच्चों के माता-पिता की आय निर्धारित आय (2.5 लाख) से कम हैं। (2011, L-I, RTET)

असुविधाग्रस्त समूह → SC, ST व समाज के कमजोर वर्ग से आने वाले छात्र, आदिवासी क्षेत्र

स्कूल। विद्यालय:- 4 प्रकार के →

(i) सरकारी
(ii) निजी
(iii) विशिष्ट स्कूल (केन्द्रीय, नवोदय, मिल्ट्री स्कूल)
(iv) निजी स्कूल जिन्हें कोई अनुदान नहीं मिलती

विहित → विहित का अर्थ है नियमों से

अनुवीक्षण → प्रवेश प्रक्रिया

स्थानीय प्राधिकारी:→ नगर निगम, पंचायत समिति, पंचायती राज, नगर पालिका

अध्याय-2 :→ RTE का विस्तार

धारा 3→

निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का 6-14 आयु वर्ग के बालक का अधिकार होगा।

Teacher's Signature : .....

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

धारा 4 → आयु के अनुसार कक्षा - कक्ष में स्थान होगा।

धारा 5 → प्रत्येक बालक को एक विद्यालय से दुसरे विद्यालय में स्थानान्तरण (T.C) का अधिकार होगा।

अध्याय 3 :- समुचित सरकार स्थानीय प्राधिकार और माता-पिता के दायित्व/कर्तव्य -

धारा → 6 → कक्षा 1 से 5 तक की स्कूल → 1 किमी. की दुरी
कक्षा 6 से 8 तक की स्कूल → 2 किमी
राज० में 3km है।

धारा 7 → वित्तिय अनुपात -
→ 11वी पंचवर्षीय योजना के तहत केन्द्र व राज्य सरकार का वितीय अनुपात → 55 : 45

→ 12वी पंचवर्षीय योजना का → 65 : 35

→ वर्तमान में अनुपात → 68 : 32

→ पूर्वोतर राज्यो में अनुपात → 90 : 10

धारा 8 → समुचित सरकार द्वारा किये जाने वाले कार्य

धारा 9 → स्थानीय प्राधिकार द्वारा RTE को लागु करने संबंधित क्रियाएँ।

धारा 10 → माता-पिता का प्रत्येक बच्चे को विद्यालय भेजने का कर्तव्य होगा।

Teacher's Signature : .....

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

धारा 11 → 3 – 6 वर्ष के बच्चों को पूर्व – प्रारम्भिक शिक्षा आंगनबाड़ी में देना।

Imp. Reet
अध्याय 4 → विद्यालय व शिक्षक के दायित्व – RTE में सबसे बड़ा अध्याय

धारा 12 → प्रत्येक निजी विद्यालय में प्रथम कक्षा में 25% सीटें गरीब बच्चों के लिए आरक्षित रखी गयी हैं।

धारा 13 → बच्चों से प्रवेश के समय किसी भी प्रकार की प्रवेश परीक्षा, माता – पिता का साक्षात्कार व फीस नहीं ली जा सकेगी
→ फीस लेने पर 1st बार 25000 रु जुर्माना
→ 2nd बार 50,000 रु जुर्माना
→ व तीसरी बार मान्यता रद्द कर दी जायेगी।

धारा 14 → सभी प्रकार के आवश्यक प्रमाण पत्रों से मुक्ति

धारा 15 → प्रवेश की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, लेकिन वर्ष पर्यन्त प्रवेश लिया जा सकेगा।

धारा 16 → किसी भी बालक को प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण होने तक न तो फेल किया जा सकेगा न ही विद्यालय से बाहर निकाला जा सकेगा।

धारा 17 → बालक को शारीरिक व मानसिक रूप से दण्डित नहीं किया जा सकता।

धारा 18 → बिना मान्यता विद्यालय चलाने पर प्रतिबंध

Teacher's Signature : .....

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 3

धारा 19 → विद्यालय के मानक

Imp **धारा 20 →** सरकार द्वारा इन मानकों में परिवर्तन किया जा सकेगा।

v. Imp **धारा 21 →** SMC का गठन (स्कूल प्रबन्धन समिति)

→ सदस्य संख्या = 15 अब सदस्य = 16

→ $\frac{3}{4}$ सदस्य अभिभावक व 50% महिलाएँ

→ अध्यक्ष – अभिभावक

→ मीटिंग – प्रत्येक माह की अमावस्या के दिन

→ कार्यकाल – 2 वर्ष

धारा 22 → विद्यालय विकास योजना SMC बनाती है, 1 वर्ष के लिए

धारा 23 → अध्यापक पद की योग्यता का वर्णन

धारा 24 → शिक्षक के दायित्व

Short trick नि पा त प्र मा स

नियमित पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम समय पर पूरा करना

(2015, 2011 b.z)

प्रत्येक सप्ताह 45 कालांश

शिक्षण योजना बालकों के अनुसार तब की जाए

माता-पिता के साथ मीटिंग

सरकार द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेना

Teacher's Signature : .....

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

धारा 25 →

(1.) कक्षा 1 से 5 तक का स्तर →

→ 30 बच्चों पर 1 अध्यापक

→ 30–60 बच्चों पर = 2 अध्यापक

→ 61–90 बच्चों पर = 3 अध्यापक

→ 91–120 बच्चों पर = 4 अध्यापक

→ 121–150 बच्चों पर = 5 अध्यापक + 1 H.M.

→ 200 से अधिक बच्चे होने पर अध्यापक / शिक्षक व बच्चों का अनुपात → 01:40 (RTET 2011, L-1)

→ 800 कालांश

→ 200 दिन कार्य दिवस

अध्यापक विद्यार्थी अनुपात
प्राथमिक विद्यालय = 1:30
उच्च प्राथमिक वि॰ = 1:35

(2) कक्षा 6 से 8 तक का स्तर →

→ 35 बच्चों पर एक अध्यापक

→ 100 से अधिक होने पर 1 प्रधानाध्यापक

→ 1000 कालांश, एक शिक्षक कार्य = 45 घंटे प्रतिसप्ताह

→ 220 दिन कार्य दिवस

(3) अध्यापक अनिवार्य → गणित + विज्ञान = 1
सामाजिक विज्ञान = 1
भाषा (हिन्दी + अंग्रेजी + संस्कृत) = 1

धारा 26 → किसी भी विद्यालय में 10% से अधिक पद रिक्त नहीं रह सकते।

धारा 27 → शिक्षक को चुनाव, जनगणना, आपदा कार्य के अलावा नहीं लगाया जा सकता।

Teacher's Signature : .....

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Imp. धारा 28 → कोई भी अध्यापक निजी ट्यूशन नही करवायेगा (2017 L-2 Reet)

अध्याय - 5 :→ पाठ्यक्रम व मूल्यांकन

धारा 29 → अधिकतम सीखने के अवसर उपलब्ध करवाना
→ सर्वांगीण विकास की शिक्षा
→ मूल्य आधारित शिक्षा
→ गतिविधि व रचनात्मक आधारित शिक्षा
→ सतत, व व्यापक मूल्यांकन

धारा 30 → 8 वी तक बोर्ड परीक्षा नही होगी तथा प्रारम्भिक शिक्षा पूरी होने पर प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

अध्याय - 6 :→ बाल अधिकारों का संरक्षण

धारा 31 → बाल अधिकार संरक्षण आयोग 2005 की धारा '3' में राष्ट्रीय बाल संरक्षण व धारा '7' में राज्य बाल संरक्षण आयोग की जाँच की जायेगी।

धारा 32 → आयोग में अपील करने संबंधी प्रावधान

धारा 33 → राष्ट्रीय शिक्षा सलाहकार समिति का गठन
सदस्य - 15 अध्यक्ष - मानव विकास मंत्री

Imp धारा 34 → राज्य बाल शिक्षा सलाहकार समिति का गठन
अध्यक्ष - शिक्षा मंत्री

अध्याय - 7 :→ प्रकीर्ण

Teacher's Signature .....

With Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

धारा 35 → समुचित सरकार द्वारा जारी की जाने वाली गाईड लाईन।

धारा 36 → धारा 13, 18, 19 में परिवर्तन। अपील करने की प्रक्रिया।

धारा 37 → समुचित सरकार, बाल संरक्षण आभोग, व SMC के खिलाफ किसी भी प्रकार की कार्यवाही नही की जा सकती।

धारा 38 → राज्य सरकार को अधिनियम की धाराओं में परिवर्तन करने का अधिकार है।

अन्य बाते → RTE 20 जुलाई 2009 को यह विधेयक राज्यसभा में, 4 अगस्त 2009 को लोकसभा में पारित हुआ, 26 अगस्त 2009 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने उस पर हस्ताक्षर किये और 27 अगस्त 2009 को इसे राजपत्र में प्रकाशित किया गया

भारतीय संविधान में 6 से 14 वर्ष हेतु शिक्षा प्रावधान:-

भाग 3 → मौलिक अधिकार अनु० 21 क (शिक्षा का मूल अधिकार)

भाग 4 → राज्य के नीति निर्देशक तत्व अनु० 45 (निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दिलाने की सुनिश्चित करे)

भाग 4(क) → मौलिक कर्तव्य - अनु० 51 क मे 11वाँ मूल कर्तव्य जोड़ा गया।

नोट → 86 वे संविधान संशोधन 2002 द्वारा वाजपेयी सरकार ने अनु० 21 क तथा 11वाँ मूल कर्तव्य संविधान में जुड़वाया।

Written by → Guru Narendra Poonia
9413566680

Scanned with CamScanner

RTET/REET में पूछे गये प्रश्नों का सार-संग्रह :-

Que. बालकों का मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, 2009 देश में लागू हुआ – (2015 L-II)
(A) 1 अप्रैल 2009 (B) 1 अप्रैल 2010 (C) 1 नवम्बर, 2009
(D) 1 नवम्बर 2010

Que. बालकों का मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, (12 L-2) 2009 में निम्न में से किस पर ध्यान नहीं दिया गया है?
(A) अध्यापकों को प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना
(B) घुमन्तु बालकों के प्रवेश को सुनिश्चित करना
(C) एकेडेमिक कैलेण्डर को निर्धारित करना
(D) 14 वर्ष के पश्चात की शिक्षा।

(2011 L-2) (2015 L-I)
Que. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक के लिए न्यूनतम कार्य घंटे प्रति सप्ताह निर्धारित किये गये हैं-
(A) चालीस घंटे (B) पैंतालीस घंटे (C) पचास घंटे (D) पचपन घंटे

Que. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक को निम्न में से किस दायित्व को पूरा करना होगा? (2011 L-2)
(A) विद्यालय में नियमित रूप से समय पर उपस्थित होना होगा
(B) पाठ्यक्रम का संचालन कर पूरा करना होगा।
(C) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को निर्धारित समय पर पूरा करना होगा
(D) इनमें से सभी

Que. "शिक्षा के अधिकार अधिनियम" के अंतर्गत निम्न में से क्या शिक्षक के कार्य नहीं माने गए है? (2017 L-II)
(A) एक निश्चित समय में पाठ्यक्रम को पूरा करना।
(B) शिक्षकों को खुद को व्यक्तिगत ट्यूशन में व्यवस्था रखना चाहिए
(C) विद्यालय के लिए नियमितता बनाए रखना चाहिए तथा समय का पाबंद होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(D) हर बालक के अधिगम क्षमता को समझकर उसकी जरूरत के अनुसार उन्हे अतिरिक्त अनुबोध प्रदान करना चाहिए।

व्याख्या:- धारा-28 व्यक्तिगत ट्यूशन का विरोध करती है।

Que. "कमजोर वर्ग" के बालक से तात्पर्य है - (2011 L-I)

(A) ऐसे अभिभावकों के बालक से जिन की वार्षिक आय कम हो (B) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो वंचित वर्ग में आते हैं। (C) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो गरीबी रेखा से नीचे की सीमा में आते है। (D) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय की सीमा से नीचे के वर्ग में आते हैं।

Que. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का बालकों का अधिकार 2009 के अंतर्गत, किसी भी अध्यापक को निम्न में से किस कार्य के लिए नहीं लगाया जा सकता? (2012 L-I)

(A) इस वर्ष पश्चात होने वाली जनगणना में (B) आपदा राहत कार्य में (C) चुनाव संबंधी कार्य में (D) पल्स पोलियो कार्यक्रम में

(DSLI) Q. RTE एक्ट 2009 के अनुसार शिक्षक हेतु प्रति सप्ताह कार्य घंटे हैं-

(A) 40 घंटे (B) 42 घंटे (C) 45 घंटे (D) 48 घंटे

Scanned with CamScanner

Subject: उपलब्धि परीक्षण

Date : __/__/____
MON TUE WED THU FRI SAT SUN

- उपलब्धि परीक्षण (Achievement test)
- निष्पत्ति परीक्षण
- परिलब्धि परीक्षण
- मात्रात्मक परीक्षण

Guru Narendra
9413566680

अर्थ व परिभाषा :-

मूल्यांकन का वह तरीका जिसमें विद्यालय शिक्षण के दौरान पढ़ाये जाने वाले विषयों में अर्जित होने वाली योग्यताएँ व ज्ञान की मात्रा की जाँच की जाती है।

दूसरे शब्दों में "उपलब्धि परीक्षणों से यह पता लगाया जाता है कि किस विद्यार्थी ने किस विषय में कितना सीखा"

"निष्पति परीक्षण यह निश्चित करता है कि क्या सीखा गया, कितना सीखा गया और कितनी दक्षता के साथ सीखा गया" विचारक सुपर

"जब हम उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग करते हैं तो इस बात को निश्चित करते हैं कि विशिष्ट शिक्षण के बाद विद्यार्थी ने क्या सीखा" थार्नडाइक

निष्कर्ष के रूप में उपलब्धि परीक्षण वह मूल्यांकन प्रविधि है जिसके द्वारा विद्यार्थी के ज्ञानात्मक पक्ष की मात्रात्मक जाँच होती है और जिसके परिणाम हमेशा प्राप्तांक, प्रतिशत और औसत में व्यक्त किये जाते हैं।

✱ उपलब्धि परीक्षणों की आवश्यकता, उद्देश्य या महत्व -

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

1. **चयन :→**

उपलब्धि परीक्षणों द्वारा व्यवसायिक क्षेत्र में, औद्योगिक क्षेत्र में, लोक सेवाओं में, विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में, महाविद्यालय एवं विश्व विद्यालयों में प्रवेश देने, विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षणों में, सरकारी सेवाओं में, चयन करने हेतू इनका बड़े स्तर पर आयोजन होता हैं।

2. **वर्गीकरण :→**

इस परीक्षण द्वारा सेना के क्षेत्र में सैनिको का, विद्यालयो में विद्यार्थियो का, विभिन्न प्रकार के संगठनों में कर्मचारियों का उपलब्धि के आधार पर वर्गीकरण किया जाता हैं।

3. **मार्गदर्शन:→**

इन परीक्षणों के आधार पर विद्यार्थियों एवं अभिभावको को विद्यार्थी के बारे में शैक्षिक एवं व्यवसायिक मार्गदर्शन दिया जा सकता हैं।

4. **क्रम एवं वर्ग का निर्धारण :→**

इन परीक्षणों के आधार पर विद्यालयों और महाविद्यालयों में समूह विभाजन वैरियता क्रम इत्यादि का निर्धारण करने में मदद मिलती हैं।

Guru Narendra 9413566680

5. **अभिप्रेरणा हेतु :→**

इन परीक्षणों द्वारा समय-समय पर पृष्ठ पोषक मिलने से शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को अधिगम की प्रक्रिया को आगे बढाने में अभिप्रेरणा प्राप्त होती हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

6. शिक्षक एवं शिक्षण की कुशलता का निर्धारण :→

7. शिक्षण संस्थाओ के शैक्षणिक स्तर एवं गुणवता निर्धारण में मददगार ।

8. विद्यार्थियों को अगली कक्षा में क्रमोन्नत करने में मदद मिलती हैं।

Guru Narendra 9413566680

9. उपचारात्मक शिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करने में मददगार होता हैं।

10. पाठ्यक्रम का दोहराव करने में मददगार होता हैं।

✡ **उपलब्धि परीक्षण का वर्गीकरण :-**

उद्देश्य के आधार पर उपलब्धि परीक्षण दो प्रकार के होते है -

1. निदानात्मक उपलब्धि परीक्षण
2. सामान्य उपलब्धि परीक्षण

सामान्य उपलब्धि परीक्षण तथा निदानात्मक उपलब्धि परीक्षणों में अन्तर-

1. सामान्य उपलब्धि परीक्षण छात्र की विषय योग्यता की जाँच करते है, निदानात्मक उपलब्धि परीक्षण छात्र की अधिगम प्रक्रिया में आने वाली बाँधाओं, कमजोरियों, या समस्याओं की खोज करते हैं।

2. सामान्य उपलब्धि परीक्षण के परिणामस्वरूप चयन, वर्गीकरण समूह विभाजन होता है जबकि निदानात्मक उपलब्धि परीक्षण के परिणामस्वरूप उपचारात्मक शिक्षण होता हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

→ सामान्य उपलब्धि परीक्षण सभी छात्रों के लिए अपेक्षित है और निदानात्मक उपलब्धि परीक्षण पिछड़े विद्यार्थियों को अधिक लाभ देता है।

→ सामान्य उपलब्धि परीक्षण में समय धन और परिश्रम की बचत होती है जबकि निदानात्मक उपलब्धि परीक्षण में समय, धन व परिश्रम अधिक लगता है क्यों कि इसमें उपचारात्मक कार्य भी करवाया जाता है।

→ सामान्य उपलब्धि परीक्षण की एक समय सीमा निश्चित होती है जब कि निदानात्मक उपलब्धि परीक्षण में कोई समय सीमा नही होती है।

★ **इंग्लस और हॅालेण्ड ने उपलब्धि परीक्षणो मे दो प्रकार बताये हैं**

Guru Narendra 9413566680

1. प्रमाणित / प्रमापीकृत उपलब्धि परीक्षण
2. अप्रमाणित / अप्रमापीकृत शिक्षक निर्मित उपलब्धि परीक्षण

प्रमापीकृत और अप्रमापीकृत परीक्षणों में अन्तर:-

	मानकीकृत प्रमाणिक / प्रमापित	अमानकीकृत अप्रमाणित शिक्षक निर्मित
1.	इन परीक्षणों का क्षेत्र विस्तरित होता हैं (राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर, जिला स्तर)	इनका क्षेत्र सीमित होता हैं केवल कक्षा - कक्ष तक सीमित।
2.	इन परीक्षणों का निर्माण विशेषज्ञों द्वारा होता हैं।	इन परीक्षणों का निर्माण स्वयं शिक्षक द्वारा होता हैं

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

इन परीक्षणों में विश्वसनीयता और वैधता अधिक होती हैं।	इन परिक्षणों में विश्वसनीयता और वैधता का अभाव होता हैं।
इन परीक्षणों के आधार पर विद्यालयों एवं कक्षाओं में तुलना की जा सकती हैं।	इनमें केवल एक कक्षा के छात्रों में तुलना की जा सकती हैं।
इन परीक्षणों को एक विशिष्ट समयावधि या निश्चित समय पर आयोजित करवाया जाता हैं।	शिक्षक अपनी सुविधानुसार कभी भी इनका आयोजन कर सकता हैं।

✡ उपलब्धि परीक्षण के सोपान :-

उपलब्धि परीक्षण का निर्माण निम्नलिखित चरणों में सम्पन्न किया जा सकता हैं-

1. समस्या या विषयवस्तु का चयन :-

प्रथम चरण में विषय वस्तु या समस्या का चयन करके उसे गहराई से समझा जाता हैं।

Guru Narendra 9413566680

2. लक्ष्य निर्धारण :-

दूसरे चरण में विषय-वस्तु या समस्या से संबंधित लक्ष्य तय किये जाते हैं और यह भी निश्चित होता हैं कि केवल समस्यात्मक विषय-वस्तु दे या सम्पूर्ण पाठ्यक्रम।

3. प्रश्नो का निर्माण :-

इस चरण में अतिलघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक, निबंधात्मक तथा विषय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण किया जाता हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

4. **समय सीमा का निर्धारण एवं आरंभ तय करना →**

इस सोपान में प्रश्न-पत्र के आकार को ध्यान में रखकर उचित समय सीमा तथा प्रश्नों के अंकों का निर्धारण किया जाता है।

Guru Narendra 9413566680

5. **निर्देश लिखना :-**

उपलब्धि परीक्षणों हेतु आयोजित होने वाले प्रश्न-पत्र पर हल करने संबंधित निर्देश लिखे जाते हैं।

6. **परीक्षण का आयोजन एवं अंकतालिका प्रदान करना :-**

अन्तिम चरण में परीक्षण को क्रियान्वित करवाया जाता है और इसके पश्चात अन्तिम रूप से प्रत्येक विद्यार्थी हेतु अंकतालिका का निर्माण किया जाता है।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

विद्यालय जीवन में उपलब्धि परीक्षण का महत्व :-

→ इन परीक्षणों से विद्यार्थियों का पृष्ठ पोषक करके उन्हे सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता हैं।

→ इन परीक्षणों से प्राप्त उपलब्धि के आधार पर विद्यार्थियों की श्रेणी और समूह का निर्धारण किया जा सकता हैं

→ विद्यार्थियो के अभिभावको को छात्र के संदर्भ में उचित परामर्श दिया जा सकता हैं।

→ अध्यापक के शिक्षण कार्यो का मूल्यांकन करने में सहायक हैं।

Guru Narendra 9413566680

→ विद्यार्थियों का शैक्षणिक तथा व्यवसायिक निर्देशन व व्यक्तिगत शिक्षण करने में सहायक हैं।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

Q.1. अधिक विश्वसनीय परीक्षण है:- (Reet 2018 L-II, Hindi P-I)
[A] शिक्षक निर्मित परीक्षण [B] मौखिक परीक्षण
[C] आत्मनिष्ठ परीक्षण [D] प्रमापीकृत परीक्षण ✓

Q.2. निम्न में से कौनसा कथन आदर्श संदर्भित परीक्षण के लिए सत्य नहीं है? (Reet 18, L-I PSY.)
[A] यह एक मानकीकृत परीक्षण है।
[B] छात्र के स्कोर की तुलना इसके साथ तुलना करके की जाती है कि अन्य ने कैसा प्रदर्शन किया है।
[C] कहा जाता है कि परीक्षण राष्ट्रीय मापदंडों पर आधारित है। [D] ✓ छात्र के प्रदर्शन की स्थापित मानदंडों से तुलना की जाती है।

Q.3. उपलब्धि परीक्षण का उपयोग नहीं होता है:- (Reet 2018 L-1 Hindi P-2)
[A] वर्गीकरण [B] श्रेणी-विभाजन [C] शिक्षक की कठिनाइयों का निदान ✓ [D] शैक्षिक निर्देशन

Q.4. उपलब्धि परीक्षण दिये जा सकते हैं:- (Reet 2016, L-2, PSY.)
[A] ✓ दो प्रकार से [B] चार प्रकार से [C] छः प्रकार से [D] तीन प्रकार से

Q.5. उपलब्धि परीक्षण निर्माण में संभवन योजना बनाने का उद्देश्य है:- (Reet 2016 L-2 Hindi P-I)
[A] निर्णय संबंधी असंगति को दूर करने में सहायता प्रदान करना [B] प्रश्नों की संख्या निर्धारित करना [C] छात्रों की कठिनाइयों का निर्धारण करना। [D] उपयुक्त सभी ✓

Guru Narendra 9413566680

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उपचारात्मक शिक्षण

Subject _____

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

अर्थ :- निदानात्मक परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर विद्यार्थियों की कमजोरियों या कठिनाइयों को दुर करके उन्हे उचित स्तर की अधिगम प्राप्ति में सक्षम बनाने के लिए जो व्यवहारिक शिक्षण कार्य किया जाता हैं, उसे उपचारात्मक शिक्षण कहते हैं इस प्रकार निदान विद्यार्थियों की कठिनाईयो तथा उनके कारणों को खोजने की प्रक्रिया है, वही तत्पश्चात अनुवृति कार्यो से विद्यार्थियों की कमियों और बाधाओ को दुर करने या निवारण करने का उपाय करना उपचारात्मक कार्य है इस प्रकार निदानात्मक परीक्षण उपचारात्मक शिक्षण की पूर्वगामी क्रिया है तथा उपचारात्मक शिक्षण नैदानिक कार्य की पश्चमवृति / प्रवृति क्रिया मानी जाती हैं।

Guru Narendra 9413566680

✡ उपचारात्मक सामग्री का चयन →

→ उपचारात्मक सामग्री ऐसी हो जो छात्र की वैयक्तिक कठिनाइयों को दुर कर सके।

→ निरीक्षण या अवलोकन द्वारा धीमी गति से सीखने वाले के कार्य का विश्लेषण करना चाहिए।

→ उपचारात्मक सामग्री क्रमबद्ध व्यवस्थित आत्म निर्देशात्मक तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अवसर देने वाली होनी चाहिए।

→ उपचारात्मक सामग्री प्रत्येक बालक को अपनी-अपनी गति से प्रगति करने का अवसर देने वाली होनी चाहिए।

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

→ उपचारात्मक सामग्री के साथ दिए गये निर्देश, सरल, सुबोध और पठनीय होने चाहिए।

→ कक्षा-कक्ष के अनेक विद्यार्थियों के एक जैसी बाधा हो तो साझा उपचारात्मक कार्यक्रम भी बनाया जा सकता है।

Guru Narendra 9413566680

Q.1. उपचारात्मक शिक्षण है- (Reet 2018 L-I. Hindi P-I)
[A] सीखने सम्बन्धी कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करना।
✓[B] अध्यापन सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण किया जाना। [C] बालकों की वर्तनी संबंधी कठिनाइयों का पता लगाना [D] शिक्षक की विषय सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाना।

Q.2. चिकित्सात्मक अध्यापन को कहा जाता है- (Reet 2018 L-1 Hindi P-2)
[A] निदान [B] उपचार [C] निदान व उपचार [D] उपलब्धि

Q.3. उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है- (Reet 2016 L-2, Hindi P-1)
[A] छात्रों की त्रुटियों का पता लगाना।
[B] विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
✓[C] छात्रों का पिछड़ापन दूर करना
[D] छात्रों की प्रगति का ज्ञान प्राप्त करना।

Q.4. उपचारात्मक शिक्षण द्वारा- (Reet 2016 L-I. Hindi P-I)
[A] अध्यापकों की कमजोरियों का उपचार करते हैं।
[B] छात्रों के घायल होने पर उपचार करते हैं।
✓[C] छात्रों की कमजोरियों का निदान कर उसे दूर करने हेतु शिक्षण करते हैं। [D] कुछ कह नहीं सकते।

Q.5. उपलब्धि परीक्षण एवं नैदानिक परीक्षण में अन्तर है-
✓[A] उद्देश्यों का [B] प्रकृति का [C] कठिनाई स्तर का [D] इनमें से कोई नहीं
(Reet 2016 L-I Math)

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

✡ उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ एवं तकनीकी :-

→ सरल अभ्यास
→ विशिष्ट अभ्यास
→ समूह विभाजन
→ विशिष्ट कक्षायें
→ अतिरिक्त कक्षायें
→ छोटी-छोटी समस्यायें
→ नियमित गृह कार्य
→ प्रयोगात्मक कार्य अधिक करवाना
→ शिक्षण सूत्रों का भी प्रयोग
→ अभिक्रमित अनुदेशन का भी प्रयोग
→ कार्य गोष्ठी एवं समूह चर्चायें करवाना
→ दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग।
→ मनोरंजनात्मक अधिगम।

Guru Narendra
9413566680

Q. हिन्दी शिक्षण में उपलब्धि की जाँच की जा सकती है-
[A] उपलब्धि परीक्षण से [B] बुद्धि परीक्षण से
[C] वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से [D] मौखिक परीक्षा से
(Rtet2012 L-2 Hindi P-I)

Q. उपचारात्मक शिक्षण के लिए आवश्यक नहीं हैं-
[A] शिक्षण विधि को स्थायी रखना। [B] विद्यार्थी की किसी भी गलती की अवहेलना नहीं करना [C] पहले निदानात्मक परीक्षण कर लेना [D] इनमें से कोई नहीं।

Q. उपलब्धि परीक्षण के संबंध में कौनसा कथन उपयुक्त नहीं है?
[A] मौखिक परीक्षा में पक्षपात की आशंका रहती हैं।
[B] निबंधात्मक प्रश्नों के मूल्यांकन में वस्तुपरकता का अभाव रहता है [C] क्रियात्मक परीक्षाओं में शाब्दिक ज्ञान का महत्व नहीं होता है [D] वस्तुनिष्ठ परीक्षा में मौलिकता का विकास होता हैं। (Rtet2012 L-2 Hindi P-2)

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Subject

निदानात्मक परीक्षण

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

नैदानिक परीक्षण

अर्थ :-

छात्रों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पीछे रहने के कारणों की जानकारी प्राप्त करना ही निदानात्मक परीक्षण है, अर्थात् एक इकाई या प्रकरण पूर्ण होने के बाद शिक्षक ने पाया कि कुछ विद्यार्थियों की उपलब्धि तो अच्छी है जबकि कुछ विद्यार्थी निष्पति में बहुत निम्न स्तर पर है. इन निम्न निष्पति और मंद अधिगम के कारणों की खोज करना ही निदानात्मक परीक्षण हैं।

Guru Narendra 9413566680

परिभाषाएँ :→

C.V. गुड- "निदान का अर्थ है अधिगम संबंधी कठिनाईयों और कमियों का स्वरूप निर्धारित करना।"

बोक्स एण्ड सिम्पसन - "निदान किसी कठिनाई का उसके लक्षणों से प्राप्त ज्ञान करने का कार्य है, इसमें कठिनाइयों का स्पष्टीकरण किया जाता हैं।"

निष्कर्षत: अधिगम कठिनाईयों, कमजोरियों या बाँधाओ की खोज करना, इनके कारणों की खोज करना और इसके निवारण के उपायों का पता लगाना ही निदानात्मक कार्य हैं।

"निदानात्मक परीक्षण अधिगम की कठिनाईयों का विस्तृत अध्ययन है।"

व्यैक्तिक / सामुहिक ← निदान → बाधा/कठिनाई/समस्या/कमजोरी पहचानना
→ कारण का पता करना।
→ निवारण उपायों का पता लगाना।

व्यैक्तिक ← उपचार

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject

निदानात्मक परीक्षण के उद्देश्य :→

- विषय की अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में सुधार करना।

→ अधिगम अनुभव और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अवरोधक तत्वों को ढूढना अर्थात् अधिगम में आने वाली कठिनाइयों और कमजोरियों का पता लगाना।

→ पिछड़े बालको की पहचान करना।

→ मूल्यांकन प्रक्रिया एवं मूल्यांकन पद्धतियो में परिवर्तन करना

→ उपलब्धि परीक्षणों के पदों का निर्धारण करने में सहायक है

→ छात्रों की कमियों और अच्छाइयों के आधार पर उन्हे शैक्षणिक एवं व्यवसायिक मार्गदर्शन देने में सहायक है

Guru Narendra 9413566680

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

✡ निदानात्मक परीक्षण की आवश्यकता एवं महत्व –

→ शैक्षणिक निदान की आवश्यकता केवल समस्याग्रस्त छात्रों को ही नहीं बल्कि सामान्य छात्रों को भी होती है।

→ नैदानिक परीक्षण की आवश्यकता विद्यार्थियों की विषयगत कठिनाईयों के स्तर को निर्धारित करने में होती है।

→ नैदानिक परीक्षण यह पता लगाता है कि छात्र- कौन-कौन सी मानसिक प्रक्रियाओं को संपादित नहीं कर पा रहा हैं।

Guru Narendra 9413566680

→ शैक्षिक निदान विद्यार्थी की वांछनीय तथा वास्तविक उपलब्धियों में अन्तर को समाप्त करने में सहायक हैं

→ शैक्षिक निदान अच्छे शिक्षण, अच्छे निर्देशन व अच्छे परामर्श के लिए महत्वपूर्ण हैं।

Q.1. निदानात्मक परीक्षण का महत्व है (Reet 2016 L-2 Math)

[A] शिक्षण में [B] परामर्शन और निर्देशन में [C] उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था में [D] उपर्युक्त सभी में

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Date : __/__/____

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

Subject _____

Q.1. "भाषा में निदानात्मक परीक्षण वह परीक्षण है जिसके द्वारा अनुसंधानकर्त्ता छात्रा के भाषागत दोषों को खोजता है, जो अपने स्कूल के विषय में सामान्य प्रगति नहीं कर पाते।" उपर्युक्त परिभाषा किसके अनुसार है? (Reet 2018. L-2, Hindi P-2)

[A] बायर्ली [B] शोनेल [C] क्रोनबैक [D] एस. एस. रावत

Q.2. निदान की परीक्षण विधि के प्रकार हैं- (Reet 16 L-2, H-P-II)

[A] सात [B] दो [C] चार [D] आठ

Q.3. उपचारात्मक शिक्षण किसका अंतिम चरण है? Reet 2016

[A] पृच्छा प्रतिमान [B] व्यारव्यात्मक शिक्षण

[C] निदानात्मक शिक्षण [D] इनमें से कोई नहीं

Q.4. यदि एक विद्यार्थी, गणित विषय में कई बार अनुत्तीर्ण हो जाता है, तो यह जानने के लिए कि गणित की किस विशेष शाखा में वह कमजोर है, निम्न में से कौनसी विधि प्रयोग में लेंगे? (Rtet 12. L-1 math)

[A] लिखित कार्य [B] मौखिक कार्य [C] निदानात्मक कार्य [D] उपचारात्मक कार्य

Guru Narendra 9413566680

Teacher's Singnature .....

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Social Media Handles

Facebook Ac.- Guru Narendra

Facebook Page:- Rajasthan Education

Telegram Channel:- Reet Mission Carrier.

SPECIAL REET EXAM

शिक्षा मनोविज्ञान

और

शिक्षण विधियां

Connecting With-

Guru Narendra

Scanned with CamScanner